ख़ुरुज

[illegible]

रिवायती तौर से मूसा ही मख्सूस किया हुआ मुसन्निफ़ है दो मा'कूल सबब हैं कि क्यूँ बगैर सवाल किए या बिना किसी एतराज़ के इलाही तौर से इल्हाम शुदा मुसन्निफ़ बतौर कबूल किया गया है पहला ख़ुरुज की किताब खुद ही मूसा के लिखने की बाबत बताती है ख़ुरुज 34:27 खुदा मूसा को हुक्म देता है कि “इन बातों को लिख ले” दूसरी इबारत हम से कहती है कि खुदा के हुक्म की फ़र्मान्बर्दारी करते हुए मूसा ने ख़ुदावंद की सब बातें लिख ली (ख़ुरुज 24:4) यह सबब बनता है कि इन आयतों को मूसा की लिखी हुई बातौर कबूल करें जो इस किताब में बयान की गई हैं दुसरा खरूज की किताब में जिन वाक़ियात का ज़िक्र या तो मूसा ने उन्हें अंजाम दी या उन में खुद हिस्सा लिया मू सा ने फिरोन के घराने में तालीम हासिल की थी और लिखने की क़ाबिलियत से क़ाबिल — ए — इंतकाब हुआ था।

[illegible]

इस के तसनीफ़ की तारीख़ तक़रीबन 1446 - 1405 क़ब्ल मसीह है।

बनी इस्राईल की कौम इस तारीख़ से लेकर आगे तक उन की अपनी गैर वफ़ादारी के सबब से उसी बयाबान में भटकते रहे — इस किताब को लिखने के लिए यह मा'कूल वक़्त था।

[illegible]

इस किताब को कबूल करने वाले खुद ख़ुरुज की छुड़ाई हुई नसल रही होगी मूसा ने ख़ुरुज की किताब को सीना के लोगों के लिए लिखा था जो मिस्र से रहनुमाई पाते हुए आये थे (ख़ुरुज 17:14; 24:4; 34:27,28)।

?????? ????????

ख़ुरुज की किताब बयान में वाज़ेह करती है की किस तरह बनी इस्राईल यह्वे के लोग बन गए और अहद के ज़ामिन ठहराए जाकर ख़ुदा के लोग बातौर रहने लगे ख़ुरुज की किताब एक वफ़ादार, मुहीब, बचानेवाला मुक़द्दस ख़ुदा की सीरत और ख़ासियत को ज़ाहिर करती है जिस ने बनी इस्राईल क़ौम के लिए एक अहद को क़ायम किया ख़ुदा की सीरत ख़ासियत जो ख़ुदा का नाम और उसके अफ आल दोनों से ज़ाहिर होता है, वह यह जताने के लिए ख़ुदा ने अब्राहम से किया हुआ वायदा (पैदाइश 15:12 — 16) पूरा हुआ था जब उस ने उस की औलाद को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया था — यह अकेले खानदान की एक कहानी है जो आगे चल कर एक कौम बन गई (ख़ुरुज 2:24; 6:5; 12:37) इब्रियों की ता'दाद जो मिस्र से बाहर निकली उन की जब गिनती हुई तो वह दो से तीन लाख निकली।

?????'?

छुटकारा

बैरूनी ख़ाका

1. इफतिताहिया — 1:1-2:25
2. इस्राएल के बनी इस्राईल का छुटकारा — 3:1-8:27
3. सीना पहाड़ में अहकाम दिए गए — 19:1-24:18
4. ख़ुदा का शाही ख़ैमा — 25:1-31:18
5. बग़ावत के अंजाम बतौर ख़ुदा से अलाहिदगी — 32:1-34:35
6. ख़ुदा के ख़ेमे की शाही साख्त — 35:1-40:38

?????? ??? ?????????

1 इस्राईल के बेटों के नाम जो अपने — अपने घराने को लेकर या'क़ूब के साथ मिस्र में आए यह हैं:

2 रूबिन, शमौन, लावी, यहूदाह,

3 इश्कार, ज़बूलून, बिनयमीन,
4 दान, नफ़्ताली, जद्द, आशर
5 और सब जानें जो या'क़ूब के सुल्ब से पैदा हुई सत्तर थीं, और
यूसुफ़ तो मिस्र में पहले ही से था।
6 और यूसुफ़ और उसके सब भाई और उस नसल के सब लोग
मर मिटे।
7 और इस्राईल की औलाद क़ामयाब और ज़्यादा ता'दाद और
फ़िरावान और बहुत ताक़तवर हो गई और वह मुल्क उनसे भर
गया।
8 तब मिस्र में *एक नया बादशाह हुआ जो यूसुफ़ को नहीं
जानता था।
9 और उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, "देखो इस्राईली हम
से ज़्यादा और ताक़तवर हो गए हैं।
10 इसलिए आओ, हम उनके साथ हिकमत से पेश आएँ, ऐसा
न हो कि जब वह और ज़्यादा हो जाएँ और उस वक़्त जंग छिड़
जाए तो वह हमारे दुश्मनों से मिल कर हम से लड़ें और मुल्क से
निकल जाएँ।"
11 इसलिए उन्होंने उन पर बेगार लेने वाले मुक़र्रर किए जो
उनसे सख़्त काम लेकर उनको सताएँ। तब उन्होंने फ़िर'औन के
लिए ज़ख़ीरे के शहर पितोम और रा'मसीस बनाए।
12 तब उन्होंने जितना उनको सताया वह उतना ही ज़्यादा
बढ़ते और फैलते गए, इसलिए वह लोग बनी — इस्राईल की
तरफ़ से फ़िक्रमन्द ही गए।
13 और मिस्रियों ने बनी — इस्राईल पर तशद्दुद कर — कर के
उनसे काम कराया।
14 और उन्होंने उनसे सख़्त मेहनत से गारा और ईंट बनवा —
बनवाकर और खेत में हर क़िस्म की ख़िदमत ले — लेकर उनकी
ज़िन्दगी कड़वी की; उनकी सब ख़िदमतें जो वह उनसे कराते थे

* **1:8** एक नया बादशाह मिस्र में हुकूमत करने लगा जो यूसुफ़ को नहीं जनता था

दुख की थीं।
15 तब मिस्र के बादशाह ने'इब्रानी दाइयों से जिनमें एक का
नाम सिफ़रा और दूसरी का नाम फू'आ था बातें की,
16 और कहा, “जब 'इब्रानी 'औरतों के तुम बच्चा जनाओ और
उनको पत्थर की बैठकों पर बैठी देखो, तो अगर बेटा हो तो उसे
मार डालना, और अगर बेटी हो तो वह जीती रहे।”
17 लेकिन वह दाइयाँ ख़ुदा से डरती थीं, तब उन्होंने मिस्र के
बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को ज़िन्दा छोड़ देती
थीं।
18 फिर मिस्र के बादशाह ने दाइयों को बुलवा कर उनसे कहा,
“तुम ने ऐसा क्यूँ किया कि लड़कों को ज़िन्दा रहने दिया?”
19 दाइयों ने फ़िर'औन से कहा, “'इब्रानी 'औरतें मिस्री 'औरतों
की तरह नहीं हैं। वह ऐसी मज़बूत होती हैं कि दाइयों के पहुँचने
से पहले ही जनकर फ़ारिग़ हो जाती हैं।”
20 तब ख़ुदा ने दाइयों का भला किया और लोग बढ़े और बहुत
ज़बरदस्त हो गए।
21 और इस वजह से कि दाइयाँ ख़ुदा से डरी, उसने उनके घर
आबाद कर दिए।
22 और फ़िर'औन ने अपनी क़ौम के सब लोगों को ताकीदन
कहा, † “उनमें जो बेटा पैदा हो तुम उसे ‡दरिया में डाल देना,
और जो बेटी हो उसे ज़िन्दा छोड़ना।”

2

[illegible]

1 और लावी के घराने के एक शख़्स ने जाकर लावी की नसल
की एक 'औरत से ब्याह किया।

† **1:22** इब्री बेटा ‡ **1:22** बहर — ए — क़ुल्ज़ुम (नील नदी)

2 वह 'औरत हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, और उस ने यह देखकर कि बच्चा ख़ूबसूरत है तीन महीने तक उसे छिपा कर रखा।

3 और जब उसे और ज़्यादा छिपा न सकी तो उसने सरकंडों का एक टोकरा लिया, और उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगा कर लड़के को उसमें रख्खा, और उसे दरिया के किनारे झाऊ में छोड़ आई।

4 और उसकी बहन दूर खड़ी रही ताकि देखे कि उसके साथ क्या होता है।

5 और फ़िर'औन की बेटी दरिया पर ग़ुस्ल करने आई और उसकी सहेलियाँ दरिया के किनारे — किनारे टहलने लगीं। तब उसने झाऊ में वह टोकरा देख कर अपनी सहेली को भेजा कि उसे उठा लाए।

6 जब उसने उसे खोला तो लड़के को देखा, और वह बच्चा रो रहा था। उसे उस पर रहम आया और कहने लगी, "यह किसी 'इब्रानी का बच्चा है।"

7 तब उसकी बहन ने फ़िर'औन की बेटी से कहा, "क्या मैं जा कर 'इब्रानी 'औरतों में से एक दाई तेरे पास बुला लाऊँ, जो तेरे लिए इस बच्चे को दूध पिलाया करे?"

8 फ़िर'औन की बेटी ने उसे कहा, "जा!" वह लड़की जाकर उस बच्चे की माँ को बुला लाई।

9 फ़िर'औन की बेटी ने उसे कहा, "तू इस बच्चे को ले जाकर मेरे लिए दूध पिला, मैं तुझे तेरी मज़दूरी दिया करूँगी।" वह 'औरत उस बच्चे को ले जाकर दूध पिलाने लगी।

10 जब बच्चा कुछ बड़ा हुआ तो वह उसे फ़िर'औन की बेटी के पास ले गई और वह उसका बेटा ठहरा और उसने उसका नाम *मूसा यह कह कर रख्खा, "मैंने उसे पानी से निकाला।"

[illegible]

* **2:10** निकाला हुआ

11 इतने में जब मूसा बड़ा हुआ तो बाहर अपने भाइयों के पास
गया। और उनकी मशक़्क़तों पर उसकी नज़र पड़ी और उसने देखा
कि एक मिस्री उसके एक 'इब्रानी भाई को मार रहा है।
12 फिर उसने इधर उधर निगाह की और जब देखा कि वहाँ कोई
दूसरा आदमी नहीं है, तो उस मिस्री को जान से मार कर उसे रेत
में छिपा दिया।
13 फिर दूसरे दिन वह बाहर गया और देखा कि दो 'इब्रानी
आपस में मार पीट कर रहे हैं। तब उसने उसे जिसका क़ुसूर था
कहा, कि "तू अपने साथी को क्यूँ मारता है?"
14 उसने कहा, "तुझे किसने हम पर हाकिम या मुन्सिफ़ मुक़र्रर
किया? क्या जिस तरह तूने उस मिस्री को मार डाला, मुझे भी मार
डालना चाहता है?" तब मूसा यह सोच कर डरा, "बिला शक यह
राज़ खुल गया।"
15 जब फ़िर'औन ने यह सुना तो चाहा कि मूसा को क़त्ल करे।
पर मूसा फ़िर'औन के सामने से भाग कर मुल्क — ए — मिदियान
में जा बसा। वहाँ वह एक कुएँ के नज़दीक बैठा था।
16 और मिदियान के काहिन की सात बेटियाँ थी। वह आईं और
पानी भर — भर कर कठरों में डालने लगीं ताकि अपने बाप की
भेड़ — बकरियों को पिलाएँ।
17 और गड़रिये आकर उनको भगाने लगे, लेकिन मूसा खड़ा
हो गया और उसने उनकी मदद की और उनकी भेड़ — बकरियों
को पानी पिलाया।
18 और जब वह अपने बाप र'ऊएल के पास लौटीं तो उसने
पूछा, "आज तुम इस क़दर जल्द कैसे आ गई?"
19 उन्होंने कहा, "'एक मिस्री ने हम को गड़रियों के हाथ से
बचाया, और हमारे बदले पानी भर — भर कर भेड़ बकरियों को
पिलाया।"
20 उसने अपनी बेटियों से कहा, "वह आदमी कहाँ है? तुम उसे
क्यूँ छोड़ आई? उसे बुला लाओ कि रोटी खाए।"

21 और मूसा उस शख़्स के साथ रहने को राज़ी हो गया। तब
उसने अपनी बेटी सफ़्फ़ूरा मूसा को ब्याह दी।
22 और उसके एक बेटा हुआ, और मूसा ने उसका नाम जैरसोम
यह कहकर रख्खा, "मैं अजनबी मुल्क में मुसाफ़िर हूँ।"
23 और एक मुद्दत के बाद यूँ हुआ कि मिस्र का बादशाह मर
गया। और बनी — इस्राईल अपनी ग़ुलामी की वजह से आह
भरने लगे और रोए; और उनका रोना जो उनकी ग़ुलामी की वजह
था ख़ुदा तक पहुँचा।
24 और ख़ुदा ने उनका कराहना सुना, और ख़ुदा ने अपने 'अहद
को जो अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब के साथ था† याद किया।
25 और ख़ुदा ने बनी — इस्राईल पर नज़र की और उनके हाल
को मा'लूम किया।

3

[illegible]

1 और मूसा के ससुर यित्रो कि जो मिदियान का काहिन था, भेड़
— बकारियाँ चराता था। और वह भेड़ — बकरियों को हंकाता
हुआ उनको वीराने की परली तरफ़ से *ख़ुदा के पहाड़ होरिब के
नज़दीक ले आया।
2 और ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता एक झाड़ी में से आग के शो'ले में
उस पर ज़ाहिर हुआ। उसने निगाह की और क्या देखता है, कि
एक झाड़ी में आग लगी हुई है पर वह झाड़ी भसम नहीं होती।
3 तब मूसा ने कहा, "मैं अब ज़रा उधर कतरा कर इस बड़े मन्ज़र
को देखूँ कि यह झाड़ी क्यूँ नहीं जल जाती।"
4 जब ख़ुदावन्द ने देखा कि वह देखने को कतरा कर आ रहा है,
तो ख़ुदा ने उसे झाड़ी में से पुकारा और कहा, ऐ मूसा! ऐ मूसा!
"उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ।"

† **2:24** दिमाग में लाया गया * **3:1** मुक़द्दस पहाड़

5 तब उसने कहा, “इधर पास मत आ। अपने पाँव से जूता
उतार, क्यूँकि जिस जगह तू खड़ा है वह पाक ज़मीन है।”
6 फिर उसने कहा कि मैं तेरे बाप का ख़ुदा, या'नी अब्रहाम
का ख़ुदा और इस्हाक़ का ख़ुदा और या'क़ूब का ख़ुदा हूँ। मूसा
ने अपना मुँह छिपाया क्यूँकि वह ख़ुदा पर नज़र करने से डरता
था।
7 और ख़ुदावन्द ने कहा, “मैंने अपने लोगों की तक्लीफ़ जो
मिस्र में हैं ख़ूब देखी, और उनकी फ़रियाद जो बेगार लेने वालों
की वजह से है सुनी, और मैं उनके दुखों को जानता हूँ।
8 और मैं उतरा हूँ कि उनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊँ, और
उस मुल्क से निकाल कर उनको एक अच्छे और बड़े मुल्क में
जहाँ †दूध और शहद बहता है या'नी कना'नियों और हित्तियों
और अमोरियों और फ़रिज़्ज़ीयों और हव्वियों और यबूसियों के
मुल्क में पहुँचाऊँ।
9 देख बनी — इस्राईल की फ़रियाद मुझ तक पहुँची है, और
मैंने वह ज़ुल्म भी जो मिस्री उन पर करते हैं देखा है।
10 इसलिए अब आ मैं तुझे फ़िर'‡औन के पास भेजता हूँ कि तू
मेरी क़ौम बनी — इस्राईल को मिस्र से निकाल लाए।”
11 मूसा ने ख़ुदा से कहा, “मैं कौन हूँ जो फ़िर'औन के पास जाऊँ
और बनी — इस्राईल को मिस्र से निकाल लाऊँ?”
12 उसने कहा, “मैं ज़रूर तेरे साथ रहूँगा और इसका कि मैंने
तुझे भेजा है तेरे लिए यह निशान होगा, कि जब तू उन लोगों को
मिस्र से निकाल लाएगा तो तुम इस पहाड़ पर ख़ुदा की इबादत
करोगे।”
13 तब मूसा ने ख़ुदा से कहा, “जब मैं बनी — इस्राईल के पास
जाकर उनको कहूँ कि तुम्हारे बाप — दादा के ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे

† **3:8** अज़ हद ज़रख़ेज़ मुल्क ‡ **3:10** मिस्र का बादशाह

पास भेजा है, और वह मुझे कहें कि उसका नाम क्या है? तो मैं
उनको क्या बताऊँ?"
14 ख़ुदा ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो मैं हूँ। इसलिए तू बनी
— इस्राईल से यूँ कहना, 'मैं जो हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'।"
15 फिर ख़ुदा ने मूसा से यह भी कहा कि तू बनी — इस्राईल
से यूँ कहना कि ख़ुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा के ख़ुदा, अब्रहाम
के ख़ुदा और इस्हाक़ के ख़ुदा और या'क़ूब के ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे
पास भेजा है। हमेशा तक मेरा यही नाम है और सब नसलों में
इसी से मेरा ज़िक्र होगा।
16 जा कर इस्राईली बुज़ुर्गों को एक जगह जमा' कर और
उनको कह, 'ख़ुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा के ख़ुदा, अब्रहाम और
इस्हाक़ और या'क़ूब के ख़ुदा ने मुझे दिखाई देकर यह कहा है कि
मैंने तुम को भी, और जो कुछ बरताव तुम्हारे साथ मिस्र में किया
जा रहा है उसे भी ख़ूब देखा है।
17 और मैंने कहा है कि मैं तुम को मिस्र के दुख में से निकाल
कर कना'नियों और हित्तियों और अमोरियोंऔर फ़रिज़्ज़ियों और
हव्वियों और यबूसियों के मुल्क में ले चलूँगा, जहाँ §दूध और
शहद बहता है।
18 और वह तेरी बात मानेंगे और तू इस्राईली बुज़ुर्गों को साथ
लेकर मिस्र के बादशाह के पास जाना और उससे कहना कि
'ख़ुदावन्द इब्रानियों के ख़ुदा की हम से मुलाक़ात हुई। अब तू
हम को *तीन दिन की मंज़िल तक वीराने में जाने दे ताकि हम
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानी करें।
19 और मैं जानता हूँ कि मिस्र का बादशाह तुम को न यूँ जाने
देगा, †न बड़े ज़ोर से।
20 तब मैं अपना हाथ बढ़ाऊँगा और मिस्र को उन सब 'अजायब

§ **3:17** अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क * **3:18** तीन दिन का पैदल रास्ता † **3:19** जब तक कि ख़ुदा का एक ज़बरदस्त हाथ उसे मजबूर न कर दे

से जो मैं उसमें करूँगा, मुसीबत में डाल दूँगा। इसके बाद वह तुम
को जाने देगा।
21 और मैं उन ‡लोगों को मिस्रियों की नज़र में इज़्ज़त बख़्शूँगा
और यूँ होगा कि जब तुम निकलोगे तो ख़ाली हाथ न निकलोगे।
22 बल्कि तुम्हारी एक — एक 'औरत अपनी अपनी पड़ौसन
से और अपने — अपने घर की मेहमान से सोने चाँदी के ज़ेवर
और लिबास माँग लेगी। इनको तुम अपने बेटों और बेटियों को
पहनाओगे और मिस्रियों को लूट लोगे।

4

[illegible]

1 तब मूसा ने जवाब दिया, "लेकिन वह तो मेरा यक़ीन ही नहीं
करेंगे न मेरी बात सुनेंगे। वह कहेंगे, 'ख़ुदावन्द तुझे दिखाई नहीं
दिया'।"
2 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि यह तेरे हाथ में क्या है?
उसने कहा, "लाठी।"
3 फिर उसने कहा कि उसे ज़मीन पर डाल दे। उसने उसे ज़मीन
पर डाला और वह साँप बन गई, और मूसा उसके सामने से भागा।
4 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ा कर उसकी दुम पकड़
ले। उसने हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया, वह उसके हाथ में
लाठी बन गया।
5 ताकि वह यक़ीन करें कि ख़ुदावन्द उनके बाप — दादा का
ख़ुदा, अब्रहाम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और या'क़ूब का ख़ुदा
तुझ को दिखाई दिया।
6 फिर ख़ुदावन्द ने उसे यह भी कहा, कि तू अपना हाथ अपने
सीने पर रख कर ढाँक ले। उसने अपना हाथ अपने सीने पर रख
कर उसे ढाँक लिया, और जब उसने उसे निकाल कर देखा तो
उसका हाथ कोढ़ से बर्फ़ की तरह सफ़ेद था।

‡ **3:21** इस में बनी इस्राईल जोड़ें

7 उसने कहा कि तू अपना हाथ फिर अपने सीने पर रख कर
ढाँक ले। उसने फिर उसे सीने पर रख कर ढाँक लिया। जब उसने
उसे सीने पर से बाहर निकाल कर देखा तो वह फिर उसके बाकी
जिस्म की तरह हो गया।
8 और यूँ होगा कि अगर वह तेरा यक़ीन न करें और पहले
निशान और मोअजिज़े को भी न मानें तो वह दूसरे निशान और
मोअजिज़े की वजह से यक़ीन करेंगे।
9 और अगर वह इन दोनों निशान और मुअजिज़ों की वजह से
भी यक़ीन न करें और तेरी बात न सुनें, तो तू दरिया-ए-नील से
पानी लेकर ख़ुश्क ज़मीन पर छिड़क देना और वह पानी जो तू
दरिया से लेगा ख़ुश्क ज़मीन पर ख़ून हो जाएगा।
10 तब मूसा ने ख़ुदावन्द से कहा, "ऐ ख़ुदावन्द! मैं फ़सीह नहीं,
न तो पहले ही था और न जब से तूने अपने बन्दे से कलाम किया
बल्कि रुक — रुक कर बोलता हूँ और मेरी ज़बान कुन्दहै।"
11 तब ख़ुदावन्द ने उसे कहा कि आदमी का मुँह किसने बनाया
है? और कौन गूँगा या बहरा या बीना या अन्धा करता है? क्या
मैं ही जो ख़ुदावन्द हूँ यह नहीं करता?
12 इसलिए अब तू जा और मैं तेरी ज़बान का ज़िम्मा लेता हूँ
और तुझे सिखाता रहूँगा कि तू क्या — क्या कहे।
13 तब उसने कहा कि ऐ ख़ुदावन्द! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ,
किसी और के हाथ से जिसे तू चाहे यह पैग़ाम भेज।
14 तब ख़ुदावन्द का क़हर मूसा पर भड़का और उसने कहा,
क्या लावियों में से हारून तेरा भाई नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह
फ़सीह है और वह तेरी मुलाक़ात को आ भी रहा है, और तुझे देख
कर दिल में ख़ुश होगा।
15 इसलिए तू उसे सब कुछ बताना और यह सब बातें उसे
सिखाना और मैं तेरी और उसकी ज़बान का ज़िम्मा लेता हूँ, और

तुम को सिखाता रहूँगा कि तुम क्या — क्या करो।
16 और वह तेरी तरफ़ से लोगों से बातें करेगा और वह तेरा मुँह
बनेगा और तू उसके लिए जैसे ख़ुदा होगा।
17 और तू इस लाठी को अपने हाथ में लिए जा और इसी से
यह निशान और मो'मुअजिज़ों को दिखाना।

[illegible]

18 तब मूसा लौट कर अपने ससुर यित्रो के पास गया और उसे
कहा, "मुझे ज़रा इजाज़त दे कि अपने भाइयों के पास जो मिस्र
में हैं, जाऊँ औरदेखूँ कि वह अब तक ज़िन्दा हैं कि नहीं।" यित्रो
ने मूसा से कहा, कि सलामत जा।
19 और ख़ुदावन्द ने मिदियान में मूसा से कहा, कि "मिस्र को
लौट जा, क्यूँकि वह सब जो तेरी जान के ख़्वाहाँ थे मर गए।"
20 तब मूसा अपनी बीवी और अपने बेटों को लेकर और उनको
एक गधे पर चढ़ा कर मिस्र को लौटा, और मूसा ने ख़ुदा की लाठी
अपने हाथ में ले ली।
21 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "जब तू मिस्र में पहुँचे
तो देख वह सब करामात जो मैंने तेरे हाथ में रख्खी हैं फ़िर'औन
के आगे दिखाना, लेकिन मैं उसके दिल को सख़्त करूँगा, और वह
उन लोगों को जाने नहीं देगा।
22 तू फ़िर'औन से कहना, कि 'ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि
इस्राईल मेरा बेटा बल्कि मेरा पहलौठा है।
23 और मैं तुझे कह चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह
मेरी इबादत करे, और तूने अब तक उसे जाने देने से इन्कार किया
है; और देख मैं तेरे बेटे को बल्कि तेरे पहलौटे को मार डालूँगा'।"
24 और रास्ते में मंज़िल पर ख़ुदावन्द उसे मिला और चाहा कि
उसे मार डाले।

25 तब सफ़्फ़ूरा ने चक़मक़ का एक पत्थर लेकर अपने बेटे की
खलड़ी काट डाली और उसे मूसा के *पाँव पर फेंक कर कहा, "तू
बेशक मेरे लिए ख़ूनी दूल्हा ठहरा।"
26 तब उसने उसे छोड़ दिया। लेकिन उसने कहा, कि "ख़तने
की वजह से तू ख़ूनी दूल्हा है।"
27 और ख़ुदावन्द ने हारून से कहा, कि "वीराने में जा कर मूसा
से मुलाक़ात कर।" वह गया और ख़ुदा के पहाड़ पर उससे मिला
और उसे बोसा दिया।
28 और मूसा ने हारून को बताया, कि ख़ुदा ने क्या — क्या बातें
कह कर उसे भेजा और कौन — कौन से निशान और मुअजिज़े
दिखाने का उसे हुक्म दिया है।
29 तब मूसा और हारून ने जाकर बनी — इस्राईल के सब
बुज़ुर्गों को एक जगह जमा' किया।
30 और हारून ने सब बातें जो ख़ुदावन्द ने मूसा से कहीं थी
उनको बताई और लोगों के सामने निशान और मो'जिज़े किए।
31 तब लोगों ने उनका यक़ीन किया और यह सुन कर कि
ख़ुदावन्द ने बनी — इस्राईल की ख़बर ली और उनके दुखों पर
नज़र की, उन्होंने अपने सिर झुका कर सिज्दा किया।

5

[illegible]

1 इसके बाद मूसा और हारून ने जाकर फ़िर'औन से कहा कि,
"ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि 'मेरे लोगों को
जाने दे ताकि वह वीराने में मेरे लिए 'ईद करें'।"
2 फ़िर'औन ने कहा, कि "ख़ुदावन्द कौन है कि मैं उसकी बात
को मान कर बनी — इस्राईल को जानें दूँ? मैं ख़ुदावन्द को नहीं
जानता और मैं बनी — इस्राईल को जाने भी नहीं दूँगा।"

* 4:25 यहाँ पांव का मतलब मूसा का आज़ा — ए — तनासुल भी हो सकता है

3 तब उन्होंने कहा, कि "'इब्रानियों का ख़ुदा हम से मिला है;
इसलिए हम को इजाज़त दे कि हम तीन दिन की मन्ज़िल वीराने
में जा कर ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानी करें, ऐसा न हो
कि वह हम पर वबा भेज दे या हम को तलवार से मरवा दे।"
4 तब मिस्र के बादशाह ने उनको कहा, कि "ऐ मूसा और ऐ
हारून! तुम क्यूँ इन लोगों को इनके काम से छुड़वाते हो? तुम
जाकर अपने — अपने बोझ को उठाओ।"
5 और फ़िर'औन ने यह भी कहा, कि "देखो, यह लोग इस मुल्क
में बहुत हो गए हैं, और तुम इनको इनके काम से बिठाते हो।"

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

6 और उसी दिन फ़िर'औन ने बेगार लेने वालों और सरदारों को
जो लोगों पर थे हुक्म किया,
7 "अब आगे को तुम इन लोगों को ईंटें बनाने के लिए भुस न
देना जैसे अब तक देते रहे, वह ख़ुद ही जाकर अपने लिए भुस
बटोरें।
8 और इनसे उतनी ही ईंटें बनवाना जितनी वह अब तक बनाते
आए हैं; तुम उसमें से कुछ न घटाना क्यूँकि वह काहिल हो गए
हैं, इसीलिए चिल्ला — चिल्ला कर कहते हैं, 'हम को जाने दो कि
हम अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानी करें।
9 इसलिए इनसे ज़्यादा सख़्त मेहनत ली जाए, ताकि काम में
मशग़ूल रहें और झूठी बातों से दिल न लगाएँ।"
10 तब बेगार लेने वालों और सरदारों ने जो लोगों पर थे जाकर
उनसे कहा, कि फ़िर'औन कहता है, कि 'मैं तुम को भुस नहीं देने
का।
11 तुम ख़ुद ही जाओ और जहाँ कहीं तुम को भुस मिले वहाँ से
लाओ, क्यूँकि तुम्हारा काम कुछ भी घटाया नहीं जाएगा'।
12 चुनाँचे वह लोग तमाम मुल्क — ए — मिस्र में मारे — मारे
फिरने लगे कि भुस के 'बदले खूँटी जमा' करें।

13 और बेगार लेने वाले यह कह कर जल्दी कराते थे कि तुम
अपना रोज़ का काम जैसे भुस पा कर करते थे अब भी करो।
14 और बनी — इस्राईल में से जो — जो फ़िर'औन के बेगार
लेने वालों की तरफ़ से इन लोगों पर सरदार मुक़र्रर हुए थे, उन
पर मार पड़ी और उनसे पूछा गया, कि "क्या वजह है कि तुम ने
पहले की तरह आज और कल पूरी — पूरी ईंटें नहीं बनवाई?"
15 तब उन सरदारों ने जो बनी — इस्राईल में से मुक़र्रर हुए
थे फ़िर'औन के आगे जा कर फ़रियाद की और कहा कि तू अपने
ख़ादिमों से ऐसा सुलूक क्यूँ करता है?
16 तेरे ख़ादिमों को भुस तो दिया नहीं जाता और वह हम से
कहते रहते हैं ईंटें बनाओ', और देख तेरे ख़ादिम मार भी खाते हैं
पर क़ुसूर तेरे लोगों का है।
17 उसने कहा, "तुम सब काहिल हो काहिल, इसी लिए तुम
कहते हो कि हम को जाने दे कि ख़ुदावन्द के लिए क़ुर्बानी करें।
18 इसलिए अब तुम जाओ और काम करो, क्यूँकि भुस तुम को
नहीं मिलेगा और ईटों को तुम्हें उसी हिसाब से देना पड़ेगा।"
19 जब बनी — इस्राईल के सरदारों से यह कहा गया, कि तुम
अपनी ईटों और रोज़ मर्रा के काम में कुछ भी कमी नहीं करने
पाओगे तो वह जान गए कि वह कैसे वबाल में फैसे हुए हैं।
20 जब वह फ़िर'औन के पास से निकले आ रहे थे तो उनको
मूसा और हारून मुलाक़ात के लिए रास्ते पर खड़े मिले।
21 तब उन्होंने उन से कहा, कि ख़ुदावन्द ही देखे और तुम्हारा
इन्साफ़ करे, क्यूँकि तुम ने हम को फ़िर'औन और उसके ख़ादिमों
की निगाह में ऐसा घिनौना किया है, कि हमारे क़त्ल के लिए उनके
हाथ में तलवार दे दी है।
22 तब मूसा ख़ुदावन्द के पास लौट कर गया और कहा, कि
ऐ ख़ुदावन्द! तूने इन लोगों को क्यूँ दुख में डाला और मुझे क्यूँ
भेजा?

23 क्यूँकि जब से मैं फ़िर'औन के पास तेरे नाम से बातें करने
गया, उसने इन लोगों से बुराई ही बुराई की और तूने अपने लोगों
को ज़रा भी रिहाई न बख़्शी।

6

[illegible]

1 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि 'अब तू देखेगा कि मैं
फ़िर'औन के साथ क्या करता हूँ, तब वह ताक़तवर हाथ की वजह
से उनको जाने देगा और ताक़तवर हाथ ही की वजह से वह उनको
अपने मुल्क से निकाल देगा।
2 फिर ख़ुदा ने मूसा से कहा, कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
3 और मैं अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब को *ख़ुदा — ए —
क़ादिर — ए — मुतलक के तौर पर दिखाई दिया, लेकिन अपने
यहोवा नाम से उन पर ज़ाहिर न हुआ।
4 और मैंने उनके साथ अपना 'अहद भी बाँधा है कि मुल्क —
ए — कना'न जो उनकी मुसाफ़िरत का मुल्क था और जिसमें वह
परदेसी थे उनको दूँगा।
5 और मैंने बनी — इस्राईल के कराहने को भी सुन कर, जिनको
मिस्रियों ने ग़ुलामी में रख छोड़ा है, अपने उस 'अहद को याद
किया है।
6 इसलिए तू बनी — इस्राईल से कह, कि 'मैं ख़ुदावन्द हूँ, और
मैं तुम को मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल लूँगा और मैं तुम
को उनकी ग़ुलामी से आज़ाद करूँगा, और मैं अपना हाथ बढ़ा
कर और उनको बड़ी — बड़ी सज़ाएँ देकर तुम को रिहाई दूँगा।
7 और मैं तुम को ले लूँगा कि मेरी क़ौम बन जाओ और मैं
तुम्हारा ख़ुदा हूँगा, और तुम जान लोगे के मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा
ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालता हूँ।

* **6:3** एल — शडडाइ

8 और जिस मुल्क को अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब को
देने की क़सम मैंने खाई थी उसमें तुम को पहुँचा कर उसे तुम्हारी
मीरास कर दूँगा। ख़ुदावन्द मैं हूँ।
9 और मूसा ने बनी — इस्राईल को यह बातें सुना दीं, लेकिन
उन्होंने दिल की कुढ़न और ग़ुलामी की सख़्ती की वजह से मूसा
की बात न सुनी।
10 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया,
11 कि जा कर मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कह कि बनी —
इस्राईल को अपने मुल्क में से जाने दे।
12 मूसा ने ख़ुदावन्द से कहा, कि "देख, बनी — इस्राईल ने तो
मेरी सुनी नहीं; तब †मैं जो ना मख़्तून होंट रखता हूँ फ़िर'औन
मेरी क्यूँ कर सुनेगा?"
13 तब ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून को बनी — इस्राईल और
मिस्र के बादशाह फ़िर'औन के हक़ में इस मज़मून का हुक्म दिया
कि वह बनी — इस्राईल को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल ले
जाएँ।

[illegible]

14 उनके आबाई ख़ान्दानों के सरदार यह थे: रूबिन, जो
इस्राईल का पहलौठा था, उसके बेटे: हनूक और फ़ल्लू और
हसरोन और करमी थे; यह रूबिन के घराने थे।
15 बनी शमौन यह थे: यमूएल और यमीन और उहद और
यकीन और सुहर और साऊल, जो एक कना'नी 'औरत से पैदा
हुआ था; यह शमौन के घराने थे।
16 और बनी लावी जिनसे उनकी नसल चली उनके नाम यह
हैं: जैरसोन और क़िहात और मिरारी; और लावी की उम्र एक सौ
सैंतीस बरस की हुई।

† **6:12** मैं कलाम करने में अच्छा नहीं हूँ — मैं एक ना मख़्तून होंटों वाला शख़्स हूँ

17 बनी जैरसोन: लिबनी और सिम'ई थे; इन ही से इनके
ख़ान्दान चले।
18 और बनी क़िहात: 'अमराम और इज़हार और हबरून और
'उज़्ज़ीएल थे; और क़िहात की उम्र एक सौ तैंतीस बरस की हुई।
19 और बनी मिरारी: महली और मूर्शी थे। लावियों के घराने
जिनसे उनकी नसल चली यही थे।
20 और 'अमराम ने अपने बाप की बहन यूकबिद से ब्याह किया,
उस 'औरत के उससे हारून और मूसा पैदा हुए; और 'अमराम की
उम्र एक सौ सैंतीस बरस की हुई।
21 बनी इज़हार: क़ोरह और नफ़ज और ज़िकरी थे।
22 और बनी उज़्ज़ीएल: मीसाएल और इलसफ़न और सितरी
थे।
23 और हारून ने नहसोन की बहन 'अमीनदाब की बेटी
इलिशीबा' से ब्याह किया; उससे नदब और अबीहू और
इली'एलियाज़र और ऐतामर पैदा हुए।
24 और बनी क़ोरह: अस्सीर और इलाकना और अबियासफ़ थे,
और यह कोरहियों के घराने थे।
25 और हारून के बेटे इली'एलियाज़र ने फ़ूतिएल की बेटियों
में से एक के साथ ब्याह किया, उससे फ़ीन्हास पैदा हुआ; लावियों
के बाप — दादा के घरानों के सरदार जिनसे उनके ख़ान्दान चले
यही थे।
26 यह वह हारून और मूसा हैं जिनको ख़ुदावन्द ने फ़रमाया:
कि बनी — इस्राईल को उनके लश्कर के मुताबिक़ मुल्क — ए —
मिस्र से निकाल ले जाओ।
27 यह वह हैं जिन्होंने मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कहा, कि
हम बनी — इस्राईल को मिस्र से निकाल ले जाएँगे; यह वही
मूसा और हारून हैं।
28 जब ख़ुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में मूसा से बातें कीं
तो यूँ हुआ,

29 कि ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि मैं ख़ुदावन्द हूँ जो कुछ मैं तुझे कहूँ तू उसे मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कहना।
30 मूसा ने ख़ुदावन्द से कहा, कि देख, ‡मेरे तो होटों का ख़तना नहीं हुआ। फ़िर'औन क्यूँ कर मेरी सुनेगा?

7

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "देख, मैंने तुझे फ़िर'औन के लिए जैसे ख़ुदा ठहराया और तेरा भाई हारून पैग़म्बर होगा।
2 जो — जो हुक्म मैं तुझे दूँ तब तू कहना, और तेरा भाई हारून उसे फ़िर'औन से कहे कि वह बनी — इस्राईल को अपने मुल्क से जाने दे।
3 और मैं फ़िर'औन के दिल को सख़्त करूँगा और अपने निशान अजाईब मुल्क — ए — मिस्र में कसरत से दिखाऊँगा।
4 तो भी फ़िर'औन तुम्हारी न सुनेगा, तब मैं मिस्र को हाथ लगाऊँगा और उसे बड़ी — बड़ी सज़ाएँ देकर अपने लोगों, बनी — इस्राईल के लश्करों को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाऊँगा।
5 और मैं जब मिस्र पर हाथ चलाऊँगा और बनी — इस्राईल को उनमें से निकाल लाऊँगा, तब मिस्री जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।"
6 मूसा और हारून ने जैसा ख़ुदावन्द ने उनको हुक्म दिया वैसा ही किया।
7 और मूसा अस्सी बरस और हारून तिरासी बरस का था, जब वह फ़िर'औन से हम कलाम हुए।
8 और ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा,

‡ **6:30** 1: मैं कलम करने में अच्छा नहीं हूँ — मैं एक ना मख़्तून होंटों वाला शख़्स हूँ

9 “जब फ़िर'औन तुम को कहे, कि अपना मो'अजिज़ा दिखाओ,
तो हारून से कहना, कि अपनी लाठी को लेकर फ़िर'औन के
सामने डाल दे, ताकि वह साँप बन जाए'।”
10 और मूसा और हारून फ़िर'औन के पास गए और उन्होंने
ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ किया; और हारून ने अपनी लाठी
फ़िर'औन और उसके ख़ादिमों के सामने डाल दी और वह साँप
बन गई।
11 तब फ़िर'औन ने भी 'अक़्लमन्दों और जादूगरों को बुलवाया,
और मिस्र के जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया।
12 क्यूँकि उन्होंने भी अपनी — अपनी लाठी सामने डाली और
वह साँप बन गई, लेकिन हारून की लाठी उनकी लाठियों को
निगल गई।
13 और फ़िर'औन का दिल सख़्त हो गया और जैसा ख़ुदावन्द
ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी।

[illegible]

14 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फ़िर'औन का दिल
मुतास्सिब है, वह इन लोगों को जाने नहीं देता।
15 अब तू सुबह को फ़िर'औन के पास जा। वह दरिया पर
जाएगा इसलिए तू दरिया के किनारे उसकी मुलाक़ात के लिए
खड़ा रहना, और जो लाठी साँप बन गई थी उसे हाथ में ले लेना।
16 और उससे कहना, कि 'ख़ुदावन्द 'इब्रानियों के ख़ुदा ने मुझे
तेरे पास यह कहने को भेजा है कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह
वीराने में मेरी इबादत करें; और अब तक तूने कुछ सुनी नहीं।
17 तब ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू इसी से जान लेगा कि मैं
ख़ुदावन्द हूँ, देख, मैं अपने हाथ की लाठी को दरिया के पानी पर
मारूँगा और वह ख़ून हो जाएगा।

18 और जो मछलियाँ दरिया में हैं मर जाएँगी, और दरिया से
झाग उठेगा और मिस्रियों को दरिया का पानी पीने से कराहियत
होगी'।
19 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि हारून से कह, अपनी
लाठी ले और मिस्र में जितना पानी है, या'नी दरियाओं और नहरों
और झीलों और तालाबों पर, अपना हाथ बढ़ा ताकि वह ख़ून बन
जाएँ; और सारे मुल्क — ए — मिस्र में पत्थर और लकड़ी के
बर्तनों में भी ख़ून ही ख़ून होगा।
20 और मूसा और हारून ने ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़
किया; उसने लाठी उठाकर उसे फ़िर'औन और उसके ख़ादिमों के
सामने दरिया के पानी पर मारा, और दरिया का पानी सब ख़ून हो
गया।
21 और दरिया की मछलियाँ मर गई, और दरिया से झाग उठने
लगा और मिस्री दरिया का पानी पी न सके, और तमाम मुल्क —
ए — मिस्र में ख़ून ही ख़ून हो गया।
22 तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया,
लेकिन फ़िर'औन का दिल सख़्त हो गया; और जैसा ख़ुदावन्द ने
कह दिया था उसने उनकी न सुनी।
23 और फ़िर'औन लौट कर अपने घर चला गया, और उसके
दिल पर कुछ असर न हुआ।
24 और सब मिस्रियों ने दरिया के आस पास पीने के पानी के
लिए कुएँ खोद डाले, क्यूँकि वह दरिया का पानी नहीं पी सकते
थे।
25 और जब से ख़ुदावन्द ने दरिया को मारा उसके बाद सात
दिन गुज़रे।

8

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि फ़िर'औन के पास जा और
उससे कह कि 'ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मेरे लोगों को जाने दे
ताकि वह मेरी इबादत करें।
2 और अगर तू उनको जाने न देगा, तो देख, मैं तेरे मुल्क को
मेंढकों से मारूँगा।
3 और दरिया बेशुमार मेंढकों से भर जाएगा, और वह आकर
तेरे घर में और तेरी आरामगाह में और तेरे पलंग पर और तेरे
मुलाज़िमों के घरों में और तेरी र'इयत पर और तेरे तनूरों और
आटा गूँधने के लगनों में घुसते फिरेंगे,
4 और तुझ पर और तेरी र'इयत और तेरे नौकरों पर चढ़
जाएँगे'।
5 और ख़ुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया, हारून से कह, कि अपनी
लाठी लेकर अपने हाथ दरियाओं और नहरों और झीलों पर बढ़ा
और मेंढकों को मुल्क — ए — मिस्र पर चढ़ा ला।
6 चुनाँचे जितना *पानी मिस्र में था उस पर हारून ने अपना
हाथ बढ़ाया, और मेंढक चढ़ आए और मुल्क — ए — मिस्र को
ढाँक लिया।
7 और जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया और मुल्क
— ए — मिस्र पर मेंढक चढ़ा लाए
8 तब फ़िर'औन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, कि
"ख़ुदावन्द से सिफ़ारिश करो के मेंढकों को मुझ से और मेरी
र'इयत से दफ़ा' करे, और मैं इन लोगों को जाने दूँगा ताकि वह
ख़ुदावन्द के लिए क़ुर्बानी करें।"
9 मूसा ने फ़िर'औन से कहा, कि तुझे मुझ पर यही फ़ख़्र रहे!
मैं तेरे और तेरे नौकरों और तेरी र'इयत के वास्ते कब के लिए
सिफ़ारिश करूँ कि मेंढक तुझ से और तेरे घरों से दफ़ा' हों और
दरिया ही में रहें?

---

* **8:6** पानी के अज्साम या तमाम पानियों

10 उसने कहा, “कल के लिए।” तब उसने कहा, “तेरे ही कहने
के मुताबिक़ होगा ताकि तू जाने कि ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा की तरह
कोई नहीं
11 और मेंढक तुझ से और तेरे घरों से और तेरे नौकरों से और
तेरी र'इयत से दूर होकर दरिया ही में रहा करेंगे।”
12 फिर मूसा और हारून फ़िर'औन के पास से निकल कर चले
गए; और मूसा ने ख़ुदावन्द से मेंढकों के बारे में जो उसने फ़िर'औन
पर भेजे थे फ़रियाद की।
13 और ख़ुदावन्द ने मूसा की दरख़्वास्त के मुवाफ़िक किया,
और सब घरों और सहनों और खेतों के मेंढक मर गए।
14 और लोगों ने उनको जमा' कर करके उनके ढेर लगा दिए,
और ज़मीन से बदबू आने लगी।
15 फिर जब फ़िर'औन ने देखा कि छुटकारा मिल गया तो उसने
अपना दिल सख़्त कर लिया, और जैसा ख़ुदावन्द ने कह दिया था
उनकी न सुनी।

[illegible]

16 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “हारून से कह, 'अपनी लाठी
बढ़ा कर ज़मीन की गर्द को मार, ताकि वह तमाम मुल्क — ए —
मिस्र में जूएँ बन जाएँ।”
17 उन्होंने ऐसा ही किया, और हारून ने अपनी लाठी लेकर
अपना हाथ बढ़ाया और ज़मीन की गर्द को मारा, और इंसान और
हैवान पर जूएँ हो गई और तमाम मुल्क — ए — मिस्र में ज़मीन
की सारी गर्द जूएँ बन गई।
18 और जादूगरों ने कोशिश की कि अपने जादू से जूएँ पैदा
करें लेकिन न कर सके। और इंसान और हैवान दोनों पर जूएँ चढ़ी
रहीं।

19 तब जादूगरों ने फ़िर'औन से कहा, कि “यह ख़ुदा का काम
है।” लेकिन फ़िर'औन का दिल सख़्त हो गया, और जैसा ख़ुदावन्द
ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी।

[illegible]

20 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “सुबह — सवेरे उठ कर
फ़िर'औन के आगे जा खड़ा होना, वह दरिया पर आएगा तब तू
उससे कहना, 'ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे
कि वह मेरी इबादत करें।
21 वर्ना अगर तू उनको जाने न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे
नौकरों और तेरी र'इयत पर और तेरे घरों में मच्छरों के ग़ोल के
ग़ोल भेजूँगा; और मिस्रियों के घर और तमाम ज़मीन जहाँ जहाँ
वह हैं, मच्छरों के ग़ोलों से भर जाएगी।
22 और मैं उस दिन जशन के 'इलाक़े को उसमें मच्छरों के ग़ोल
न होंगे; ताकि तू जान ले कि दुनिया में ख़ुदावन्द मैं ही हूँ।
23 और मैंऔर अपने लोगों और तेरे लोगों में †फ़र्क़ करूँगा और
कल तक यह निशान ज़ुहूर में आएगा।”
24 चुनाँचे ख़ुदावन्द ने ऐसा ही किया, और फ़िर'औन के घर और
उसके नौकरों के घरों और सारे मुल्क — ए — मिस्र में मच्छरों
के ग़ोल के ग़ोल भर गए, और इन मच्छरों के ग़ोलों की वजह से
मुल्क का नास हो गया।
25 तब फ़िर'औन ने मूसा और हारून को बुलवा कर कहा, कि
तुम जाओ और अपने ख़ुदा के लिए इसी मुल्क में क़ुर्बानी करो।
26 मूसा ने कहा, “ऐसा करना मुनासिब नहीं, क्यूँकि हम
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए उस चीज़ की क़ुर्बानी करेंगे जिससे
मिस्री नफ़रत रखते हैं; तब अगर हम मिस्रियों की आँखों के आगे
उस चीज़ की क़ुर्बानी करें जिससे वह नफ़रत रखते हैं तो क्या वह
हम को संगसार न कर डालेंगे?

† **8:23** एक छुटकारे का काम या नजात

27 तब हम तीन दिन की राह वीराने में जाकर ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा के लिए जैसा वह हम को हुक्म देगा क़ुर्बानी करेंगे।"
28 फ़िर'औन ने कहा, "मैं तुम को जाने दूँगा ताकि तुम ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के लिए वीराने में क़ुर्बानी करो, लेकिन तुम बहुत दूर
मत जाना और मेरे लिए सिफ़ारिश करना।"
29 मूसा ने कहा, "देख, मैं तेरे पास से जाकर ख़ुदावन्द से
सिफ़ारिश करूँगा के मच्छरों के ग़ोल फ़िर'औन और उसके नौकरों
और उसकी र'इयत के पास से कल ही दूर हो जाएँ, सिर्फ़ इतना
हो कि फ़िर'औन आगे को दग़ा करके लोगों को ख़ुदावन्द के लिए
क़ुर्बानी करने को जाने देने से इन्कार न कर दे।"
30 और मूसा ने फ़िर'औन के पास से जा कर ख़ुदावन्द से
सिफ़ारिश की।
31 ख़ुदावन्द ने मूसा की दरख़्वास्त के मुवाफ़िक़ किया; और
उसने मच्छरों के ग़ोलों को फ़िर'औन और उसके नौकरों और
उसकी र'इयत के पास से दूर कर दिया, यहाँ तक कि एक भी बाक़ी
न रहा।
32 फिर फ़िर'औन ने इस बार भी अपना दिल सख़्त कर लिया,
और उन लोगों को जाने न दिया।

9

[illegible]

1 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि फ़िर'औन के पास जाकर
उससे कह, ख़ुदावन्द 'इब्रानियों का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि मेरे
लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करें।
2 क्यूँकि अगर तू इन्कार करे और उनको जाने न दे और अब भी
उनको रोके रक्खे,
3 तो देख, ख़ुदावन्द का हाथ तेरे चौपायों पर जो खेतों में हैं
या'नी घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय बैलों और भेड़ — बकरियों पर
ऐसा पड़ेगा कि उनमें बड़ी भारी मरी फैल जाएगी।

4 और ख़ुदावन्द इस्राईल के चौपायों को मिस्रियों के चौपायों
से जुदा करेगा, और जो बनी — इस्राईल के हैं उनमें से एक भी
नहीं मरेगा'।
5 और ख़ुदावन्द ने एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया और बता दिया
कि कल ख़ुदावन्द इस मुल्क में यही काम करेगा।
6 और ख़ुदावन्द ने दूसरे दिन ऐसा ही किया और मिस्रियों के
सब चौपाए मर गए लेकिन बनी — इस्राईल के चौपायों में से एक
भी न मरा।
7 चुनाँचे फ़िर'औन ने आदमी भेजे तो मा'लूम हुआ कि
इस्राईलियों के चौपायों में से एक भी नहीं मरा है, लेकिन
फ़िर'औन का दिल ता'अस्सुब में था और उसने लोगों को जाने
न दिया।

[illegible]

8 और ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि तुम दोनों भट्टी
की राख अपनी मुट्ठियों में ले लो, और मूसा उसे फ़िर'औन के
सामने आसमान की तरफ़ उड़ा दे।
9 और वह सारे मुल्क — ए — मिस्र में बारीक गर्द हो कर मिस्र
के आदमियों और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले बन
जाएगी।
10 फिर वह भट्टी की राख लेकर फ़िर'औन के आगे जा खड़े हुए,
और मूसा ने उसे आसमान की तरफ़ उड़ा दिया और वह आदमियों
और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले बन गयी।
11 और जादूगर फोड़ों की वजह से मूसा के आगे खड़े न रह
सके, क्यूँकि जादूगरों और सब मिस्रियों के फोड़े निकले हुए थे।
12 और ख़ुदावन्द ने फ़िर'औन के दिल को सख़्त कर दिया, और
उसने जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा से कह दिया था उनकी न सुनी।

[illegible]

13 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि "सुबह — सवेरे उठ
कर फ़िर'औन के आगे जा खड़ा हो और उसे कह, कि 'ख़ुदावन्द

'इब्रानियों का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि
वह मेरी इबादत करें।
14 क्यूँकि मैं अब की बार अपनी सब बलाएँ तेरे दिल और तेरे
नौकरों और तेरी र'इयत पर नाज़िल करूँगा, ताकि तू जान ले कि
तमाम दुनिया में मेरी तरह कोई नहीं है।
15 और मैंने तो अभी हाथ बढ़ा कर तुझे और तेरी र'इयत को
वबा से मारा होता और तू ज़मीन पर से हलाक हो जाता।
16 लेकिन मैंने तुझे हक़ीक़त में इसलिए क़ाईम रख्खा है कि
अपनी ताक़त तुझे दिखाऊँ, ताकि मेरा नाम सारी दुनिया में
मशहूर हो जाए।
17 क्या तू अब भी मेरे लोगों के मुक़ाबले में तकब्बुर करता है
कि उनको जाने नहीं देता?
18 देख, मैं कल इसी वक़्त ऐसे बड़े — बड़े ओले बरसाऊँगा जो
मिस्र में जब से उसकी बुनियाद डाली गई आज तक नहीं पड़े।
19 तब आदमी भेज कर अपने चौपायों को, जो कुछ तेरा माल
खेतों में है उसको अन्दर कर ले; क्यूँकि जितने आदमी और जानवर
मैदान में होंगे और घर में नहीं पहुँचाए जाएँगे, उन पर ओले पड़ेंगे
और वह हलाक हो जाएँगे'।"
20 तब फ़िर'औन के ख़ादिमों में जो — जो ख़ुदावन्द के कलाम
से डरता था, वह अपने नौकरों और चौपायों को घर में भगा ले
आया।
21 और जिन्होंने ख़ुदावन्द के कलाम का लिहाज़ न किया,
उन्होंने अपने नौकरों और चौपायों को मैदान में रहने दिया।
22 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ आसमान की
तरफ़ बढ़ा ताकि सब मुल्क — ए — मिस्र में इंसान और हैवान
और खेत की सब्ज़ी पर जो मुल्क — ए — मिस्र में है ओले गिरें।
23 और मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ़ उठाई, और
ख़ुदावन्द ने रा'द और ओले भेजे और आग ज़मीन तक आने लगी,

और ख़ुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र पर ओले बरसाए।
24 तब ओले गिरे और ओलों के साथ आग मिली हुई थी, और
वह ओले ऐसे भारी थे कि जब से मिस्री क़ौम आबाद हुई ऐसे ओले
मुल्क में कभी नहीं पड़े थे।
25 और ओलों ने सारे मुल्क — ए — मिस्र में उनको जो मैदान
में थे क्या इंसान, क्या हैवान, सबको मारा और खेतों की सारी
सब्ज़ी को भी ओले मार गए और मैदान के सब दरख़्तों को तोड़
डाला।
26 मगर जशन के 'इलाक़ा में जहाँ बनी — इस्राईल रहते थे
ओले नहीं गिरे।
27 तब फ़िर'औन ने मूसा और हारून को बुला कर उनसे कहा,
कि मैंने इस दफ़ा' गुनाह किया; ख़ुदावन्द सच्चा है और मैं और
मेरी क़ौम हम दोनों बदकार हैं।
28 ख़ुदावन्द से सिफ़ारिश करो क्यूँकि यह ज़ोर का गरजना और
ओलों का बरसना बहुत हो चुका, और मैं तुम को जाने दूँगा और
तुम अब रुके नहीं रहोगे।
29 तब मूसा ने उसे कहा, कि मैं शहर से बाहर निकलते ही
ख़ुदावन्द के आगे हाथ फैलाऊँगा और गरज ख़त्म हो जाएगा
और ओले भी फिर न पड़ेंगे, ताकि तू जान ले कि दुनिया ख़ुदावन्द
ही की है।
30 लेकिन मैं जानता हूँ कि तू और तेरे नौकर अब भी ख़ुदावन्द
ख़ुदा से नहीं डरोगे।
31 अब सुन और जौ को तो ओले मार गए, क्यूँकि जौ की बालें
निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे;
32 पर गेहूँ और कठिया गेहूँ मारे न गए क्यूँकि वह बढ़े न थे।
33 और मूसा ने फ़िर'औन के पास से शहर के बाहर जाकर
ख़ुदावन्द के आगे हाथ फैलाए, तब गरज और ओले ख़त्म हो गए
और ज़मीन पर बारिश थम गई।

34 जब फ़िर'औन ने देखा कि मेंह और ओले और गरज ख़त्म
हो गए, तो उसने और उसके ख़ादिमों ने और ज़्यादा गुनाह किया
कि अपना दिल सख़्त कर लिया।
35 और फ़िर'औन का दिल सख़्त हो गया, और उसने बनी —
इस्राईल को जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' कह दिया था जाने
न दिया।

10

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फ़िर'औन के पास जा;
क्यूँकि मैं ही ने उसके दिल और उसके नौकरों के दिल को सख़्त
कर दिया है, ताकि मैं अपने यह निशान उनके बीच दिखाऊँ;
2 और तू अपने बेटे और अपने पोते को मेरे निशान और वह
काम जो मैंने मिस्र में उनके बीच किए सुनाए और तुम जान लो
कि ख़ुदावन्द मैं ही हूँ।
3 और मूसा और हारून ने फ़िर'औन के पास जाकर उससे कहा
कि ख़ुदावन्द, 'इब्रानियों का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि 'तू कब तक
मेरे सामने नीचा बनने से इन्कार करेगा? मेरे लोगों को जाने दे
कि वह मेरी इबादत करें।
4 वर्ना, अगर तू मेरे लोगों को जाने न देगा, तो देख, कल मैं
तेरे मुल्क में टिड्डियाँ ले आऊँगा।
5 और वह ज़मीन की सतह को ऐसा ढाँक लेंगी कि कोई ज़मीन
को देख भी न सकेगा; और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है
वह उसे खा जाएँगी, और तुम्हारे जितने दरख़्त मैदान में लगे हैं
उनको भी चट कर जाएँगी,
6 और वह तेरे और तेरे नौकरों बल्कि सब मिस्रियों के घरों में भर
जाएँगी; और ऐसा तेरे *बाप दादाओं ने जब से वह पैदा हुए उस

* **10:6** इस में बाप जोड़ें

वक़्त से आज तक नहीं देखा होगा'। और वह लौट कर फ़िर'औन के पास से चला गया।

7 तब फ़िर'औन के नौकर फ़िर'औन से कहने लगे कि "ये शख़्स कब तक हमारे लिए फन्दा बना रहेगा? इन लोगों को जाने दे ताकि वह ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की इबादत करें। क्या तुझे ख़बर नहीं कि मिस्र बर्बाद हो गया?"

8 तब मूसा और हारून फ़िर'औन के पास फिर बुला लिए गए, और उसने उनको कहा, कि "'जाओ, और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की इबादत करो, लेकिन वह कौन — कौन हैं जो जाएँगे?"

9 मूसा ने कहा, कि "हम अपने जवानों और बूढों और अपने बेटों और बेटियों और अपनी भेड़ बकरियों और अपने गाये बैलों समेत जाएँगे, क्यूँकि हम को अपने ख़ुदा की 'ईद करनी है।"

10 तब उसने उनको कहा कि "ख़ुदावन्द ही तुम्हारे साथ रहे, मैं तो ज़रूर ही तुम को बच्चों समेत जाने दूँगा, ख़बरदार हो जाओ इसमें तुम्हारी ख़राबी है।

11 नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा; तब तुम मर्द ही मर्द जाकर ख़ुदावन्द की इबादत करो क्यूँकि तुम यही चाहते थे।" और वह फ़िर'औन के पास से निकाल दिए गए।

12 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि "मुल्क — ए — मिस्र पर अपना हाथ बढ़ा ताकि टिड्डियाँ मुल्क — ए — मिस्र पर आएँ और हर क़िस्म की सब्ज़ी को जो इस मुल्क में ओलों से बच रही है चट कर जाएँ।"

13 तब मूसा ने मुल्क — ए — मिस्र पर अपनी लाठी बढ़ाई, और ख़ुदावन्द ने उस सारे दिन और सारी रात पुरवा आँधी चलाई; और सुबह होते होते पुरवा आँधी टिड्डियाँ ले आई।

14 और टिडियाँ सारे मुल्क — ए — मिस्र पर छा गई और वहीं मिस्र की हदों में बसेरा किया, और उनका दल ऐसा भारी था कि न तो उनसे पहले ऐसी टिड्डियाँ कभी आई न उनके बाद फिर

आएँगी।

15 क्यूँकि उन्होंने इस ज़मीन को ढाँक लिया, ऐसा कि मुल्क में अन्धेरा हो गया; और उन्होंने उस मुल्क की एक — एक सब्ज़ी को और दरख़्तों के मेवह को, जो ओलों से बच गए थे चट कर लिया। और मुल्क — ए — मिस्र में न तो किसी दरख़्त की, न खेत की किसी सब्ज़ी की हरियाली बाक़ी रही।

16 तब फ़िर'औन ने जल्द मूसा और हारून को बुलवा कर कहा कि "मैं ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा का और तुम्हारा गुनहगार हूँ।

17 इसलिए सिर्फ़ इस बार मेरा गुनाह बख़्शो, और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से सिफ़ारिश करो कि वह सिर्फ़ इस मौत को मुझ से दूर कर दे।"

18 फिर उसने फ़िर'औन के पास से निकल कर ख़ुदावन्द से सिफ़ारिश की।

19 और ख़ुदावन्द ने पछुवा आँधी भेजी जो टिड्डियों को उड़ा कर ले गई और उनको बहर — ए — क़ुलज़ुम में डाल दिया, और मिस्र की हदों में एक टिड्डी भी बाक़ी न रही।

20 लेकिन ख़ुदावन्द ने फ़िर'औन के दिल को सख़्त कर दिया और उसने बनी — इस्राईल को जाने न दिया।

[illegible]

21 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ा ताकि मुल्क — ए — मिस्र में तारीकी छा जाए, ऐसी तारीकी जिसे टटोल सकें।

22 और मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ाया और तीन दिन तक सारे मुल्क — ए — मिस्र में गहरी तारीकी रही।

23 तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा और न कोई अपनी जगह से हिला, लेकिन सब बनी — इस्राईल के मकानों में उजाला रहा।

24 तब फ़िर'औन ने मूसा को बुलवा कर कहा कि "तुम जाओ और ख़ुदावन्द की इबादत करो सिर्फ़ अपनी भेड़ बकरियों और

गाये बैलों को यहीं छोड़ जाओ और जो तुम्हारे बाल — बच्चे हैं
उनको भी साथ लेते जाओ।”
25 मूसा ने कहा, कि तुझे हम को क़ुर्बानियों और सोख़्तनी
क़ुर्बानियों के लिए जानवर देने पड़ेंगे, ताकि हम ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा के आगे क़ुर्बानी करें।
26 इसलिए हमारे चौपाये भी हमारे साथ जाएँगे और उनका
एक खुर तक भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्यूँकि उन्ही में से हम
को ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की इबादत का सामान लेना पड़ेगा, और
जब तक हम वहाँ पहुँच न जाएँ हम नहीं जानते कि क्या — क्या
लेकर हम को ख़ुदावन्द की इबादत करनी होगी।
27 लेकिन ख़ुदावन्द ने फ़िर'औन के दिल को सख़्त कर दिया
और उसने उनको जाने ही न दिया।
28 और फ़िर'औन ने उसे कहा, “मेरे सामने से चला जा; और
होशियार रह, फिर मेरा मुँह देखने को मत आना क्यूँकि जिस दिन
तूने मेरा मुँह देखा तो मारा जाएगा।”
29 तब मूसा ने कहा, कि तूने ठीक कहा है, मैं फिर तेरा मुँह कभी
नहीं देखूँगा।

11

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि “मैं फ़िर'औन और मिस्रियों
पर एक बला और लाऊँगा, उसके बाद वह तुम को यहाँ से जाने
देगा, और जब वह तुम को जाने देगा तो यक़ीनन तुम सब को
यहाँ से बिल्कुल निकाल देगा।
2 इसलिए अब तू लोगों के कान में यह बात डाल दे कि उनमें से
हर शख़्स अपने पड़ोसी और हर 'औरत अपनी पड़ौसन से सोने,
चाँदी के ज़ेवर ले।”
3 और ख़ुदावन्द ने उन लोगों पर मिस्रियों को मेहरबान कर
दिया, और यह आदमी मूसा भी मुल्क — ए — मिस्र में फ़िर'औन

के ख़ादिमों के नज़दीक और उन लोगों की निगाह में बड़ा बुज़ुर्ग़ था।
4 और मूसा ने कहा, कि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं आधी
रात को निकल कर मिस्र के बीच में जाऊँगा;
5 और मुल्क — ए — मिस्र के सब पहलौटे, फ़िर'औन जो तख़्त
पर बैठा है उसके पहलौटे से लेकर वह लौंडी जो चक्की पीसती
है उसके पहलौटे तक और सब चौपायों के पहलौठे मर जाएँगे।
6 और सारे मुल्क — ए — मिस्र में ऐसा बड़ा मातम होगा जैसा
न कभी पहले हुआ और न फिर कभी होगा।
7 लेकिन इस्राईल में से किसी पर चाहे इंसान हो चाहे हैवान एक
कुत्ता भी नही भौंकेगा, ताकि तुम जान लो कि ख़ुदावन्द मिस्रियों
और इस्राईलियों में कैसा फ़र्क करता है।
8 और तेरे यह सब नौकर मेरे पास आकर मेरे आगे सर झुकाएंगे
और कहेंगे, कि 'तू भी निकल और तेरे सब पैरौ भी निकलें, इसके
बाद मैं निकल जाऊँगा। यह कह कर वह बड़े ग़ुस्से में फ़िर'औन
के पास से निकल कर चला गया।
9 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फ़िर'औन तुम्हारी इसी
वजह से नहीं सुनेगा; ताकि 'अजायब मुल्क — ए — मिस्र में
बहुत ज़्यादा हो जाएँ।
10 और मूसा और हारून ने यह करामात फ़िरऔन को दिखाई,
और ख़ुदावन्द ने फ़िर'औन के दिल को सख़्त कर दिया कि उसने
अपने मुल्क से बनी — इस्राईल को जाने न दिया।

12

??-?-???

1 फिर ख़ुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में मूसा और हारून से
कहा कि
2 "यह महीना तुम्हारे लिए महीनों का शुरू' और साल का
पहला महीना हो।

3 तब इस्राईलियों की सारी जमा'अत से यह कह दो कि इसी
महीने के दसवें दिन, हर शख़्स अपने आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़
घर पीछे एक बर्रा ले;
4 और अगर किसी के घराने में बर्रे को खाने के लिए आदमी कम
हों, तो वह और उसका पड़ोसी जो उसके घर के बराबर रहता हो,
दोनों मिल कर नफ़री के शुमार के मुवाफ़िक़ एक बर्रा ले रख्खें, तुम
हर एक आदमी के खाने की मिक़्दार के मुताबिक़ बर्रे का हिसाब
लगाना।
5 तुम्हारा बर्रा बे "ऐब और यक साला नर हो, और ऐसा बच्चा
या तो भेड़ों में से चुन कर लेना या बकरियों में से।
6 और तुम उसे इस महीने की चौदहवीं तक रख छोड़ना, और
इस्राईलियों के क़बीलों की सारी जमा'अत शाम को उसे ज़बह
करे।
7 और थोड़ा सा ख़ून लेकर जिन घरों में वह उसे खाएँ, उनके
दरवाज़ों के दोनों बाज़ुओं और ऊपर की चौखट पर लगा दें।
8 और वह उसके गोश्त को उसी रात आग पर भून कर बेख़मीरी
रोटी और कड़वे साग पात के साथ खा लें।
9 उसे कच्चा या पानी में उबाल कर हरगिज़ न खाना, बल्कि
उसको सिर और पाये और अन्दरूनी 'आज़ा समेत आग पर भून
कर खाना।
10 और उसमें से कुछ भी सुबह तक बाक़ी न छोड़ना और अगर
कुछ उसमें से सुबह तक बाक़ी रह जाए तो उसे आग में जला देना।
11 और तुम उसे इस तरह खाना अपनी कमर बाँधे और अपनी
जूतियाँ पाँव में पहने और अपनी लाठी हाथ में लिए हुए तुम उसे
*जल्दी — जल्दी खाना, क्यूँकि यह †फ़सह ख़ुदावन्द की है।
12 इसलिए कि मैं उस रात मुल्क — ए — मिस्र में से होकर
गुज़रूँगा और इंसान और हैवान के सब पहलौठों को जो मुल्क —

---

* **12:11** 1: सफ़र पर रवाना होने की तय्यारी † **12:11** फाश फसह की ईद मनाई जाती थी यह याद करने के लिए कि बर्बाद करने वाला फ़रिश्ता बनी इस्राईल को बचाने के लिए हर एक दहलीज़ से होकर गुज़रता गया

ए — मिस्र में हैं, मारूँगा और मिस्र के सब मा'‡बूदों को भी सज़ा दूँगा; मैं ख़ुदावन्द हूँ।

13 और जिन घरों में तुम हो उन पर वह ख़ून तुम्हारी तरफ़ से निशान ठहरेगा और मैं उस ख़ून को देख कर तुम को छोड़ता जाऊँगा, और जब मैं मिस्रियों को मारूँगा तो वबा तुम्हारे पास फटकने की भी नहीं कि तुम को हलाक करे।

14 और वह दिन तुम्हारे लिए एक यादगार होगा और तुम उसको ख़ुदावन्द की 'ईद का दिन समझ कर मानना। तुम उसे हमेशा की रस्म करके उस दिन को नसल दर नसल 'ईद का दिन मानना।

15 'सात दिन तक तुम बेख़मीरी रोटी खाना, और पहले ही दिन से ख़मीर अपने अपने घर से बाहर कर देना; इसलिए कि जो कोई पहले दिन से सातवें दिन तक ख़मीरी रोटी खाए वह शख़्स इस्राईल में से काट डाला जाएगा।

16 और पहले दिन तुम्हारा मुक़द्दस मजमा' हो, और सातवें दिन भी मुक़द्दस मजमा' हो; उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए सिवा उस खाने के जिसे हर एक आदमी खाए, सिर्फ़ यही किया जाए।

17 और तुम बेख़मीरी रोटी की यह 'ईद मनाना, क्यूँकि मैं उसी दिन तुम्हारे लश्कर को मुल्क — ए — मिस्र से निकालूँगा; इस लिए तुम उस दिन को हमेशा की रस्म करके नसल दर नसल मानना।

18 पहले महीने की चौदहवीं तारीख़ की शाम से इक्कीसवीं तारीख़ की शाम तक तुम बेख़मीरी रोटी खाना।

19 सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी ख़मीर न हो, क्यूँकि जो कोई किसी ख़मीरी चीज़ को खाए, वह चाहे मुसाफ़िर हो चाहे उसकी पैदाइश उसी मुल्क की हो, इस्राईल की जमा'अत से काट डाला जाएगा।

---

‡ **12:12** 1: मैं बनी इस्राईल के सामने साबित करूंगा कि सारे मिसरी देवता झूठे माबूद हैं

20 तुम कोई ख़मीरी चीज़ न खाना बल्कि अपनी सब बस्तियों
में बेख़मीरी रोटी खाना।"
21 तब मूसा ने इस्राईल के सब बुज़ुर्गों को बुलवाकर उनको
कहा, कि अपने — अपने ख़ान्दान के मुताबिक़ एक — एक बर्रा
निकाल रख्खो, और यह फ़सह का बर्रा ज़बह करना।
22 और तुम ज़ूफ़े का एक गुच्छा लेकर उस ख़ून में जो तसले में
होगा डुबोना और उसी तसले के ख़ून में से कुछ ऊपर की चौखट
और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं पर लगा देना; और तुम में से कोई
सुबह तक अपने घर के दरवाज़े से बाहर न जाए।
23 क्यूँकि ख़ुदावन्द मिस्रियों को मारता हुआ गुज़रेगा, और
जब ख़ुदावन्द ऊपर की चौखट और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं पर
ख़ून देखेगा तो वह उस दरवाज़े को छोड़ जाएगा; और हलाक
करने वाले को तुम को मारने के लिए घर के अन्दर आने न देगा।
24 और तुम इस बात को अपने और अपनी औलाद के लिए
हमेशा की रिवायत करके मानना।
25 और जब तुम उस मुल्क में जो ख़ुदावन्द तुम को अपने वा'दे
के मुवाफ़िक़ देगा दाख़िल हो जाओ, तो इस इबादत को बराबर
जारी रखना।
26 और जब तुम्हारी औलाद तुम से पूछे, कि इस इबादत से
तुम्हारा मक़सद क्या है?
27 तो तुम यह कहना, कि 'यह ख़ुदावन्द की फ़सह की क़ुर्बानी
है, जो मिस्र में मिस्रियों को मारते वक़्त बनी — इस्राईल के घरों
को छोड़ गया और यूँ हमारे घरों को बचा लिया'। तब लोगों ने
सिर झुका कर सिज्दा किया।
28 और बनी — इस्राईल ने जाकर, जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा और
हारून को फ़रमाया था वैसा ही किया।
29 और आधी रात को ख़ुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र के सब
पहलौठों को फ़िर'औन जो अपने तख़्त पर बैठा था उसके पहलौठे

से लेकर वह क़ैदी जो क़ैदखानें में था उसके पहलौठे तक, बल्कि
चौपायों के पहलौठों को भी हलाक कर दिया।
30 और फ़िर'औन और उसके सब नौकर और सब मिस्री रात ही
को उठ बैठे और मिस्र में बड़ा कोहराम मचा, क्यूँकि एक भी ऐसा
घर न था जिसमें कोई न मरा हो।

[illegible]

31 तब उसने रात ही रात में मूसा और हारून को बुलवा कर
कहा, कि "तुम बनी — इस्राईल को लेकर मेरी क़ौम के लोगों में
से निकल जाओ और जैसा कहते हो जाकर ख़ुदावन्द की इबादत
करो।
32 और अपने कहने के मुताबिक़ अपनी भेड़ बकरियाँ और गाय
बैल भी लेते जाओ और मेरे लिए भी दुआ' करना।"
33 और मिस्री उन लोगों से बजिद्द होने लगे, ताकि उनको मुल्क
— ए — मिस्र से जल्द बाहर चलता करें, क्यूँकि वह समझे कि
हम सब मर जाएँगे।
34 तब इन लोगों ने अपने गुन्धे गुन्धाए आटे को बग़ैर ख़मीर
दिए लगनों समेत कपड़ों में बाँध कर अपने कंधों पर धर लिया।
35 और बनी — इस्राईल ने मूसा के कहने के मुवाफ़िक यह भी
किया, कि मिस्रियों से सोने चाँदी के ज़ेवर और कपड़े माँग लिए।
36 और ख़ुदावन्द ने उन लोगों को मिस्रियों की निगाह में ऐसी
'इज़्ज़त बख़्शी कि जो कुछ उन्होंने माँगा उन्होंने दे दिया। तब
उन्होंने मिस्रियों को लूट लिया।
37 और बनी — इस्राईल ने रा'मसीस से सुक्कात तक पैदल
सफ़र किया और बाल बच्चों को छोड़ कर वह कोई छः लाख मर्द
थे।
38 और उनके साथ एक मिली — जुली गिरोह भी गई और भेड़
— बकरियाँ और गाय — बैल और बहुत चौपाये उनके साथ थे।

39 और उन्होंने उस गुन्धे हुए आटे की जिसे वह मिस्र से लाए थे बेख़मीरी रोटियाँ पकाई, क्यूँकि वह उसमें ख़मीर देने न पाए थे इसलिए कि वह मिस्र से ऐसे जबरन निकाल दिए गए कि वहाँ ठहर न सके और न कुछ खाना अपने लिए तैयार करने पाए।

40 और बनी — इस्राईल को मिस्र में रहते हुए चार सौ तीस बरस हुए थे।

41 और उन चार सौ तीस बरसों के गुज़र जाने पर ठीक उसी दिन ख़ुदावन्द का सारा लश्कर मुल्क — ए — मिस्र से निकल गया।

42 ये वह रात है जिसे ख़ुदावन्द की ख़ातिर मानना बहुत मुनासिब है क्यूँकि इसमें वह उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, ख़ुदावन्द की यह वही रात है जिसे ज़रूरी है कि सब बनी इस्राईल नसल — दर — नसल ख़ूब मानें।

[illegible]

43 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, कि 'फ़सह की रिवायत यह है, कि कोई बेगाना उसे खाने न पाए।

44 लेकिन अगर कोई शख़्स किसी का ख़रीदा हुआ ग़ुलाम हो, और तूने उसका ख़तना कर दिया हो तो वह उसे खाए।

45 पर अजनबी और मज़दूर उसे खाने न पाए।

46 और उसे एक ही घर में खाएँ या'नी उसका ज़रा भी गोश्त तू घर से बाहर न ले जाना और न तुम उसकी कोई हड्डी तोड़ना।

47 इस्राईल की सारी जमा'अत इस पर 'अमल करे।

48 और अगर कोई अजनबी तेरे साथ मुक़ीम हो और ख़ुदावन्द की फ़सह को मानना चाहता हो उसके यहाँ के सब मर्द अपना ख़तना कराएँ, तब वह पास आकर फ़सह करे; यूँ वह ऐसा समझा जाएगा जैसे उसी मुल्क की उसकी पैदाइश है लेकिन कोई नामख़्तून आदमी उसे खाने न पाए।

49 वतनी और उस अजनबी के लिए जो तुम्हारे बीच मुक़ीम हो
एक ही शरी'अत होगी।
50 तब सब बनी — इस्राईल ने जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा और
हारून को फ़रमाया वैसा ही किया।
51 और ठीक उसी दिन ख़ुदावन्द बनी — इस्राईल के सब
लश्करों को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल ले गया।

13

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया, कि।
2 “सब पहलौठों को या'नी जो बनी — इस्राईल में, चाहे इंसान
हो चाहे हैवान पहलौठे बच्चे हों उनको मेरे लिए पाक ठहरा क्यूँकि
वह मेरे हैं।”
3 और मूसा ने लोगों से कहा, कि “तुम इस दिन को याद रखना
जिस में तुम मिस्र से जो ग़ुलामी का घर है निकले, क्यूँकि ख़ुदावन्द
अपनी ताक़त से तुम को वहाँ से निकाल लाया; इसमें ख़मीरी रोटी
खाई न जाए।
4 तुम अबीब के महीने में आज के दिन निकले हो।
5 फिर जब ख़ुदावन्द तुझ को कना'नियों और हित्तियों और
अमोरियों और हव्वियों और यबूसियों के मुल्क में पहुँचा दे जिसे
तुझ को देने की क़सम उसने तेरे बाप दादा से खाई थी और जिसमें
*दूध और शहद बहता है, तो तू इसी महीने में यह इबादत किया
करना।
6 सात दिन तक तो तू बेख़मीरी रोटी खाना और सातवें दिन
ख़ुदावन्द की 'ईद मनाना।
7 बेख़मीरी रोटी सातों दिन खाई जाए, और ख़मीरी रोटी तेरे
पास दिखाई भी न दे और न तेरे मुल्क की हदों में कहीं कुछ ख़मीर
नज़र आए।

* **13:5** अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क

8 और तू उस दिन अपने बेटे को यह बताना, कि इस दिन को
मैं उस काम की वजह से मानता हूँ जो ख़ुदावन्द ने मेरे लिए उस
वक़्त किया जब मैं मुल्क — ए — मिस्र से निकला।
9 और यही तेरे पास जैसे तेरे हाथ में एक निशान और तेरी दोनों
आँखों के सामने एक यादगार ठहरे, ताकि ख़ुदावन्द की शरी'अत
तेरी ज़बान पर हो; क्यूँकि ख़ुदावन्द ने तुझ को अपनी ताक़त से
मुल्क — ए — मिस्र से निकाला।
10 तब तू इस रिवायत को इसी वक़्त — ए — मु'अय्यन में हर
साल माना करना।
11 “और जब ख़ुदावन्द उस क़सम के मुताबिक़, जो उसने तुझ
से और तेरे बाप दादा से खाई, तुझ को कना'नियों के मुल्क में
पहुँचा कर वह मुल्क तुझ को दे दे।
12 तो तू पहलौटे बच्चों को और जानवरों के पहलौठों को
ख़ुदावन्द के लिए अलग कर देना। सब नर बच्चे ख़ुदावन्द के
होंगे।
13 और गधे के पहले बच्चे के फ़िदिये में बर्रा देना, और अगर तू
उसका फ़िदिया न दे तो उसकी गर्दन तोड़ डालना। और तेरे बेटों
में जितने पहलौठे हों उन सबका फ़िदिया तुझ को देना होगा। †
14 और जब अगले ज़माने में तेरा बेटा तुझसे सवाल करे, कि
'यह क्या है?” तो तू उसे यह जवाब देना, 'ख़ुदावन्द हम को मिस्र
से जो ग़ुलामी का घर है अपनी ताक़त से निकाल लाया।
15 और जब फ़िर'औन ने हम को जाने देना न चाहा, तो
ख़ुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में इंसान और हैवान दोनों के
पहलौठे मार दिए। इसलिए मैं जानवरों के सब नर बच्चों को जो
अपनी अपनी माँ के रिहम को खोलते हैं ख़ुदावन्द के आगे क़ुर्बानी
करता हूँ, लेकिन अपने बेटों के सब पहलौठों का फ़िदिया देता हूँ।
16 और यह तेरे हाथ पर एक निशान और तेरी पेशानी पर टीकों

† **13:13** क़बूल करने के लिए बर्रे की क़ुर्बानी जायज़ है मगर गधे की क़ुर्बानी जायज़
नहीं है

की तरह हों, क्यूँकि ख़ुदावन्द अपने ताक़त से हम को मिस्र से
निकाल लाया।”

[illegible]

17 और जब फ़िर'औन ने उन लोगों को जाने की इजाज़त दे दी
तो ख़ुदा इनको फ़िलिस्तियों के मुल्क के रास्ते से नहीं ले गया,
अगरचे उधर से नज़दीक पड़ता; क्यूँकि ख़ुदा ने कहा, ऐसा न हो
कि यह लोग लड़ाई — भिड़ाई देख कर पछताने लगें और मिस्र
को लौट जाएँ।
18 बल्कि ख़ुदा इनको चक्कर खिला कर बहर — ए — क़ुलज़ुम
के वीरान के रास्ते से ले गया और बनी — इस्राईल मुल्क — ए
— मिस्र से हथियार बन्द निकले थे। ‡
19 और मूसा यूसुफ़ की हड्डियों को साथ लेता गया, क्यूँकि
उसने बनी — इस्राईल से यह कह कर, कि ख़ुदा ज़रूर तुम्हारी
ख़बर लेगा इस बात की सख़्त क़सम ले ली थी, कि तुम यहाँ से
मेरी हड्डियाँ अपने साथ लेते जाना।
20 और उन्होंने सुक्कात से रवाना करके वीराने के किनारे ईताम
में ख़ेमा लगाया।
21 और ख़ुदावन्द उनको दिन को रास्ता दिखाने के लिए बादल
के सुतून में और रात को रौशनी देने के लिए आग के सुतून में हो
कर उनके आगे — आगे चला करता था, ताकि वह दिन और रात
दोनों में चल सके।
22 वह बादल का सुतून दिन को और आग का सुतून रात को
उन लोगों के आगे से हटता न था।

14

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से फ़रमाया, कि

‡ **13:18** या बनी इस्राईल अपने इन्फिरादी क़बीलों में चले गए

2 “बनी — इस्राईल को हुक्म दे कि वह लौट कर मिजदाल और
समुन्दर के बीच फ़ी हख़ीरोत के सामने बाल — सफ़ोन के आगे
ख़ेमे लगाएँ, उसी के आगे समुन्दर के किनारे किनारे ख़ेमें लगाना।
3 फ़िर'औन बनी — इस्राईल के हक़ में कहेगा कि वह ज़मीन
की उलझनों में आकर वीरान में घिर गए हैं।
4 और मैं फ़िर'औन के दिल को सख़्त करूँगा और वह उनका
पीछा करेगा, और मैं फ़िर'औन और उसके सारे लश्कर पर मुम्ताज़
हूँगा और मिस्री जान लेंगे कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।” और उन्होंने ऐसा
ही किया।

[illegible]

5 जब मिस्र के बादशाह को ख़बर मिली कि वह लोग चल दिए,
तो फ़िर'औन और उसके खादिमों का दिल उन लोगों की तरफ़
से फिर गया, और वह कहने लगे कि हम ने यह क्या किया, कि
इस्राईलियों को अपनी ख़िदमत से छुट्टी देकर उनको जाने दिया?
6 तब उसने अपना रथ तैयार करवाया और अपनी क़ौम के
लोगों को साथ लिया,
7 और उसने छः सौ चुने हुए रथ बल्कि मिस्र के सब रथ लिए
और उन सभों में सरदारों को बिठाया।
8 और ख़ुदावन्द ने मिस्र के बादशाह फ़िर'औन के दिल को सख़्त
कर दिया और उसने बनी इस्राईल का पीछा किया, क्यूँकि बनी
— इस्राईल बड़े फ़ख़्र से निकले थे।
9 और मिस्री फ़ौज ने फ़िर'औन के सब घोड़ों और रथों और
सवारों समेत उनका पीछा किया और उनको जब वह समुन्दर के
किनारे फ़ी — हख़ीरोत के पास बाल सफ़ोन के सामने ख़ेमा लगा
रहे थे जा लिया।
10 और जब फ़िर'औन नज़दीक आ गया तब बनी — इस्राईल ने
आँख उठा कर देखा कि मिस्री उनका पीछा किए चले आते हैं, और
वह बहुत ख़ौफ़ज़दा हो गए। तब बनी — इस्राईल ने ख़ुदावन्द से
फ़रियाद की,

11 और मूसा से कहने लगे, “क्या मिस्र में क़ब्रे न थीं जो तू हम
को वहाँ से मरने के लिए वीराने में ले आया है? तूने हम से यह
क्या किया कि हम को मिस्र से निकाल लाया?
12 क्या हम तुझ से मिस्र में यह बात न कहते थे कि हम को रहने
दे कि हम मिस्रियों की ख़िदमत करें? क्यूँकि हमारे लिए मिस्रियों
की ख़िदमत करना वीराने में मरने से बेहतर होता।”
13 तब मूसा ने लोगों से कहा, “डरो मत, चुपचाप खड़े होकर
ख़ुदावन्द की नजात के काम को देखो जो वह आज तुम्हारे लिए
करेगा। क्यूँकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो उनको फिर
कभी हमेशा तक न देखोगे।
14 ख़ुदावन्द तुम्हारी तरफ़ से जंग करेगा और तुम ख़ामोश
रहोगे।”

[illegible]

15 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि तू क्यूँ मुझ से फ़रियाद
कर रहा है? बनी — इस्राईल से कह कि वह आगे बढ़ें।
16 और तू अपनी लाठी उठा कर अपना हाथ समुन्दर के ऊपर
बढ़ा और उसे दो हिस्से कर, और बनी इस्राईल समुन्दर के बीच
में से ख़ुश्क ज़मीन पर चल कर निकल जाएँगे।
17 और देख, मिस्रियों के दिल सख़्त कर दूँगा और वह उनका
पीछा करेंगे, और मैं फ़िर'औन और उसकी सिपाह और उसके रथों
और सवारों पर मुम्ताज़ हूँगा।
18 और जब मैं फ़िर'औन और उसके रथों और सवारों पर
मुम्ताज़ हो जाउँगा तो मिस्री जान लेंगे कि मैं ही ख़ुदावन्द हूँ।
19 और ख़ुदा उसका फ़रिश्ता जो इस्राईली लश्कर के आगे —
आगे चला करता था जा कर उनके पीछे हो गया और बादल का
वह सुतून उनके सामने से हट कर उनके पीछे जा ठहरा।
20 इस तरह वह मिस्रियों के लश्कर और इस्राईली लश्कर के
बीच में हो गया, तब वहाँ बादल भी था और अन्धेरा भी तो भी

रात को उससे रौशनी रही। तब वह रात भर एक दूसरे के पास
नहीं आए।
21 फिर मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ाया और
ख़ुदावन्द ने रात भर तुन्द पूरबी आँधी चला कर और समुन्दर को
पीछे हटा कर उसे ख़ुश्क ज़मीन बना दिया और पानी दो हिस्से
हो गया।
22 और बनी — इस्राईल समुन्दर के बीच में से ख़ुश्क ज़मीन पर
चल कर निकल गए और उनके दाहने और बाएँ हाथ पानी दीवार
की तरह था।
23 और मिस्रियों ने पीछा किया और फ़िर'औन सब घोड़े और
रथ और सवार उनके पीछे — पीछे समुन्दर के बीच में चले गए।
24 और रात के पिछले पहर ख़ुदावन्द ने आग और बादल के
सुतून में से मिस्रियों के लश्कर पर नज़र कीऔर उनके लश्कर को
घबरा दिया।
25 और उसने उनके रथों के पहियों को निकाल डाला इसलिए
उनका चलना मुश्किल हो गया तब मिस्री कहने लगे, “आओ,
हम इस्राईलियों के सामने से भागें, क्यूँकि ख़ुदावन्द उनकी तरफ़
से मिस्रियों के साथ जंग करता है।”
26 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ समुन्दर के
ऊपर बढ़ा, ताकि पानी मिस्रियों और उनके रथों और सवारों पर
फिर बहने लगे।
27 और मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ाया, और सुबह
होते होते समुन्दर फिर अपनी असली ताक़त पर आ गया; और
मिस्री उल्टे भागने लगे और ख़ुदावन्द ने समुन्दर के बीच ही में
मिस्रियों को हलाक कर दिया।
28 और पानी पलट कर आया और उसने रथों और सवारों और
फ़िर'औन सारे लश्कर जो इस्राईलियों का पीछा करता हुआ
समुन्दर में गया था डुबो दिया और उसमे से एक भी बाक़ी न
छोड़ा।

29 लेकिन बनी — इस्राईल समुन्दर के बीच में ख़ुश्क ज़मीन पर
चलकर निकल गए और पानी उनके दहने और बाएँ हाथ दीवार
की तरह रहा।
30 फिर ख़ुदावन्द ने उस दिन इस्राईलियों को मिस्रियों को हाथ
से इस तरह बचाया, और इस्राईलियों ने मिस्रियों को समुन्दर के
किनारे मरे हुए पड़े देखा।
31 और इस्राईलियों ने बड़ी क़ुदरत जो ख़ुदावन्द ने मिस्रियों पर
ज़ाहिर की देखी, और वह लोग ख़ुदावन्द से डर गये और ख़ुदावन्द
पर और उसके बन्दे मूसा पर ईमान लाए।

15

?????? ?? ???

1 तब मूसा और बनी — इस्राईल ने ख़ुदावन्द के लिए यह गीत
गाया और यूँ कहने लगे, "मैं ख़ुदा वन्द की सना गाँऊगा क्यूँकि
वह जलाल के साथ फ़तहमन्द हुआ; उस ने घोड़े को सवार समेत
समुन्द्र में डाल दिया।
2 ख़ुदावन्द मेरी ताक़त और राग है, वही मेरी नजात भी ठहरा।
वह मेरा ख़ुदा है, मैं उसकी बड़ाई करूँगा, वह मेरे बाप का ख़ुदा
है मैं उसकी बुज़ुर्गी करूँगा।
3 ख़ुदावन्द साहिब — ए — जंग है, यहोवा उसका नाम है।
4 फ़िर'औन के रथों और लश्कर को उसने समुन्दर में डाल
दिया; और उसके चुने सरदार बहर — ए — क़ुलज़ुम में डूब गये।
5 गहरे पानी ने उनको छिपा लिया; वह पत्थर की तरह तह में
चले गए।
6 ऐ ख़ुदावन्द, तेरा दहना हाथ क़ुदरत की वजह से जलाली है।
ऐ ख़ुदावन्द तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है।

7 तू अपनी 'अज़मत के ज़ोर से अपने मुख़ालिफ़ों को हलाक
करता है; तू अपना क़हर भेजता है, और वह उनको खूँटी की तरह
भस्म कर डालता है।
8 तेरे नथनों के दम से पानी का ढेर लग गया, सैलाब तूदे की
तरह सीधे खड़े हो गए, और गहरा पानी समन्दर के बीच में जम
गया।
9 दुश्मन ने तो यह कहा था, मैं पीछा करूँगा, मैं जा पकड़ूँगा, मैं
लूट का माल बाटूँगा, उनकी तबाही से मेरा कलेजा ठंडा होगा। मैं
अपनी तलवार खींच कर अपने ही हाथ से उनको हलाक करूँगा।
10 तूने अपनी आँधी की फूँक मारी, तो समन्दर ने उनको छिपा
लिया। वह ज़ोर के पानी में शीसे की तरह डूब गए।
11 मा'बूदों में ऐ ख़ुदावन्द तेरी तरह कौन है? कौन है जो तेरी
तरह अपनी पाकीज़गी की वजह से जलाली और अपनी मदह की
वजह से रौ'ब वाला और साहिब — ए — करामात है?
12 तूने अपना दहना हाथ बढ़ाया, तो ज़मीन उनको निगल गई।
13 "अपनी रहमत से तूने उन लोगों की जिनको तूने छुटकारा
बख़्शा रहनुमाई की, और अपने ज़ोर से तू उनको अपने मुक़द्दस
मकान को ले चला है।
14 क़ौमें सुन कर काँप गई हैं। और फ़िलिस्तीन के रहने वालों
की जान पर आ बनी है।
15 अदोम के उहदे दार हैरान हैं, मोआब के पहलवानों को
कपकपी लग गई है; कनान के सब रहने वालों के दिल पिघले
जाते हैं।
16 ख़ौफ़ — ओ — हिरास उन पर तारी है; तेरे बाज़ू की 'अज़मत
की वजह से वह पत्थर की तरह बेहिस — ओ — हरकत हैं। जब
तक ऐ ख़ुदावन्द, तेरे लोग निकल न जाएँ, जब तक तेरे लोग
जिनको तूने ख़रीदा है पार न हो जाएँ,
17 तू उनको वहाँ ले जाकर अपनी मीरास के पहाड़ पर दरख़्त
की तरह लगाएगा, तू उनको उसी जगह ले जाएगा जिसे तूने

अपनी सुकूनत के लिए बनाया है। ऐ ख़ुदावन्द! वह तेरी जा —
ए — मुक़द्दस है, जिसे तेरे हाथों ने क़ाईम किया है।
18 ख़ुदावन्द हमेशा से हमेशा तक सल्तनत करेगा।"
19 इस हम्द की वजह यह थी कि फ़िर'औन के सवार घोड़ों और
रथों समेत समन्दर में गए, और ख़ुदावन्द समन्दर के पानी को उन
पर लौटा लाया; लेकिन बनी — इस्राईल समन्दर के बीच में से
ख़ुश्क ज़मीन पर चल कर निकल गए।
20 तब हारून की बहन मरियम नबिया ने दफ़ हाथ में लिया,
और सब 'औरतें दफ़ लिए नाचती हुई उसके पीछे चलीं।
21 और मरियम उनके हम्द के जवाब में यह गाती थी,
"ख़ुदावन्द की हम्द — ओ — सना गाओ, क्यूँकि वह जलाल के
साथ फ़तहमन्द हुआ है; उसने घोड़े को उसके सवार समेत समन्दर
में डाल दिया है।"

[illegible]

22 फ़िर मूसा बनी — इस्राईल को बहर — ए — क़ुलज़ुम से
आगे ले गया और वह शोर के वीराने में आए, और वीराने में चलते
हुए तीन दिन तक उनको कोई पानी का चश्मा न मिला।
23 और जब वह *मारह में आए तो मारह का पानी पी न सके
क्यूँकि वह कड़वा था, इसीलिए उस जगह का नाम मारह पड़
गया।
24 तब वह लोग मूसा पर बड़बड़ा कर कहने लगे, कि हम क्या
पिएँ?
25 उसने ख़ुदावन्द से फ़रियाद की; ख़ुदावन्द ने उसे एक पेड़
दिखाया जिसे जब उसने पानी में डाला तो पानी मीठा हो गया।
वहीं ख़ुदावन्द ने उनके लिए एक क़ानून और शरी'अत बनाई और
वहीं यह कह कर उनकी आज़माइश की,
26 कि "अगर तू दिल लगा कर ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की बात
सुने और वही काम करे जो उसकी नज़र में भला है और उसके

---

* **15:23** कड़वा

हुक्मों को माने और उसके क़ानूनों पर 'अमल करे, तो मैं उन
बीमारियों में से जो मैंने मिस्त्रियों पर भेजीं तुझ पर कोई न भेजूँगा
क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द तेरा शाफ़ी हूँ।"
27 फिर वह एलीम में आए जहाँ पानी के बारह चश्मे और खजूर
के सत्तर दरख़्त थे, और वहीं पानी के क़रीब उन्होंने अपने ख़ेमे
लगाए।

16

[illegible]

1 फिर वह एलीम से रवाना हुए और बनी — इस्राईल की सारी
जमा'अत मुल्क — ए — मिस्र से निकलने के बाद दूसरे महीने
की पंद्रहवीं तारीख़ को सीन के वीराने में जो एलीम और सीना के
बीच है पहुँची।
2 और उस वीराने में बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत मूसा
और हारून पर बड़बड़ाने लगी।
3 और बनी — इस्राईल कहने लगे, "काश कि हम ख़ुदावन्द के
हाथ से मुल्क — ए — मिस्र में जब ही मार दिए जाते जब हम
गोश्त की हाँडियों के पास बैठ कर दिल भर कर रोटी खाते थे,
क्यूँकि तुम तो हम को इस वीराने में इसीलिए ले आए हो कि सारे
मजमे' को भूका मारो।"
4 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "मैं आसमान से तुम लोगों के
लिए रोटियाँ बरसाऊँगा, फिर यह लोग निकल निकल कर सिर्फ़
एक — एक दिन का हिस्सा हर दिन बटोर लिया करें कि इस से
मैं इनकी आज़माइश करूँगा कि वह मेरी शरी'अत पर चलेंगे या
नहीं।
5 और छटे *दिन ऐसा होगा कि जितना वह ला कर पकाएँगे
वह उससे जितना रोज़ जमा' करते हैं दूना होगा।"

* **16:5** हर हफ़्ते का छटा दिन

6 तब मूसा और हारून ने सब बनी — इस्राईल से कहा, कि
“शाम को तुम जान लोगे कि जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से
निकाल कर लाया है वह ख़ुदावन्द है।
7 और सुबह को तुम ख़ुदावन्द का जलाल देखोगे, क्यूँकि तुम
जो ख़ुदावन्द पर बड़बड़ाने लगते हो उसे वह सुनता है। और हम
कौन हैं जो तुम हम पर बड़बड़ाते हो?”
8 और मूसा ने यह भी कहा, कि “शाम को ख़ुदावन्द तुम को
खाने को गोश्त और सुबह को रोटी पेट भर के देगा; क्यूँकि तुम
जो ख़ुदावन्द पर बड़बड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हमारी क्या
हक़ीक़त है? तुम्हारा बड़बड़ाना हम पर नहीं बल्कि ख़ुदावन्द पर
है।”
9 फिर मूसा ने हारून से कहा, कि “बनी इस्राईल की सारी
जमा'अत से कह, कि तुम ख़ुदावन्द के नज़दीक आओ क्यूँकि
उसने तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया है।”
10 और जब हारून बनी — इस्राईल की जमा'अत से यह बातें
कह रहा था, तो उन्होंने वीराने की तरफ़ नज़र की और उनको
ख़ुदावन्द का जलाल बादल में दिखाई दिया।
11 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
12 “मैंने बनी — इस्राईल का बड़बड़ाना सुन लिया है, इसलिए
तू उनसे कह दे कि शाम को तुम गोश्त खाओगे और सुबह को तुम
रोटी से सेर होगे, और तुम जान लोगे कि मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।”
13 और यूँ हुआ कि शाम को इतनी बटेरें आईं कि उनकी
ख़ेमागाह को ढाँक लिया, और सुबह को ख़ेमागाह के आस पास
ओस पड़ी हुई थी।
14 और जब वह ओस जो पड़ी थी। सूख गई तो क्या देखते हैं,
कि वीराने में एक छोटी — छोटी गोल गोल चीज़ ऐसी छोटी
जैसे पाले के दाने होते हैं ज़मीन पर पड़ी है।

15 बनी — इस्राईल उसे देखकर आपस में कहने लगे, मन्ना?
क्यूँकि वह नहीं जानते थे कि वह क्या है। तब मूसा ने उनसे कहा,
यह वही रोटी है जो ख़ुदावन्द ने खाने को तुम को दी है।
16 इसलिए ख़ुदावन्द का हुक्म यह है कि तुम उसे अपने —
अपने खाने की मिक़्दार के मुवाफ़िक़ या'नी अपने — अपने
आदमियों के शुमार के मुताबिक़ हर शख़्स एक ओमर जमा' करना,
और हर शख़्स उतने ही आदमियों के लिए जमा' करे जितने उसके
ख़ेमे में हों। †
17 चुनाँचे बनी — इस्राईल ने ऐसा ही किया और किसी ने
ज़्यादा और किसी ने कम जमा' किया।
18 और जब उन्होंने उसे ओमर से नापा तो जिसने ज़्यादा जमा'
किया था कुछ ज़्यादा न पाया और उसका जिसने कम जमा' किया
था कम न हुआ। उनमें से हर एक ने अपने खाने की मिक़्दार के
मुताबिक़ जमा' किया था।
19 और मूसा ने उनसे कह दिया था कि कोई उसमें से कुछ सुबह
तक बाक़ी न छोड़े।
20 तोभी उन्होंने मूसा की बात न मानी बल्कि बा'ज़ों ने सुबह
तक कुछ रहने दिया, इसलिए उसमें कीड़े पड़ गए और वह सड़
गया; तब मूसा उनसे नाराज़ हुआ।
21 और वह हर सुबह को अपने — अपने खाने की मिक़्दार के
मुताबिक़ जमा' कर लेते थे और धूप तेज़ होते ही वह पिघल जाता
था।
22 और छठे दिन ऐसा हुआ कि जितनी रोटी वह रोज़ जमा'
करते थे उससे दूनी जमा' की या'नी हर शख़्स दो ओमर, और
जमा'अत के सब सरदारों ने आकर यह मूसा को बताया।
23 उसने उनको कहा, कि "ख़ुदावन्द का हुक्म यह है कि कल
ख़ास आराम का दिन या'नी ख़ुदावन्द का मुक़द्दस सबत है, जो

† **16:16** 16:36 भी देखें

तुम को पकाना हो पका लो और जो उबालना हो उबाल लो और
वह जो बच रहे उसे अपने लिए सुबह तक महफ़ूज़ रख्खो।"
24 चुनाँचे उन्होंने जैसा मूसा ने कहा था उसे सुबह तक रहने
दिया, और वह न तो सड़ा और न उसमें कीड़े पड़े।
25 और मूसा ने कहा कि आज उसी को खाओ क्यूँकि आज
ख़ुदावन्द का सबत है, इसलिए वह आज तुम को मैदान में नहीं
मिलेगा।
26 छ: दिन तक तुम उसे जमा' करना लेकिन सातवें दिन सबत
है, उसमें वह नहीं मिलेगा।
27 और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उनमें से कुछ आदमी मन
बटोरने गए पर उनको कुछ नहीं मिला।
28 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "तुम लोग कब तक मेरे
हुक्मों और शरी'अत के मानने से इन्कार करते रहोगे?
29 देखो, चूँकि ख़ुदावन्द ने तुम को सबत का दिन दिया है,
इसीलिए वह तुम को छठे दिन दो दिन का खाना देता है। इसलिए
तुम अपनी — अपनी जगह रहो और सातवें दिन कोई अपनी
जगह से बाहर न जाए।"
30 चुनाँचे लोगों ने सातवें दिन आराम किया।
31 और बनी — इस्राईल ने उसका नाम मन्न रख्खा, और वह
धनिये के बीज की तरह सफ़ेद और उसका मज़ा शहद के बने हुए
पूए की तरह था।
32 और मूसा ने कहा, "ख़ुदावन्द यह हुक्म देता है, कि इसका
एक ओमर भर कर अपनी नसल के लिए रख लो, ताकि वह उस
रोटी को देखें जो मैंने तुम को वीराने में खिलाई जब मैं तुम को
मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया।"
33 और मूसा ने हारून से कहा, "एक मर्तबान ले और एक ओमर
मन उसमें भर कर उसे ख़ुदावन्द के आगे रख दे, ताकि वह तुम्हारी
नसल के लिए रख्खा रहे।"

34 और जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उसी के
मुताबिक़ हारून ने उसे शहादत के सन्दूक़ के आगे रख दिया ताकि
वह रक्खा रहे। ‡
35 और बनी — इस्राईल जब तक आबाद मुल्क में न आए
या'नी चालीस बरस तक मन्न खाते रहे, अलग़रज़ जब तक वह
मुल्क — ए — कना'न की हद तक न आए मन्न खाते रहे।
36 और एक ओमर ऐफ़ा का §दसवाँ हिस्सा है।

17

[illegible]

1 फिर बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत सीन के वीराने
से चली और ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ सफ़र करती हुई
रफ़ीदीम में आकर ख़ेमा लगाया; वहाँ उन लोगों के पीने को पानी
न मिला।
2 वहाँ वह लोग मूसा से झगड़ा करके कहने लगे, कि "हम को
पीने को पानी दे।" मूसा ने उनसे कहा, कि "तुम मुझ से क्यूँ झगड़ते
हो और ख़ुदावन्द को क्यूँ आज़माते हो?"
3 वहाँ उन लोगों को बड़ी प्यास लगी, तब वह लोग मूसा पर
बड़बड़ाने लगे और कहा, कि तू हम को और हमारे बच्चों और
चौपायों को प्यासा मारने के लिए हम लोगों को क्यूँ मुल्क — ए
— मिस्र से निकाल लाया?
4 मूसा ने ख़ुदावन्द से फ़रियाद करके कहा कि मैं इन लोगों से
क्या करूँ? वह सब तो अभी मुझे संगसार करने को तैयार हैं।
5 ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे होकर चल और
बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों में से कुछ को अपने साथ ले ले और
जिस लाठी से तूने दरिया पर मारा था उसे अपने हाथ में लेता
जा।

‡ **16:34** यह अहद का संदूक़ है जिस की तफ़सील 25:10 — 12 में दी गई है
§ **16:36** 23 लीटर

6 देख, मैं तेरे आगे जाकर वहाँ होरिब की एक चट्टान पर खड़ा
रहूँगा, और तू उस चट्टान पर मारना तो उसमें से पानी निकलेगा
कि यह लोग पिएँ। चुनाँचे मूसा ने बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों के
सामने यही किया,
7 और उसने उस जगह का नाम *मस्सा और †मरीबा रख्खा;
क्यूँकि बनी — इस्राईल ने वहाँ झगड़ा किया और यह कह कर
ख़ुदावन्द का इम्तिहान किया, "ख़ुदावन्द हमारे बीच में है या
नहीं?"

[illegible]

8 तब 'अमालीक़ी आकर रफ़ीदीम में बनी — इस्राईल से लड़ने
लगे।
9 और मूसा ने यशू'‡अ से कहा, "हमारी तरफ़ के कुछ आदमी
चुन कर ले जा और 'अमालीक़ियों से लड़, और मैं कल ख़ुदा की
लाठी अपने हाथ में लिए हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा रहूँगा।"
10 फिर मूसा के हुक्म के मुताबिक़ यशू'अ 'अमालीक़ियों से
लड़ने लगा, और मूसा और हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर
चढ़ गए।
11 और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था बनी —
इस्राईल ग़ालिब रहते थे, और जब वह हाथ लटका देता था तब
'अमालीक़ी ग़ालिब होते थे।
12 और जब मूसा के हाथ भर गए तो उन्होंने एक पत्थर लेकर
मूसा के नीचे रख दिया और वह उस पर बैठ गया, और हारून और
हूर एक इधर से दूसरा उधर से उसके हाथों को संभाले रहे। तब
उसके हाथ आफ़ताब के ग़ुरूब होने तक मज़बूती से उठे रहे।
13 और यशू'अ ने 'अमालीक़ और उसके लोगों की तलवार की
धार से शिकस्त दी।

---

* **17:7** आज़माना † **17:7** बहस करना या शिकायत करना ‡ **17:9** यशो सबूत के साथ मूसा के हुकम के मातेहत फ़ौजी रहनुमा था, देखें 33:11

14 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “इस बात की यादगारी के
लिए किताब में लिख दे और यशू'अ को सुना दे कि मैं 'अमालीक़
का नाम — ओ — निशान दुनिया से बिल्कुल मिटा दूँगा।”
15 और मूसा ने एक क़ुर्बानगाह बनाई और उसका नाम
'§यहोवा निस्सी' रख्खा।
16 *और उसने कहा ख़ुदावन्द ने क़सम खाई है; इसलिए
ख़ुदावन्द 'अमालीक़ियों से नसल दर नसल जंग करता रहेगा।

18

[illegible]

1 और जो कुछ ख़ुदावन्द ने मूसा और अपनी क़ौम इस्राईल के
लिए किया और जिस तरह से ख़ुदावन्द ने इस्राईल को मिस्र से
निकाला, सब मूसा के ससुर यित्रो ने जो मिदियान का काहिन था
सुना।
2 और मूसा के ससुर यित्रो ने मूसा की बीवी सफ़्फ़ूरा को जो
मायके भेज दी गई थी,
3 और उसके दोनों बेटों को साथ लिया। इनमें से एक का
नाम मूसा ने यह कह कर *जैरसोम रख्खा था कि “मैं परदेस में
मुसाफ़िर हूँ।”
4 और दूसरे का नाम यह कह कर इली'†एलियाज़र रख्खा
था कि “मेरे बाप का ख़ुदा मेरा मददगार हुआ, और उसने मुझे
फ़िर'औन की तलवार से बचाया।”
5 और मूसा का ससुर यित्रो उसके बेटों और बीवी को लेकर
मूसा के पास उस वीराने में आया, जहाँ ख़ुदा के पहाड़ के पास
उसका ख़ेमा लगा था,

---

§ **17:15** यह्वे मेरा झंडा है * **17:16** इसलिए कि उस के हाथ खुदावंद की तख़्त की तरफ़ उठे हुए थे, सो खुदावंद जंग में अमालिकियों के ख़िलाफ़ नसल दर नसल रहने लगा था — अमालिकियों का हाथ * **18:3** ग़ैर मुल्की † **18:4** मेरा खुदा मददगार है

6 और मूसा से कहा, कि “मैं तेरा ससुर यित्रो तेरी बीवी को और
उसके साथ उसके दोनों बेटों को लेकर तेरे पास आया हूँ।”
7 तब मूसा अपने ससुर से मिलने को बाहर निकला और कोर्निश
बजा लाकर उसको चूमा, और वह एक दूसरे की ख़ैर — ओ —
'आफ़ियत पूछते हुए ख़ेमे में आए।
8 और मूसा ने अपने ससुर को बताया कि ख़ुदावन्द ने इस्राईल
की ख़ातिर फ़िर'औन के साथ क्या क्या किया, और इन लोगों पर
रास्ते में क्या — क्या मुसीबतें पड़ीं और ख़ुदावन्द उनको किस
किस तरह बचाता आया।
9 और यित्रो इन सब एहसानों की वजह से जो ख़ुदावन्द ने
इस्राईल पर किए कि उनको मिस्त्रियों के हाथ से नजात बख़्शी
बहुत ख़ुश हुआ।
10 और यित्रो ने कहा, “ख़ुदावन्द मुबारक हो, जिसने तुम को
मिस्त्रियों के हाथ और फ़िर'औन के हाथ से नजात बख़्शी, और
जिसने इस क़ौम को मिस्त्रियों के पंजे से छुड़ाया।
11 अब मैं जान गया कि ख़ुदावन्द सब मा'बूदों से बड़ा है, क्यूँकि
वह उन कामों में जो उन्होंने ग़ुरूर से किए उन पर ग़ालिब हुआ।”
12 और मूसा के ससुर यित्रो ने ख़ुदा के लिए सोख़्तनी क़ुर्बानी
और ज़बीहे चढ़ाए, और हारून और इस्राईल के सब बुज़ुर्ग मूसा
के ससुर के साथ ख़ुदा के सामने खाना खाने आए।

[illegible]

13 और दूसरे दिन मूसा लोगों की 'अदालत करने बैठा और
लोग मूसा के आसपास सुबह से शाम तक खड़े रहे।
14 और जब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो वह लोगों के लिए
करता था देख लिया तो उससे कहा, “यह क्या काम है जो तू लोगों
के लिए करता है? तू क्यूँ आप अकेला बैठता है और सब लोग
सुबह से शाम तक तेरे आस — पास खड़े रहते हैं?”

15 मूसा ने अपने ससुर से कहा, “इसकी वजह यह है कि लोग
मेरे पास ख़ुदा से मा'लूम करने के लिए आते हैं।
16 जब उनमें कुछ झगड़ा होता है तो वह मेरे पास आते हैं, और
मैं उनके बीच इन्साफ़ करता और ख़ुदा के अहकाम और शरी'अत
उनको बताता हूँ।”
17 तब मूसा के ससुर ने उससे कहा, कि “तू अच्छा काम नहीं
करता।
18 इससे तू क्या बल्कि यह लोग भी जो तेरे साथ हैं क़त'ई घुल
जाएँगे, क्यूँकि यह काम तेरे लिए बहुत भारी है।
19 तू अकेला इसे नहीं कर सकता। इसलिए अब तू मेरी बात
सुन, मैं तुझे सलाह देता हूँ और ख़ुदा तेरे साथ रहे! तू इन लोगों
के लिए ख़ुदा के सामने जाया कर और इनके सब मु'आमिले ख़ुदा
के पास पहुँचा दिया कर।
20 और तू रिवायतों और शरी'अत की बातें इनको सिखाया कर,
और जिस रास्ते इनको चलना और जो काम इनको करना हो वह
इनको बताया कर।
21 और तू इन लोगों में से ऐसे लायक़ शख़्सों को चुन ले जो
ख़ुदातरस और सच्चे और रिश्वत के दुश्मन हों, और उनको हज़ार
— हज़ार और सौ — सौ और पचास — पचास और दस — दस
आदमियों पर हाकिम बना दे;
22 कि वह हर वक़्त लोगों का इन्साफ़ किया करें और ऐसा हो कि
बड़े — बड़े मुक़द्दमें तो वह तेरे पास लाएँ और छोटी — छोटी
बातों का फ़ैसला ख़ुद ही कर दिया करें। यूँ तेरा बोझ हल्का हो
जाएगा और वह भी उसके उठाने में तेरे शरीक होंगे।
23 अगर तू यह काम करे और ख़ुदा भी तुझे ऐसा ही हुक्म दे, तो
तू सब कुछ झेल सकेगा और यह लोग भी अपनी जगह इत्मीनान
से जाएँगे।”
24 और मूसा ने अपने ससुर की बात मान कर जैसा उसने

बताया था वैसा ही किया।
25 चुनाँचे मूसा ने सब इस्राईलियों में से लायक़ शख़्सों को चुना
और उन को हज़ार — हज़ार और सौ — सौ और पचास — पचास
और दस — दस आदमियों के ऊपर हाकिम मुक़र्रर किया।
26 इसलिए यही हर वक़्त लोगों का इन्साफ़ करने लगे,
मुश्किल मुक़द्दमात तो वह मूसा के पास ले आते थे पर छोटी
— छोटी बातों का फ़ैसला ख़ुद ही कर देते थे।
27 फिर मूसा ने अपने ससुर को रुख़्सत किया और वह अपने
वतन को रवाना हो गया।

19

[illegible]

1 और बनी — इस्राईल को जिस दिन मुल्क — ए — मिस्र से
निकले तीन महीने हुए उसी दिन वह सीना के वीराने में आए।
2 और जब वह रफ़ीदीम से रवाना होकर सीना के वीरान में आए
तो वीरान ही में ख़ेमे लगा लिए, इसलिए वहीं पहाड़ के सामने
इस्राईलियों के डेरे लगे।
3 और मूसा उस पर चढ़ कर ख़ुदा के पास गया और ख़ुदावन्द
ने उसे पहाड़ पर से पुकार कर कहा, "तू या'क़ूब के ख़ान्दान से यूँ
कह और बनी — इस्राईल को यह सुना दे:
4 'तुम ने देखा कि मैंने मिस्रियों से क्या — क्या किया, और
तुम को जैसे 'उक़ाब के परों पर बैठा कर अपने पास ले आया।
5 इसलिए अब अगर तुम मेरी बात मानो और मेरे 'अहद पर
चलो तो सब क़ौमों में से तुम ही मेरी ख़ास मिल्कियत ठहरोगे
क्यूँकि सारी ज़मीन मेरी है।
6 और तुम मेरे लिए काहिनों की एक मम्लुकत और एक मुक़द्दस
क़ौम होगे, इन्हीं बातों को तू बनी — इस्राईल को सुना देना।"

7 तब मूसा ने आ कर और उन लोगों के बुज़ुर्गों को बुलाकर
उनके आमने — सामने वह सब बातें जो ख़ुदावन्द ने उसे फ़रमाई
थीं बयान कीं।
8 और सब लोगों ने मिल कर जवाब दिया, "जो कुछ ख़ुदावन्द
ने फ़रमाया है वह सब हम करेंगे।" और मूसा ने लोगों का जवाब
ख़ुदावन्द को जाकर सुनाया।
9 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "देख, मैं काले बादल में
इसलिए तेरे पास आता हूँ कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तो यह
लोग सुनें और हमेशा तेरा यक़ीन करें।" और मूसा ने लोगों की
बातें ख़ुदावन्द से बयान कीं।
10 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "लोगों के पास जा, और
आज और कल उनको पाक कर, और वह अपने कपड़े धो लें,
11 और तीसरे दिन तैयार रहें, क्यूँकि ख़ुदावन्द तीसरे दिन सब
लोगों के देखते देखते कोह-ए-सीना पर उतरेगा।
12 और तू लोगों के लिए चारों तरफ़ हद बाँध कर उनसे कह
देना, ख़बरदार तुम न तो इस पहाड़ पर चढ़ना और न इसके दामन
को छूना; जो कोई पहाड़ को छुए ज़रूर जान से मार डाला जाए।
13 मगर उसे कोई हाथ न लगाए बल्कि वह ला — कलाम
संगसार किया जाए, या तीर से छेदा जाए चाहे वह इंसान हो
चाहे हैवान, वह जीता न छोड़ा जाए; और जब नरसिंगा देर तक
फूंका जाए तो वह सब पहाड़ के पास आ जाएँ।"
14 तब मूसा पहाड़ पर से उतरकर लोगों के पास गया और उसने
लोगों को पाक साफ़ किया, और उन्होंने अपने कपड़े धो लिए।
15 और उसने लोगों से कहा कि "तीसरे दिन तैयार रहना और
'औरत के नज़दीक न जाना।"
16 जब तीसरा दिन आया तो सुबह होते ही बादल गरजने और
बिजली चमकने लगी, और पहाड़ पर काली घटा छा गई और
करना की आवाज़ बहुत बुलन्द हुई और सब लोग ख़ेमों में काँप

गए।
17 और मूसा लोगों को ख़ेमा गाह से बाहर लाया कि ख़ुदा से
मिलाए, और वह पहाड़ से नीचे आ खड़े हुए।
18 और कोह-ए-सीना ऊपर से नीचे तक धुएँ से भर गया क्यूँकि
ख़ुदावन्द शोले में होकर उस पर उतरा, और धुआँ तनूर के धुएँ की
तरह ऊपर को उठ रहा था और वह *सारा पहाड़ ज़ोर से हिल रहा
था।
19 और जब करना की आवाज़ निहायत ही बुलन्द होती गई तो
मूसा बोलने लगा और ख़ुदा ने आवाज़ के ज़रिए' से उसे जवाब
दिया।
20 और ख़ुदावन्द कोह-ए-सीना की चोटी पर उतरा, और
ख़ुदावन्द ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया; तब मूसा ऊपर
चढ़ गया।
21 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "नीचे उतर कर लोगों को
ताकीदन समझा देता ऐसा न हो कि वह देखने के लिए हदों को
तोड़ कर ख़ुदावन्द के पास आ जाएँ और उनमें से बहुत से हलाक
हो जाएँ।
22 और काहिन भी जो ख़ुदावन्द के नज़दीक आया करते हैं
अपने आपको पाक करें, कहीं ऐसा न हो कि ख़ुदावन्द उन पर टूट
पड़े।"
23 तब मूसा ने ख़ुदावन्द से कहा, "लोग कोह-ए-सीना पर नहीं
चढ़ सकते क्यूँकि तूने तो हम को ताकीदन कहा है, कि पहाड़ के
चौगिर्द हद बन्दी करके उसे पाक रखखो।"
24 ख़ुदावन्द ने उसे कहा, नीचे उतर जा, और हारून को अपने
साथ लेकर ऊपर आ; लेकिन काहिन और अवाम हदें तोड़कर
ख़ुदावन्द के पास ऊपर न आए, ऐसा न हो कि वह उन पर टूट
पड़े।
25 चुनाँचे मूसा नीचे उतर कर लोगों के पास गया और यह बातें

* **19:18** तमाम लोग शदीद तरीके से कांपने लगे थे

उन को बताई।

20

[illegible]

1 और ख़ुदा ने यह सब बातें फ़रमाई कि
2 "ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा जो तुझे मुल्क — ए — मिस्र से और
ग़ुलामी के घर से निकाल लाया मैं हूँ।
3 "मेरे सामने तू ग़ैर मा'बूदों को न मानना।
4 "तू अपने लिए कोई तराशी हुई मूरत न बनाना, न किसी
चीज़ की सूरत बनाना जो ऊपर आसमान में या नीचे ज़मीन पर
या ज़मीन के नीचे पानी में है।
5 तू उनके आगे सिज्दा न करना और न उनकी इबादत करना,
क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा ग़य्यूर ख़ुदा हूँ और जो मुझ से
'अदावत रखते हैं उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक
बाप दादा की बदकारी की सज़ा देता हूँ।
6 और हज़ारों पर जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे हुक्मों को
मानते हैं। रहम करता हूँ।
7 "तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का नाम बेफ़ाइदा न लेना, क्यूँकि
जो उसका नाम बेफ़ायदा लेता है ख़ुदावन्द उसे बेगुनाह न
ठहराएगा।
8 "याद कर कि तू सबत का दिन पाक मानना।
9 छ: दिन तक तू मेहनत करके अपना सारा काम — काज
करना।
10 लेकिन सातवाँ दिन ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा का सबत है; उसमें न
तू कोई काम करे न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा ग़ुलाम, न तेरी
लोंडी, न तेरा चौपाया, न कोई मुसाफ़िर जो तेरे यहाँ तेरे फाटकों
के अन्दर हो
11 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने छ: दिन में आसमान और ज़मीन और
समन्दर और जो कुछ उनमें है वह सब बनाया, और सातवें दिन

आराम किया; इसलिए ख़ुदावन्द ने सबत के दिन को बरकत दी
और उसे पाक ठहराया।
12 "तू अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना ताकि तेरी
उम्र उस मुल्क में जो ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझे देता है दराज़ हो।
13 "तू ख़ून न करना।
14 "तू ज़िना न करना।
15 "तू चोरी न करना।
16 "तू अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूटी गवाही न देना।
17 "तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना; तू अपने
पड़ोसी की बीवी का लालच न करना, और न उसके ग़ुलाम और
उसकी लौंडी और उसके बैल और उसके गधे का, और न अपने
पड़ोसी की किसी और चीज़ का लालच करना।"
18 और सब लोगों ने बादल गरजते और बिजली चमकते और
करना की आवाज़ होते और पहाड़ से धुआँ उठते देखा, और जब
लोगों ने यह देखा तो काँप उठे और दूर खड़े हो गए;
19 और मूसा से कहने लगे, "तू ही हम से बातें किया कर और
हम सुन लिया करेंगे; लेकिन ख़ुदा हम से बातें न करे, ऐसा न हो
कि हम मर जाएँ।"
20 मूसा ने लोगों से कहा, "तुम डरो मत, क्यूँकि ख़ुदा इसलिए
आया है कि तुम्हारा इम्तिहान करे और तुम को उसका ख़ौफ़ हो
ताकि तुम गुनाह न करो।"
21 और वह लोग दूर ही खड़े रहे और मूसा उस गहरी तारीकी
के नज़दीक गया जहाँ ख़ुदा था।

[illegible]

22 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, तू बनी — इस्राईल से यह
कहना कि 'तुम ने ख़ुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हारे साथ
बातें कीं।
23 तुम मेरे साथ किसी को शरीक न करना, या'नी चाँदी या
सोने के देवता अपने लिए न गढ़ लेना।

24 और तू मिट्टी की एक क़ुर्बानगाह मेरे लिए बनाया करना,
और उस पर अपनी भेंड़ बकरियों और गाय — बैल की सोख़्तनी
क़ुर्बानियाँ और *सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करना और जहाँ —
जहाँ मैं अपने नाम की यादगारी कराऊँगा वहाँ मैं तेरे पास आकर
तुझे बरकत दूँगा।
25 और अगर तू मेरे लिए पत्थर की क़ुर्बानगाह बनाए तो
तराशे हुए पत्थर से न बनाना, क्यूँकि अगर तू उस पर अपने
औज़ार लगाए तो तू उसे नापाक कर देगा।
26 और तू मेरी क़ुर्बानगाह पर सीढ़ियों से हरगिज़ न चढ़ना
ऐसा न हो कि तेरा नंगापन उस पर ज़ाहिर हो।

21

[illegible]

1 "वह अहकाम जो तुझे उनको बताने हैं यह हैं:
2 अगर तू कोई 'इब्रानी ग़ुलाम ख़रीदे तो वह छ: बरस ख़िदमत
करे और सातवें बरस मुफ़्त आज़ाद होकर चला जाए।
3 अगर वह अकेला आया हो तो अकेला ही चला जाए और
अगर वह शादी शुदा हो तो उसकी बीवी भी उसके साथ जाए।
4 अगर उसके आक़ा ने उसकी शादी कराया हो और उस 'औरत
के उससे बेटे और बेटियाँ हुई हों तो वह 'औरत और उसके बच्चे
उस आक़ा के होकर रहें और वह अकेला चला जाए।
5 पर अगर वह ग़ुलाम साफ़ कह दे कि मैं अपने आक़ा से और
अपनी बीवी और बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद होकर
नहीं जाऊँगा।

* **20:24** 1:सलामती की क़ुरबानी यारि फाकतीक़ुरबानी, या सेहतमंदी की क़ुर्बानी, यह सब जानवरों की क़ुरबानी को ज़ाहिर करते हैं जो जलाए नहीं जाते — इन का गोश्त काहिनों और परिस्तारों में तक़सीम करदिया जाता था — इस क़ुरबानी का मक़सद था कि किसी के साथ मेलजोल या रिफाक़त बहाल रखी जाए — इन क़ुर्बानियों का ज़िकर अह्बार के तीसरे बाब में किया गया है —

6 तो उसका आक़ा उसे ख़ुदा के पास ले जाए, और उसे दरवाज़े पर या दरवाज़े की चौखट पर लाकर सुतारी से उसका कान छेदे; तब वह हमेशा उसकी ख़िदमत करता रहे।

7 'और अगर कोई शख़्स अपनी बेटी को लौंडी होने के लिए बेच डाले तो वह ग़ुलामों की तरह चली न जाए।

8 अगर उसका आक़ा जिसने उससे निस्बत की है उससे ख़ुश न हो, तो वह उसका फ़िदिया मंज़ूर करे पर उसे यह इख़्तियार न होगा कि उसको किसी अजनबी क़ौम के हाथ बेचे, क्यूँकि उसने उससे दग़ाबाज़ी की।

9 और अगर वह उसकी निस्बत अपने बेटे से कर दे तो वह उससे बेटियों का सा सुलूक करे।

10 अगर वह दूसरी 'औरत कर ले तो भी वह उसके खाने, कपड़े और शादी के फ़र्ज़ में क़ासिर न हो।

11 और अगर वह उससे यह तीनों बातें न करे तो वह मुफ़्त बे — रुपये दिए चली जाए।

[illegible]

12 'अगर कोई किसी आदमी को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो वह क़तई' जान से मारा जाए।

13 लेकिन अगर वह शख़्स घात लगाकर न बैठा हो बल्कि ख़ुदा ही ने उसे उसके हवाले कर दिया हो, तो मैं ऐसे हाल में एक जगह बता दूँगा जहाँ वह भाग जाए।

14 और अगर कोई दीदा — ओ — दानिस्ता अपने पड़ोसी पर चढ़ आए ताकि उसे धोखे से मार डाले, तो तू उसे मेरी क़ुर्बानगाह से जुदा कर देना ताकि वह मारा जाए।

15 "और जो कोई अपने बाप या अपनी माँ को मारे वह क़तई' जान से मारा जाए।

16 "और जो कोई किसी आदमी को चुराए चाहे वह उसे बेच डाले चाहे वह उसके यहाँ मिले, वह क़तई' मार डाला जाए।

17 'और जो अपने बाप या अपनी माँ पर ला'नत करे वह क़तई'
मार डाला जाए।
18 “और अगर दो शख़्स झगड़ें और एक दूसरे को पत्थर या
मुक्का मारे और वह मरे तो नहीं पर बिस्तर पर पड़ा रहे,
19 तो जब वह उठ कर अपनी लाठी के सहारे बाहर चलने —
फिरने लगे, तब वह जिसने मारा था बरी हो जाए और सिर्फ़ उसका
हरजाना भर दे और उसका पूरा 'इलाज करा दे।
20 “और अगर कोई अपने ग़ुलाम या लौंडी को लाठी से ऐसा
मारे कि वह उसके हाथ से मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ा दी जाए।
21 लेकिन अगर वह एक — दो दिन जीता रहे तो आक़ा को
सज़ा न दी जाए, इसलिए कि वह ग़ुलाम उसका माल है।
22 “अगर लोग आपस में मार पीट करें और किसी हामिला को
ऐसी चोट पहुँचाएँ कि उसे इस्क़ात हो जाए, लेकिन और कोई
नुक़्सान न हो तो उससे जितना जुर्माना उसका शौहर तजवीज़
करे लिया जाए, और वह जिस तरह क़ाज़ी फ़ैसला करें जुर्माना
भर दे।
23 लेकिन अगर नुक़्सान हो जाए तो तू जान के बदले जान ले,
24 और आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, और हाथ के
बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव,
25 जलाने के बदले जलाना, ज़ख़्म के बदले ज़ख़्म और चोट के
बदले चोट।
26 “और अगर कोई अपने ग़ुलाम या अपनी लौंडी की आँख
पर ऐसा मारे कि वह फूट जाए, तो वह उसकी आँख के बदले उसे
आज़ाद कर दे।
27 अगर कोई अपने ग़ुलाम या अपनी लौंडी का दाँत मार कर
तोड़ दे, तो वह उसके दाँत के बदले उसे आज़ाद कर दे।
28 'अगर बैल किसी मर्द या 'औरत को ऐसा सींग मारे कि वह
मर जाए, तो वह बैल ज़रूर संगसार किया जाय और उसका गोश्त
खाया न जाए, लेकिन बैल का मालिक बेगुनाह ठहरे।

29 लेकिन अगर उस बैल की पहले से सींग मारने की 'आदत थी और उसके मालिक को बता भी दिया गया था तोभी उसने उसे बाँध कर नहीं रख्खा, और उसने किसी मर्द या'औरत को मार दिया हो तो बैल संगसार किया जाए और उसका मालिक भी मारा जाए।

30 और अगर उससे ख़ूनबहा माँगा जाए, तो उसे अपनी जान के फ़िदिया में जितना उसके लिए ठहराया जाए उतना ही देना पड़ेगा।

31 चाहे उसने किसी के बेटे को मारा हो या बेटी को, इसी हुक्म के मुवाफ़िक़ उसके साथ 'अमल किया जाए।

32 अगर बैल किसी के ग़ुलाम या लौंडी को सींग से मारे तो मालिक उस ग़ुलाम या लौंडी के मालिक को *तीस मिस्काल रुपये दे और बैल संगसार किया जाए।

33 'और अगर कोई आदमी गढ़ा खोले या खोदे और उसका मुँह न ढाँपे, और कोई बैल या गधा उसमें गिर जाए;

34 तो गढ़े का मालिक इसका नुक़्सान भर दे और उनके मालिक को क़ीमत दे और मरे हुए जानवर को ख़ुद ले ले।

35 "और अगर किसी का बैल दूसरे के बैल को ऐसी चोट पहुँचाए के वह मर जाए, तो वह जीते बैल को बेचें और उसका दाम आधा आधा आपस में बाँट लें और इस मरे हुए बैल को भी ऐसे ही बाँट लें।

36 और अगर मा'लूम हो जाए कि उस बैल की पहले से सींग मारने की 'आदत थी और उसके मालिक ने उसे बाँध कर नहीं रख्खा, तो उसे क़तई' बैल के बदले बैल देना होगा और वह मरा हुआ जानवर उसका होगा।

22

[illegible]

---

* **21:32** 342 ग्राम चांदी

1 “अगर कोई आदमी बैल या भेड़ चुरा ले और उसे ज़बह कर
दे या बेच डाले, तो वह एक बैल के बदले पाँच बैल और एक भेड़
के बदले चार भेड़े भरे।
2 अगर चोर सेंध मारते हुए पकड़ा जाए और उस पर ऐसी मार
पड़े कि वह मर जाए तो उसके ख़ून का कोई जुर्म नहीं।
3 अगर सूरज निकल चुके तो उसका ख़ून जुर्म होगा; बल्कि
उसे नुक़्सान भरना पड़ेगा और अगर उसके पास कुछ न हो तो
वह चोरी के लिए बेचा जाए।
4 अगर चोरी का माल उसके पास जीता मिले चाहे वह बैल हो
या गधा या भेड़ तो वह उसका दूना भर दे।
5 'अगर कोई आदमी किसी खेत या ताकिस्तान को खिलवा दे
और अपने जानवर को छोड़ दे कि वह दूसरे के खेत को चर लें,
तो अपने खेत या ताकिस्तान की अच्छी से अच्छी पैदावार में से
उसका मु'आवज़ा दे।
6 'अगर आग भड़के और काँटों में लग जाए और अनाज के
ढेर या खड़ी फ़सल या खेत को जला कर भस्म कर दे, तो जिस ने
आग जलाई हो वह ज़रूर मु'आवज़ा दे।
7 “अगर कोई अपने पड़ोसी की नक़द या जिन्स रखने को दे
और वह उस शख़्स के घर से चोरी हो जाए, तो अगर चोर पकड़ा
जाए तो दूना उसको भरना पड़ेगा।
8 लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो उस घर का *मालिक
ख़ुदा के आगे लाया जाए, ताकि मालूम हो जाए कि उसने अपने
पड़ोसी के माल को हाथ नहीं लगाया।
9 हर क़िस्म की ख़ियानत के मु'आमिले में चाहे बैल का चाहे
गधे या भेड़ या कपड़े या किसी और खोई हुई चीज़ का हो,
जिसकी निस्बत कोई बोल उठे कि वह चीज़ यह है तो फ़रीक़ीन
का मुक़द्दमा ख़ुदा के सामने लाया जाए और जिसे ख़ुदा मुजरिम
ठहराए वह अपने पड़ोसी को दूना भर दे।

* **22:8** सरकारी अफ़सरान

10 'अगर कोई अपने पड़ोसी के पास गधा या बैल या भेड़ या
कोई और जानवर अमानत रख्खे और वह बग़ैर किसी के देखे मर
जाए या चोट खाए या हंका दिया जाए,
11 तो उन दोनों के बीच ख़ुदावन्द की क़सम हो कि उसने अपने
हमसाये के माल को हाथ नहीं लगाया, और मालिक इसे सच
माने और दूसरा उसका मु'आवज़ा न दे।
12 लेकिन अगर वह उसके पास से चोरी हो जाए तो वह उसके
मालिक को मु'आवज़ा दे।
13 और अगर उसको किसी दरिन्दे ने फाड़ डाला हो तो वह
उसको गवाही के तौर पर पेश कर दे और फाड़े हुए का नुक़्सान न
भरे।
14 'अगर कोई शख़्स अपने पड़ोसी से कोई जानवर 'आरियत
ले और वह ज़ख़्मी हो जाए या मर जाए, और मालिक वहाँ मौजूद
न हो तो वह ज़रूर उसका मु'आवज़ा दे।
15 लेकिन अगर मालिक साथ हो तो उसका नुक़्सान न भरे और
अगर किराया की हुई चीज़ हो तो उसका नुक़्सान उसके किराये
में आ गया।

[illegible]

16 "अगर कोई आदमी किसी कुँवारी को जिसकी निस्बत न हुई
हो, फुसला कर उससे मुबाश्रत करे तो वह ज़रूर ही उसे महर देकर
उससे शादी करे।
17 लेकिन अगर उसका बाप हरगिज़ राज़ी न हो कि उस लड़की
को उसे दे, तो वह कुँवारियों के महर के मुवाफ़िक़ उसे नक़दी दे।
18 "तू जादूगरनी को जीने न देना।
19 "जो कोई किसी जानवर से मुबाश्रत करे वह क़तई' जान से
मारा जाए।
20 "जो कोई एक ख़ुदावन्द को छोड़ कर किसी और मा'बूद के
आगे क़ुर्बानी चढ़ाए वह बिल्कुल नाबूद कर दिया जाए।

21 “और तू मुसाफ़िर को न तो सताना न उस पर सितम करना,
इस लिए के तुम भी मुल्क — ए — मिस्र में मुसाफ़िर थे।
22 तुम किसी बेवा या यतीम लड़के को दुख न देना।
23 अगर तू उनको किसी तरह से दुख दे और वह मुझ से
फ़रियाद करें तो मैं ज़रूर उनकी फ़रियाद सुनूँगा।
24 और मेरा क़हर भड़केगा और मैं तुम को तलवार से मार
डालूँगा और तुम्हारी बीवियाँ बेवा और तुम्हारे बच्चे यतीम हो
जाएँगे।
25 “अगर तू मेरे लोगों में से किसी मोहताज को जो तेरे पास
रहता हो कुछ क़र्ज़ दे तो उससे क़र्ज़दार की तरह सुलूक न करना
और न उससे सूद लेना।
26 अगर तू किसी वक़्त अपने पड़ोसी के कपड़े गिरवी रख भी
ले तो सूरज के डूबने तक उसको वापस कर देना।
27 क्यूँकि सिर्फ़ वही उसका एक ओढ़ना है, उसके जिस्म का वही
लिबास है फिर वह क्या ओढ़ कर सोएगा? फिर जब वह फ़रियाद
करेगा तो मैं उसकी सुनूँगा क्यूँकि मैं मेहरबान हूँ।
28 “तू ख़ुदा को न कोसना और न अपनी क़ौम के सरदार पर
ला'नत भेजना।
29 “तू अपनी ज़्यादा पैदावार और अपने कोल्हू के रस में से
मुझे नज़्र — ओ — नियाज़ देने में देर न करना और अपने बेटों
में से पहलौठे को मुझे देना।
30 अपनी गायों और भेड़ों से भी ऐसा ही करना; सात दिन तक
तो बच्चा अपनी माँ के साथ रहे, आठवें दिन तू उसे मुझ को देना।
31 “और तू मेरे लिए पाक आदमी होना, इसी वजह से दरिन्दों
के फाड़े हुए जानवर का गोश्त जो मैदान में पड़ा हुआ मिले मत
खाना; तुम उसे कुत्तों के आगे फेंक देना।

23

[illegible]

1 तू झूठी बात ना फैलाना और नारास्त गवाह होने के लिए
शरीरों का साथ न देना।
2 बुराई करने के लिए किसी भीड़ की पैरवी न करना, और न
किसी मुक़दमें में इन्साफ़ का ख़ून कराने के लिए भीड़ का मुँह
देखकर कुछ कहना।
3 और न मुक़दमों में कंगाल की तरफ़दारी करना।
4 'अगर तेरे दुश्मन का बैल या गधा तुझे भटकता हुआ मिले,
तो तू ज़रूर उसे उसके पास फेर कर ले आना।
5 अगर तू अपने दुश्मन के गधे को बोझ के नीचे दबा हुआ देखे
और उसकी मदद करने को जी भी न चाहता हो तो भी ज़रूर उसे
मदद देना।
6 "तू अपने कंगाल लोगों के मुक़दमों में इन्साफ़ का ख़ून न
करना।
7 झूटे मु'आमिले से दूर रहना और बेगुनाहों और सादिकों को
क़त्ल न करना क्यूँकि मैं शरीर को रास्त नहीं ठहराऊँगा।
8 तू रिश्वत न लेना क्यूँकि रिश्वत बीनाओं को अन्धा कर देती
है और सादिकों की बातों को पलट देती है।
9 "परदेसी पर ज़ुल्म न करना क्यूँकि तुम परदेसी के दिल को
जानते हो, इसलिए कि तुम ख़ुद भी मुल्क — ए — मिस्र में परदेसी
थे।
10 "छः बरस तक तू अपनी ज़मीन में बोना और उसका ग़ल्ला
जमा' करना,
11 पर सातवें बरस उसे यूँ ही छोड़ देना कि पड़ती रहे, ताकि
तेरी क़ौम के ग़रीब उसे खाएँ और जो उनसे बचे उसे जंगल के
जानवर चर लें। अपने अंगूर और जैतून के बाग़ से भी ऐसा ही
करना।
12 छः दिन तक अपना काम काज करना और सातवें दिन
आराम करना, ताकि तेरे बैल और गधे को आराम मिले और तेरी
लौंडी का बेटा और परदेसी ताज़ा दम हो जाएँ।

13 और तुम सब बातों में जो मैंने तुम से कहीं हैं होशियार रहना
और दूसरे मा'बूदों का नाम तक न लेना बल्कि वह तेरे मुँह से
सुनाई भी न दे।

[illegible]

14 'तू साल भर में तीन बार मेरे लिए 'ईद मनाना।
15 ईद — ए — फ़तीर को मानना, उसमें मेरे हुक्म के मुताबिक़
अबीब महीने के मुक़र्ररा वक़्त पर सात दिन तक बेख़मीरी रोटियाँ
खाना क्यूँकि उसी महीने में तू मिस्र से निकला था और कोई मेरे
आगे ख़ाली हाथ न आए।
16 और जब तेरे खेत में जिसे तूने मेहनत से बोया पहला फल
आए तो फ़स्ल काटने की 'ईद मानना, और साल के आख़िर में
जब तू अपनी मेहनत का फल खेत से जमा' करे तो जमा' करने
की 'ईद मनाना।
17 और साल में तीनों मर्तबा तुम्हारे यहाँ के सब मर्द ख़ुदावन्द
ख़ुदा के आगे हाज़िर हुआ करें।
18 "तू ख़मीरी रोटी के साथ मेरे ज़बीहे का ख़ून न चढ़ाना और
मेरी 'ईद की चर्बी सुबह तक बाक़ी न रहने देना।
19 तू अपनी ज़मीन के पहले फलों का पहला हिस्सा ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के घर में लाना। तू हलवान को उसकी माँ के दूध में न
पकाना।

[illegible]

20 "देख, मैं एक फ़रिश्ता तेरे आगेआगे भेजता हूँ कि रास्ते में
तेरा निगहबान हो और तुझे उस जगह पहुँचा दे जिसे मैंने तैयार
किया है।
21 तुम उसके आगे होशियार रहना और उसकी बात मानना,
उसे नाराज़ न करना क्यूँकि वह तुम्हारी ख़ता नहीं बख़्शेगा
इसलिए कि *मेरा नाम उसमें रहता है।

* **23:21** मैं ने उसको अपना इख़्तियार दिया है, मेरा नाम उस पर है

22 लेकिन अगर तू सचमुच उसकी बात माने और जो मैं कहता
हूँ वह सब करे, तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुख़ालिफ़ों
का मुख़ालिफ़ हूँगा।
23 इसलिए कि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे — आगे चलेगा और
तुझे अमोरियों और हित्तियों और फ़रिज़्ज़ियों और कना'नियों
और हव्वियों यबूसियों में पहुँचा देगा और मैं उनको हलाक कर
डालूँगा।
24 तू उनके मा'बूदो को सिज्दा न करना, न उनकी इबादत
करना, न उनके से काम करना बल्कि तू †उनको बिल्कुल उलट
देना और उनके सुतूनो को टुकड़े टुकड़े कर डालना।
25 और तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की इबादत करना, तब वह
तेरी रोटी और पानी पर बरकत देगा और मैं तेरे बीच से बीमारी
को दूर कर दूँगा।
26 और तेरे मुल्क में न तो किसी के इस्क़ात होगा और न कोई
बाँझ रहेगी और मैं तेरी उम्र पूरी करूँगा।
27 मैं अपने ख़ौफ़ को तेरे आगे — आगे भेजूँगा और मैं उन
सब लोगों को जिनके पास तू जाएगा शिकस्त दूँगा, और मैं ऐसा
करूँगा कि तेरे सब दुश्मन तेरे आगे अपनी पुश्त फेर देंगे।
28 मैं तेरे आगे ज़म्बूरों को भेजूँगा, जो हव्वी और कना'नी और
हित्ती को तेरे सामने से भगा देंगे।
29 मैं उनको एक ही साल में तेरे आगे से दूर नहीं करूँगा ऐसा
न हो के ज़मीन वीरान हो जाए और जंगली दरिन्दे ज़्यादा होकर
तुझे सताने लगें।
30 बल्कि मैं थोड़ा थोड़ा करके उनको तेरे सामने से दूर करता
रहूँगा, जब तक तू शुमार में बढ़ कर मुल्क का वारिस न हो जाए।
31 मैं बहर — ए — क़ुलज़ुम से लेकर फ़िलिस्तियों के समन्दर
तक और वीरान से लेकर नहर — ए — फ़ुरात तक तेरी हदें

† **23:24** देवताओं

बाधूँगा। क्यूँकि मैं उस मुल्क के बाशिन्दों को तुम्हारे हाथ में कर
दूँगा और तू उनको अपने आगे से निकाल देगा।
32 तू उनसे या उनके मा'बूदों से कोई 'अहद न बाँधना।
33 वह तेरे मुल्क में रहने न पाएँ ऐसा न हो कि वह तुझ से मेरे
ख़िलाफ़ गुनाह कराएँ, क्यूँकि ‡अगर तू उनके मा'बूदों की इबादत
करे तो यह तेरे लिए ज़रूर फंदा हो जाएगा।"

24

[illegible]

1 और उसने मूसा से कहा, कि "तू हारून और नदब और अबीहू
और बनी इस्राईल के सत्तर बुज़ुर्गों को लेकर ख़ुदावन्द के पास
ऊपर आ, और तुम दूर ही से सिज्दा करना।
2 और मूसा अकेला ख़ुदावन्द के नज़दीक आए पर वह नज़दीक
न आएँ और लोग उसके साथ ऊपर न चढ़ें।"
3 और मूसा ने लोगों के पास जाकर ख़ुदावन्द की सब बातें और
अहकाम उनको बता दिए और सब लोगों ने हम आवाज़ होकर
जवाब दिया, "जितनी बातें ख़ुदावन्द ने फ़रमाई हैं, हम उन सब
को मानेंगे।"
4 और मूसा ने ख़ुदावन्द की सब बातें लिख लीं और सुब्ह को
सवेरे उठ कर पहाड़ के नीचे एक क़ुर्बानगाह और बनी — इस्राईल
के बारह क़बीलों के हिसाब से बारह सुतून बनाए।
5 और उसने बनी इस्राईल के जवानों को भेजा, जिन्होंने
सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ चढ़ाई और बैलों को ज़बह करके सलामती
के ज़बीहे ख़ुदावन्द के लिए पेश किया।
6 और मूसा ने आधा ख़ून लेकर तसलों में रख्खा और आधा
क़ुर्बानगाह पर छिड़क दिया।

‡ **23:33** वह जो अपने देवताओं को पूजते हैं उन के लिए एक फन्दा होगा

7 फिर उसने 'अहदनामा लिया और लोगों को पढ़ कर सुनाया।
उन्होंने कहा, कि “जो कुछ ख़ुदावन्द ने फ़रमाया है उस सब को
हम करेंगे और ताबे' रहेंगे।”
8 तब मूसा ने उस ख़ून को लेकर लोगों पर छिड़का और कहा,*
“देखो, यह उस 'अहद का ख़ून है जो ख़ुदावन्द ने इन सब बातों
के बारे में तुम्हारे साथ बाँधा है।”
9 तब मूसा और हारून और नदब और अबीहू और बनी —
इस्राईल के सत्तर बुज़ुर्ग ऊपर गए।
10 और उन्होंने इस्राईल के ख़ुदा को देखा, और उसके पाँव के
नीचे नीलम के पत्थर का चबूतरा सा था जो आसमान की तरह
शफ़्फ़ाफ़ था।
11 और उसने बनी इस्राईल के शरीफ़ों पर अपना हाथ न
बढ़ाया। फिर उन्होंने ख़ुदा को देखा और खाया और पिया।
12 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “पहाड़ पर मेरे पास आ
और वहीं ठहरा रह; और मैं तुझे पत्थर की लोहें और शरी'अत
और अहकाम जो मैंने लिखे हैं दूँगा ताकि तू उनको सिखाए।”
13 और मूसा और उसका ख़ादिम यशू'अ उठे और मूसा ख़ुदा के
पहाड़ के ऊपर गया।
14 और बुज़ुर्गों से कह गया कि “जब तक हम लौट कर तुम्हारे
पास न आ जाएँ तुम हमारे लिए यहीं ठहरे रहो, और देखो हारून
और हूर तुम्हारे साथ हैं, जिस किसी का कोई मुक़दमा हो वह उनके
पास जाए।”
15 तब मूसा पहाड़ के ऊपर गया और पहाड़ पर घटा छा गई।
16 और ख़ुदावन्द का जलाल कोह-ए-सीना पर आकर ठहरा
और छ: दिन तक घटा उस पर छाई रही और सातवें दिन उसने
घटा में से मूसा को बुलाया।

---

* **24:8** यह वह ख़ून है जो अहद को क़ायम करता है जिस को यह्वे ने तुम्हारे साथ तब बांधा जब वह तुम को यह सारी हिदायतें देता था

17 और बनी — इस्राईल की निगाह में पहाड़ की चोटी पर
ख़ुदावन्द के जलाल का मन्ज़र भसम करने वाली आग की तरह
था।
18 और मूसा घटा के बीच में होकर पहाड़ पर चढ़ गया और वह
पहाड़ पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

25

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया,
2 'बनी — इस्राईल से यह कहना कि मेरे लिए नज़्र लाएँ, और
तुम उन्हीं से मेरी नज़्र लेना जो अपने दिल की ख़ुशी से दें।
3 और जिन चीज़ों की नज़्र तुम को उनसे लेनी हैं वह यह हैं:
सोना और चाँदी और पीतल,
4 और आसमानी और अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग का कपड़ा और
बारीक कतान और बकरी की पश्म,
5 और मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें और तुख़स की खालें और
कीकर की लकड़ी,
6 और चराग़ के लिए तेल और मसह करने के तेल के लिए और
ख़ुशबूदार ख़ुशबू के लिए मसाल्हे,
7 और संग-ए-सुलेमानी और अफ़ोद और सीनाबन्द में जड़ने
के नगीने। *
8 और वह मेरे लिए एक मक़दिस बनाएँ ताकि मैं उनके बीच
सुकूनत करूँ।
9 और घर और उसके सारे सामान का जो नमूना मैं तुझे दिखाऊँ
ठीक उसी के मुताबिक़ तुम उसे बनाना।

[illegible]

* **25:7** और दोनों पत्थरों को अफ़ूद के दोनों मूढ़ोंपर लगाना (28:12) औरदूसराइन बारह पत्थरों में से एक पत्थर सरदार काहिन के सीनाबंद में बांधना (28:22) और यह अफ़ोद एक पटका था जिसे सरदार काहिन कपड़े की तरह पहिनता था — इस का ज़िक्र 28:6 — 14 में किया गया है

10 'और वह कीकर की लकड़ी का एक सन्दूक़ बनाये जिस की
लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ हो।
11 और तू उसके अन्दर और बाहर ख़ालिस सोना मंढ़ना और
उसके ऊपर चारों तरफ़ एक ज़रीन ताज बनाना।
12 और उसके लिए सोने के चार कड़े ढालकर उसके चारों पायों
में लगाना, दो कड़े एक तरफ़ हों और दो ही दूसरी तरफ़।
13 और कीकर की लकड़ी की चोबें बना कर उन पर सोना
मंढ़ना।
14 और इन चोबों को सन्दूक़ के पास के कड़ों में डालना कि
उनके सहारे सन्दूक उठ जाए।
15 चोबें सन्दूक के कड़ों के अन्दर लगी रहें और उससे अलग न
की जाएँ।
16 और तू उस शहादत नामे को जो मैं तुझे दूँगा उसी सन्दूक
में रखना।
17 "और †तू कफ़्फ़ारे का ‡सरपोश ख़ालिस सोने का बनाना
जिसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ हो।
18 और सोने के दो करूबी सरपोश के दोनों सिरों पर गढ़ कर
बनाना।
19 एक करूबी को एक सिरे पर और दूसरे करूबी को दूसरे सिरे
पर लगाना, और तुम सरपोश को और दोनों सिरों के करूबियों को
एक ही टुकड़े से बनाना।
20 और वह करूबी इस तरह ऊपर को अपने पर फैलाए हुए हों
कि सरपोश को अपने परों से ढाँक लें और उनके मुँह आमने —
सामने सरपोश की तरफ़ हों।
21 और तू उस सरपोश को उस सन्दूक के ऊपर लगाना और वह
'अहदनामा जो मैं तुझे दूँगा उसे उस सन्दूक के अन्दर रखना।
22 वहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा और उस सरपोश के ऊपर से
और करूबियों के बीच में से जो 'अहदनामे के सन्दूक़ के ऊपर होंगे,

---

† **25:17** कफ़्फ़ारे का सर्पोश ‡ **25:17** ढांकने की चीज़

उन सब अहकाम के बारे में जो मैं बनी — इस्राईल के लिए तुझे
दूँगा तुझ से बातचीत किया करूँगा।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

23 “और तू दो हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी और डेढ़ हाथ
ऊँची कीकर की लकड़ी की एक मेज़ भी बनाना।
24 और उसको ख़ालिस सोने से मंढ़ना और उसके चारों तरफ़
एक ज़रीन ताज बनाना।
25 और उसके चौगिर्द चार उंगल चौड़ी एक कंगनी लगाना और
उस कंगनी के चारों तरफ़ एक ज़रीन ताज बनाना।
26 और सोने के चार कड़े उसके लिए बना कर उन कड़ों को उन
चारों कोनों में लगाना जो चारों पायों के सामने होंगे।
27 वह कड़े कंगनी के पास ही हों, ताकि चोबों के लिए जिनके
सहारे मेज़ उठाई जाए घरों का काम दें।
28 और कीकर की लकड़ी की चोबें बना कर उनको सोने से मंढ़ना
ताकि मेज़ उन्हीं से उठाई जाए।
29 और तू उसके तबाक़ और चमचे और आफ़ताबे और उंडेलने
के बड़े — बड़े कटोरे सब ख़ालिस सोने के बनाना।
30 और तू उस मेज़ पर नज़्र की रोटियाँ हमेशा मेरे सामने
रखना।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

31 “और तू ख़ालिस सोने का एक शमा'दान बनाना। वह
शमा'दान और उसका पाया और डन्डी सब घड़ कर बनाए जाएँ
और उसकी प्यालियाँ और लट्टू और उसके फूल सब एक ही टुकड़े
के बने हों।
32 और उसके दोनों पहलुओं से छ: शाख़े बाहर को निकलती
हों, तीन शाखें शमा'दान के एक पहलू से निकलें और तीन दूसरे
पहलू से।
33 एक शाख़ में बादाम के फूल की सूरत की तीन प्यालियाँ,
एक लट्टू और एक फूल हो; और दूसरी शाख़ में भी बादाम के फूल

की सूरत की तीन प्यालियाँ, एक लट्टू और एक फूल हो; इसी तरह
शमा'दान की छहों शाख़ों में यह सब लगा हुआ हो।
34 और ख़ुद शमादान में बादाम के फूल की सूरत की चार
प्यालियाँ अपने — अपने लट्टू और फूल समेत हों।
35 और दो शाख़ों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों और
फिर दो शाख़ों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों और फिर
दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों शमा'दान की
छहों बाहर को निकली हुई शाखें ऐसी ही हों।
36 या'नी लट्टू और शाख़ें और शमा 'दान सब एक ही टुकड़े के
बने हों, यह सबका सब ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से गढ़ कर
बनाया जाए।
37 और तू उसके लिए सात चराग़ बनाना, यही चराग़ जलाए
जाएँ ताकि शमा'दान के सामने रौशनी हो।
38 और उसके गुलगीर और गुलदान ख़ालिस सोने के हों।
39 शमा'दान और यह सब बर्तन एक §किन्तार ख़ालिस सोने
के बने हुए हों।
40 और देख, तू इनको ठीक इनके नमूने के मुताबिक़ जो तुझे
पहाड़ पर दिखाया गया है बनाना।

26

[illegible]

1 "और तू घर के लिए दस पर्दे बनाना; यह बटे हुए बारीक
कतान और आसमानी क़िरमिज़ी और सुर्ख़ रंग के कपड़ों के हों
और इनमें किसी माहिर उस्ताद से करूबियों की सूरत कढ़वाना।
2 हर पर्दे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ हो
और सब पर्दे एक ही नाप के हों।

§ **25:39** 35 किलोग्राम

3 और पाँच पर्दे एक दूसरे से जोड़े जाएँ और बाक़ी पाँच पर्दे भी
एक दूसरे से जोड़े जाएँ।
4 और तू एक बड़े पर्दे के हाशिये में बटे हुए किनारे की तरफ़
जो जोड़ा जाएगा आसमानी रंग के तुकमे बनाना और ऐसे ही
दूसरे बड़े पर्दे के हाशिये में जो इसके साथ मिलाया जाएगा तुकमे
बनाना।
5 पचास तुकमे एक बड़े पर्दे में बनाना और पचास ही दूसरे बड़े
पर्दे के हाशिये में जो इसके साथ मिलाया जाएगा बनाना, और
सब तुकमे एक दूसरे के आमने सामने हों।
6 और सोने की पचास घुन्डियाँ बना कर इन पर्दों को इन्हीं
घुन्डियों से एक दूसरे के साथ जोड़ देना, तब वह घर एक हो
जाएगा।
7 'और तू बकरी के बाल के पर्दे बनाना ताकि घर के ऊपर ख़ेमा
का काम दें, ऐसे पर्दे ग्यारह हों।
8 और हर पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ हो,
वह ग्यारह हों, पर्दे एक ही नाप के हों।
9 और तू पाँच पर्दे एक जगह और छ: पर्दे एक जगह आपस में
जोड़ देना, और छटे पर्दे को ख़ेमे के सामने मोड़ कर दोहरा कर
देना।
10 और तू पचास तुकमे उस पर्दे के हाशिये में, जो बाहर से
मिलाया जाएगा और पचास ही तुकमे दूसरी तरफ़ के पर्दे के
हाशिये में जो बाहर से मिलाया जाएगा बनाना।
11 और पीतल की पचास घुन्डियाँ बना कर इन घुन्डियों को
तुकमों में पहना देना और ख़ेमे को जोड़ देना ताकि वह एक हो
जाए।
12 और ख़ेमे के पर्दों का लटका हुआ हिस्सा, या'नी आधा पर्दा
जो बचा रहेगा वह घर की पिछली तरफ़ लटका रहे।
13 और ख़ेमे के पर्दों की लम्बाई के बाक़ी हिस्से में से एक हाथ
पर्दा इधर से और एक हाथ पर्दा उधर से घर की दोनों तरफ़ इधर

और उधर लटका रहे ताकि उसे ढाँक ले।
14 और तू इस ख़ेमे के लिए मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालों का
ग़िलाफ़ और उसके ऊपर *तुख़्सों की खालों का ग़िलाफ़ बनाना।
15 "और तू घर के लिए कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाना कि
खड़े किए जाएँ।
16 हर तख़्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ हो।
17 और हर तख़्ते में दो — दो चूलें हों जो एक दूसरे से मिली
हुई हों, घर के सब तख़्ते इसी तरह के बनाना।
18 और घर के लिए जो तख़्ते तू बनाएगा उनमें से बीस तख़्ते
दाख्खिनी रुख़ के लिए हों।
19 और इन बीसों तख़्तों के नीचे चाँदी के चालीस ख़ाने बनाना
या'नी हर एक तख़्ते के नीचे उसकी दोनों चूलों के लिए दो — दो
ख़ाने।
20 और घर की दूसरी तरफ़ या'नी उत्तरी रुख़ के लिए बीस तख़्ते
हों।
21 और उनके लिए भी चाँदी के चालीस ही ख़ाने हों, या'नी एक
— एक तख़्ते के नीचे दो — दो ख़ाने।
22 और घर के पिछले हिस्से के लिए पश्चिमी रुख़ में छ: तख़्ते
बनाना।
23 और उसी पिछले हिस्से में घर के कोनों के लिए दो तख़्ते
बनाना।
24 यह नीचे से दोहरे हों और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर
एक हल्क़े में मिलाए जाएँ, दोनों तख़्ते इसी ढब के हों, यह तख़्ते
दोनों कोनों के लिए होंगे।
25 तब आठ तख़्ते और चाँदी के सोलह ख़ाने होंगे, या'नी एक
एक तख़्ते के लिए दो दो ख़ाने।
26 "और तू कीकर की लकड़ी के बेन्डे बनाना, पाँच बेन्डे घर के
एक पहलू के तख़्तों के लिए,

---

* **26:14** दर्याई घोड़े का चमड़ा

27 और पाँच बेन्डे घर के दूसरे पहलू के तख़्तों के लिए, और
पाँच बेन्डे घर के पिछले हिस्से या'नी पश्चिमी रुख़ के तख़्तों के
लिए,
28 और वस्ती बेन्डा जो तख़्तों के बीच में हो, वह ख़ेमे की एक
हद से दूसरी हद तक पहुँचे।
29 और तू तख़्तों को सोने से मंढ़ना और बेन्डों के घरों के लिए
सोने के कड़े बनाना और बेन्डों को भी सोने से मंढ़ना।
30 और तू घर को उसी नमूने के मुताबिक़ बनाना जो पहाड़ पर
दिखाया गया है।
31 "और तू आसमानी — अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़ों
और बारीक बटे हुए कतान का एक पर्दा बनाना, और उसमें किसी
माहिर उस्ताद से करूबियों की सूरत कढ़वाना।
32 और उसे सोने से मंढ़े हुए कीकर के चार सुतूनों पर लटकाना,
इनके कुन्डे सोने के हों और चाँदी के चार ख़ानों पर खड़े किए जाएँ,
33 और पर्दे को घुन्डियों के नीचे लटकाना और शहादत के
सन्दूक को वहीं पर्दे के अन्दर ले जाना और यह पर्दा तुम्हारे लिए
पाक मक़ाम को पाकतरीन मक़ाम से अलग करेगा।
34 और तू सरपोश को पाकतरीन मक़ाम में शहादत के सन्दूक़
पर रखना।
35 और मेज़ को पर्दे के बाहर रख कर शमा'दान को उसके सामने
घर की दाख्खिनी रुख़ में रखना या'नी मेज़ उत्तरी रुख़ में रखना।
36 और तू एक पर्दा ख़ेमे के दरवाज़े के लिए आसमानी अर्ग़वानी
और सुर्ख़ रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाना और
उस पर बेल बूटे कढ़े हुए हों।
37 और इस पर्दे के लिए कीकर की लकड़ी के पाँच सुतून बनाना
और उनको सोने से मंढ़ना और उनके कुन्डे सोने के हों, जिनके
लिए तू पीतल के पाँच ख़ाने ढाल कर बनाना।

27

[illegible]

1 “और तू कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह पाँच हाथ लम्बी
और पाँच हाथ चौड़ी बनाना; वह क़ुर्बानगाह चौखुन्टी और उसकी
ऊँचाई तीन हाथ हो।
2 और तू उसके लिए उसके चारों कोनों पर सींग बनाना, और
वह सींग और क़ुर्बानगाह सब एक ही टुकड़े के हों और तू उनको
पीतल से मंढ़ना।
3 और तू उसकी राख उठाने के लिए देगें और बेलचे और कटोरे
और सीखें और अन्गुठियाँ बनाना; उसके सब बर्तन पीतल के
बनाना।
4 और उसके लिए पीतल की जाली की झंजरी बनाना और उस
जाली के चारों कोनों पर पीतल के चार कड़े लगाना।
5 और उस झंजरी को क़ुर्बानगाह की चारों तरफ़ के किनारे के
नीचे इस तरह लगाना कि वह ऊँचाई में क़ुर्बानगाह की आधी दूर
तक पहुँचे।
6 और तू क़ुर्बानगाह के लिए कीकर की लकड़ी की चोबें बनाकर
उनको पीतल से मंढ़ना।
7 और तू उन चोबों को कड़ों में पहना देना कि जब कभी
क़ुर्बानगाह उठाई जाए, वह चोबें उसकी दोनों तरफ़ रहें।
8 तख़्तों से वह क़ुर्बानगाह बनाना और वह खोखली हो। वह
उसे ऐसी ही बनाएँ जैसी तुझे पहाड़ पर दिखाई गई है।

[illegible]

9 “फिर तू घर के लिए सहन बनाना, उस सहन की दाख्खिनी
तरफ़ के लिए बारीक बटे हुए कतान के पर्दे हों जो मिला कर सौ
हाथ लम्बे हों; यह सब एक ही रुख़ में हों।
10 और उनके लिए बीस सुतून बनें और सुतूनों के लिए पीतल
के बीस ही ख़ाने बनें और इन सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी
की हों।

11 इसी तरह उत्तरी रुख़ के लिए पर्दे सब मिला कर लम्बाई
में सौ हाथ हों, उनके लिए भी बीस ही सुतून और सुतूनों के लिए
बीस ही पीतल के ख़ाने बनें और सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी
की हों।
12 और सहन की पश्चिमी रुख़ की चौड़ाई में पचास हाथ के पर्दे
हों, उनके लिए दस सुतून और सुतूनों के लिए दस ही ख़ाने बनें।
13 और पूर्वी रुख़ में सहन हो।
14 और सहन के दरवाज़े के एक पहलू के लिए पन्द्रह हाथ के
पर्दे हों, जिनके लिए तीन सुतून और सुतून के लिए तीन ही ख़ाने
बनें।
15 और दूसरे पहलू के लिए भी पन्द्रह हाथ के पर्दे और तीन
सुतून और तीन ही ख़ाने बनें।
16 और सहन के दरवाज़े के लिए बीस हाथ का एक पर्दा हो जो
आसमानी, अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए
कतान का बना हुआ हो और उस पर बेल — बूटे कढ़े हों, उसके
सुतून चार और सुतूनों के ख़ाने भी चार ही हों।
17 और सहन के आस पास सब सुतून चाँदी की पट्टियों से जड़े
हुए हों और उनके कुन्डे चाँदी के और उनके ख़ाने पीतल के हों।
18 सहन की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई हर जगह पचास हाथ
और कनात की ऊँचाई पाँच हाथ ही, पर्दे बारीक बटे हुए कतान
के और सुतूनों के ख़ाने पीतल के हों।
19 घर के तरह तरह के काम के सब सामान और वहाँ की मेख़ें
और सहन की मेख़े यह सब पीतल के हों।

?????? ?? ????? ??????

20 'और तू बनी — इस्राईल को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूट
कर निकाला हुआ जैतून का ख़ालिस तेल रोशनी के लिए लाएँ
ताकि चराग़ हमेशा जलता रहे।

21 ख़ेमा-ए-इजितमा'अ में उस पर्दे के बाहर, जो शहादत के सन्दूक के सामने होगा, हारून और उसके बेटे शाम से सुबह तक शमा 'दान को ख़ुदावन्द के सामने अरास्ता रक्खें, यह दस्तूर — उल'अमल बनी — इस्राईल के लिए नसल — दर — नसल हमेशा क़ाईम रहेगा।

28

□□□□□□□ □□ □□□□□□□

1 “और तू बनी — इस्राईल में से हारून को जो तेरा भाई है,
और उसके साथ उसके बेटों को अपने नज़दीक कर लेना; ताकि हारून और उसके बेटे नदब और अबीहू और इली'एलियाज़र और ऐतामर कहानत के 'उहदे पर होकर मेरी ख़िदमत करें।
2 और तू अपने भाई हारून के लिए 'इज़्ज़त और ज़ीनत के
लिए पाक लिबास बना देना।
3 और तू उन सब रोशन ज़मीरों से जिनको मैंने हिकमत की
रूह से भरा है, कह कि वह हारून के लिए लिबास बनाएँ ताकि वह पाक होकर मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम दे।
4 और जो लिबास वह बनाएँगे यह हैं: या'नी सीना बन्द
और अफ़ूद और जुब्बा और चार ख़ाने का कुरता, और 'अमामा, और कमरबन्द, वह तेरे भाई हारून और उसके बेटों के लिए यह पाक लिबास बनाएँ, ताकि वह मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम दे।
5 और वह सोना और आसमानी और अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के
कपड़े और महीन कतान लें।

□□□□□□ □□ □□□□□□□

6 “और वह अफ़ोद सोने और आसमानी और अर्ग़वानी और
सुर्ख़ रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाएँ, जो किसी माहिर उस्ताद के हाथ का काम हो।

7 और वह इस तरह से जोड़ा जाए कि उसके दोनों मोंढों के सिरे
आपस में मिला दिए जाएँ।
8 और उसके ऊपर जो कारीगरी से बना हुआ पटका उसके
बाँधने के लिए होगा, उस पर अफ़ोद की तरह काम हो और वह
उसी कपड़े का हो, और सोने और आसमानी और अर्ग़वानी और
सुर्ख़ रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बुना हुआ हो।
9 और तू दो संग-ए-सुलेमानी लेकर उन पर इस्राईल के बेटों के
नाम कन्दा कराना।
10 उनमें से छ: के नाम तो एक पत्थर पर और बाक़ियों के छ:
नाम दूसरे पत्थर पर उनकी पैदाइश की तरतीब के मुवाफ़िक हों।
11 तू पत्थर के कन्दाकार को लगा कर अँगूठी के नक़्श की तरह
इस्राईल के बेटों के नाम उन दोनों पत्थरों पर खुदवा कर के उनको
सोने के ख़ानों में जड़वाना।
12 और दोनों पत्थरों को अफ़ोद के दोनों मोंढों पर लगाना ताकि
यह पत्थर इस्राईल के बेटों की यादगारी के लिए हों, और हारून
उनके नाम ख़ुदावन्द के सामने अपने दोनों कन्धों पर यादगारी के
लिए लगाए रहे।
13 और तू सोने के ख़ाने बनाना,
14 और ख़ालिस सोने की दो ज़ंजीरें डोरी की तरह गुन्धी हुई
बनाना और इन गुन्धी हुई ज़ंजीरों को ख़ानों में जड़ देना।

[illegible]

15 "और 'अदल का सीना बन्द किसी माहिर उस्ताद से बनवाना
और अफ़ोद की तरह सोने और आसमानी और अर्ग़वानी और सुर्ख़
रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाना।
16 वह चौखुन्टा और दोहरा हो, उसकी लम्बाई एक बालिश्त
और चौड़ाई भी एक ही बालिश्त हो।
17 और चार कतारों में उस पर जवाहर जड़ना, पहली क़तार में
याक़ूत — ए — सुर्ख़ और पुखराज और गौहर — ए — शब चराग़

हो
18 दूसरी क़तार में ज़मुर्रुद और नीलम और हीरा,
19 तीसरी कतार में लश्म और यश्म और याक़ूत,
20 चौथी क़तार में फ़ीरोज़ा और संग — ए — सुलेमानी और
ज़बरजद; यह सब सोने के ख़ानों में जड़े जाएँ।
21 यह जवाहर इस्राईल के बेटों के नामों के मुताबिक़ शुमार में
बारह हों और अँगूठी के नक़्श की तरह यह नाम जो बारह क़बीलों
के नाम होंगे, उन पर खुदवाए जाएँ।
22 और तू सीनाबन्द पर डोरी की तरह गुन्धी हुई ख़ालिस सोने
की दो ज़ंजीरें लगाना।
23 और सीनाबन्द के लिए सोने के दो हल्क़े बना कर उनको
सीनाबन्द के दोनों सिरों पर लगाना;
24 और सोने की दोनों गुन्धी हुई ज़ंजीरों को उन दोनों हल्क़ों
में जो सीनाबन्द के दोनों सिरों पर होंगे लगा देना।
25 और दोनों गुन्धी हुई ज़ंजीरों के बाक़ी दोनों सिरों को दोनों
पत्थरों के ख़ानों में जड़ कर उनको अफ़ोद के दोनों मोंढों पर सामने
की तरफ़ लगा देना।
26 और सोने के और दो हल्क़े बनाकर उनको सीनाबन्द के दोनों
सिरों के उस हाशिये में लगाना जो अफ़ोद के अन्दर की तरफ़ है।
27 फिर सोने के दो हल्क़े और बनाकर उनको अफ़ोद के दोनों
मोंढों के नीचे उसके अगले हिस्से में लगाना जहाँ अफ़ोद जोड़ा
जाएगा, ताकि वह अफ़ोद के कारीगरी से बुने हुए पटके के ऊपर
रहे।
28 और वह सीनाबन्द को लेकर उसके हल्क़ो को एक नीले फ़ीते
से बाँधे, ताकि यह सीनाबन्द अफ़ोद के कारीगरी से बने हुए पटके
के ऊपर भी रहे और अफ़ोद से भी अलग न होने पाए।
29 और हारून इस्राईल के बेटों के नाम 'अदल के सीनाबन्द
पर अपने सीने पर पाक मक़ाम में दाख़िल होने के वक़्त ख़ुदावन्द
के आमने सामने लगाए रहे, ताकि हमेशा उनकी यादगारी हुआ

करे।
30 और तू 'अदल के सीनाबन्द में *ऊरीम और तुम्मीम को
रखना और जब हारून ख़ुदावन्द के सामने जाए तो यह उसके
दिल के ऊपर हों, यूँ हारून बनी — इस्राईल के फ़ैसले को अपने
दिल के ऊपर ख़ुदावन्द के आमने सामने हमेशा लिए रहेगा।

[illegible]

31 “और तू अफ़ोद का जुब्बा बिल्कुल आसमानी रंग का
बनाना।
32 और उसका गिरेबान बीच में हो, और ज़िरह के गिरेबान की
तरह उसके गिरेबान के चारों तरफ़ बुनी हुई गोट हो ताकि वह
फटने न पाए।
33 और उसके दामन के घेर में चारों तरफ़ आसमानी, अर्ग़वानी
और सुर्ख़ रंग के अनार बनाना और उनके बीच चारों तरफ़ सोने
की घंटियाँ लगाना।
34 या'नी जुब्बे के दामन के पूरे घेर में एक सोने की घन्टी हो
और उसके बाद अनार, फिर एक सोने की घन्टी हो और उसके बाद
अनार।
35 इस जुब्बे को हारून ख़िदमत के वक़्त पहना करे, ताकि जब
— जब वह पाक मक़ाम के अन्दर ख़ुदावन्द के सामने जाए या
वहाँ से निकले तो उसकी आवाज़ सुनाई दे, कहीं ऐसा न हो कि
वह मर जाए।
36 “और तू ख़ालिस सोने का एक पत्तर बना कर उस पर अँगूठी
के नक़्श की तरह यह खुदवाना, ख़ुदावन्द के लिए मुक़द्दस।
37 और उसे नीले फ़ीते से बाँधना, ताकि वह 'अमामे पर या'नी
'अमामे के सामने के हिस्से पर हो।
38 और यह हारून की पेशानी पर रहे ताकि जो कुछ बनी —
इस्राईल अपने पाक हदियों के ज़रिए' से पाक ठहराएँ, उन पाक

* **28:30** उरिम और तुमीम के ज़रीये सरदार काहिन ख़ुदा की मर्ज़ी का फ़ैसला कर सकते थे

ठहराई हुई चीज़ों की बदी हारून उठाए और यह उसकी पेशानी
पर हमेशा रहे, ताकि वह ख़ुदावन्द के सामने मक़बूल हों।
39 “और कुरता बारीक कतान का बुना हुआ और चार ख़ाने
का हो और 'अमामा भी बारीक कतान ही का बनाना, और एक
कमरबन्द बनाना जिस पर बेल बूटे कढ़े हों।
40 “और हारून के बेटों के लिए कुरते बनाना और 'इज़्ज़त और
ज़ीनत के लिए उनके लिए कमरबन्द और पगड़ियाँ बनाना।
41 और तू यह सब अपने भाई हारून और उसके साथ उसके
बेटों को पहनाना, और उनको मसह और मख़्सूस और पाक करना
ताकि वह सब मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम दें।
42 और तू उनके लिए कतान के पाजामे बना देना ताकि उनका
बदन ढंका रहे, यह कमर से रान तक के हों।
43 और हारून और उसके बेटे जब — जब ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ में दाख़िल हों या ख़िदमत करने को पाक मक़ाम के
अन्दर क़ुर्बानगाह के नज़दीक जाएँ, उनको पहना करें कहीं ऐसा
न हो कि गुनाहगार ठहरें और मर जाएँ। यह दस्तूर — उल —
'अमल उसके और उसकी नसल के लिए हमेशा रहेगा।

29

□□□□□□□ □□ □□□□-□-□□□□□□□

1 और उनको पाक करने की ख़ातिर ताकि वह मेरे लिए काहिन
की ख़िदमत को अन्जाम दें, तू उनके लिए यह करना कि एक
बछड़ा और दो बे — 'ऐब मेंढे लेना,
2 और बेख़मीरी रोटी और बे — ख़मीर के कुल्चे जिनके साथ
तेल मिला हो और तेल की चुपड़ी हुई बे — ख़मीरी चपातियाँ
लेना। यह सब गेहूँ के मैदे की बनाना।
3 और इनको एक टोकरी में रख कर उस टोकरी को बछड़े और
दोनों मेंढों समेत आगे ले आना।

4 फिर हारून और उसके बेटों को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ
के दरवाज़े पर लाकर उनको पानी से नहलाना।
5 और वह लिबास लेकर हारून को कुरता और अफ़ोद का
जुब्बा और अफ़ोद और सीनाबन्द पहनाना, और अफ़ोद का
कारीगरी से बुना हुआ कमरबन्द उसके बांध देना।
6 और 'अमामे को उसके सिर पर रख कर उस 'अमामे के ऊपर
पाक ताज लगा देना। *
7 और मसह करने का तेल लेकर उसके सिर पर डालना और
उसको मसह करना।
8 फिर उसके बेटों को आगे लाकर उनको कुरते पहनाना।
9 और हारून और उसके बेटों के कमरबन्द लपेट कर उनके
पगड़ियाँ बाँधना ताकि कहानत के 'उहदे पर हमेशा के लिए उनका
हक़ रहे; और हारून और उसके बेटों को मख़्सूस करना।
10 "फिर तू उस बछड़े को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के सामने
लाना, और हारून और उसके बेटे अपने हाथ उस बछड़े के सिर
पर रख्खें।
11 फिर उस बछड़े को ख़ुदावन्द के आगे ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ के दरवाज़े पर ज़बह करना।
12 और उस बछड़े के ख़ून में से कुछ लेकर उसे अपनी उंगली से
क़ुर्बानगाह के सींगों पर लगाना और बाक़ी सारा ख़ून क़ुर्बानगाह
के पाये पर उंडेल देना।
13 फिर उस चर्बी को जिससे अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और जिगर
पर की झिल्ली को और दोनों गुर्दों को और उनके ऊपर की चर्बी
को लेकर सब क़ुर्बानगाह पर जलाना।
14 लेकिन उस बछड़े के गोश्त और खाल और गोबर को
ख़ेमागाह के बाहर आग से जला देना इसलिए कि यह ख़ता की
क़ुर्बानी है।
15 "फिर तू एक मेंढे को लेना, और हारून और उसके बेटे अपने

* **29:6** आयत 26:36 को देखें

हाथ उस मेंढे के सिर पर रख्खें।
16 और तू उस मेंढे को ज़बह करना और उसका ख़ून लेकर
क़ुर्बानगाह पर चारों तरफ़ छिड़कना।
17 और तू मेंढे को टुकड़े — टुकड़े काटना और उसकी अंतड़ियों
और पायों को धो कर उसके टुकड़ों और उसके सिर के साथ मिला
देना।
18 फिर इस पूरे मेंढे को क़ुर्बानगाह पर जलाना। यह ख़ुदावन्द
के लिए सोख़्तनी क़ुर्बानी है। यह राहतअंगेज़ ख़ुशबू या'नी
ख़ुदावन्द के लिए आतिशीन क़ुर्बानी है।
19 "फिर दूसरे मेंढे को लेना और हारून और उसके बेटे अपने
हाथ उस मेंढे के सिर पर रख्खें।
20 और तू इस मेंढे को ज़बह करना और उसके ख़ून में से
कुछ लेकर हारून और उसके बेटों के दहने कान की लौ पर और
दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाना, और ख़ून को
क़ुर्बानगाह पर चारों तरफ़ छिड़क देना।
21 और क़ुर्बानगाह पर के ख़ून और मसह करने के तेल में से कुछ
कुछ लेकर हारून और उसके लिबास पर, और उसके साथ उसके
बेटों और उनके लिबास पर छिड़कना, तब वह अपने लिबास
समेत और उसके साथ ही उसके बेटे अपने — अपने लिबास समेत
पाक होंगे।
22 और तू मेंढे की चर्बी और मोटी दुम को, और जिस चर्बी से
अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं उसको और जिगर पर की झिल्ली को,
और दोनों गुर्दों को और उनके ऊपर की चर्बी को और दहनी रान
को लेना; इस लिए कि यह ख़ास मेंढा है।
23 और बेख़मीरी रोटी की टोकरी में से जो ख़ुदावन्द के आगे
रखी होगी, रोटी का एक गिरदा और एक कुल्चा जिसमें तेल मिला
हुआ हो और एक चपाती लेना।
24 और इन सभों को हारून और उसके बेटों के हाथों पर रख कर

इनको ख़ुदावन्द के सामने हिलाना, ताकि यह हिलाने का हदिया
हो।
25 फिर इनको उनके हाथों से लेकर क़ुर्बानगाह पर सोख़्तनी
क़ुर्बानी के ऊपर जला देना, ताकि वह ख़ुदावन्द के आगे
राहतअंगेज़ ख़ुशबू हो; यह ख़ुदावन्द के लिए आतिशीन क़ुर्बानी
है।
26 "और तू हारून के ख़ास मेंढे का सीना लेकर उसको ख़ुदावन्द
के सामने हिलाना ताकि वह हिलाने का हदिया हो, यह तेरा
हिस्सा ठहरेगा।
27 और तू हारून और उसके बेटों के ख़ास मेंढे के हिलाने के
हदिये के सीने को जो हिलाया जा चुका है, और उठाए जाने के
हदिये की रान को जो उठाई जा चुकी है, लेकर उन दोनों को पाक
ठहराना,
28 ताकि यह सब बनी — इस्राईल की तरफ़ से हमेशा के लिए
हारून और उसके बेटों का हक़ हो क्यूँकि यह उठाए जाने का
हदिया है। इसलिए यह बनी — इस्राईल की तरफ़ से उनकी
सलामती के ज़बीहों में से उठाए जाने का हदिया होगा, जो उनकी
तरफ़ से ख़ुदावन्द के लिए उठाया गया है।
29 'और हारून के बाद उसके पाक लिबास उसकी औलाद के
लिए होंगे ताकि उन ही में वह मसह — ओ — मख़्सूस किए
जाएँ। †
30 उसका जो बेटा उसकी जगह काहिन हो वह जब पाक मक़ाम
में ख़िदमत करने को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में दाख़िल हो तो
उनको सात दिन तक पहने रहे।
31 "और तू ख़ास मेंढे को लेकर उसके गोश्त को किसी पाक
जगह में उबालना।
32 और हारून और उसके बेटे मेंढे का गोश्त और टोकरी की
रोटियाँ ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खाएँ।

† **29:29** कहानत उन के लिए अब्दी मख़सूसियत होगी

33 और जिन चीज़ों से उनको मख़्सूस और पाक करने के लिए
कफ़्फ़ारा दिया जाए वह उनको भी खाएँ, लेकिन अजनबी शख़्स
उनमें से कुछ न खाने पाए क्यूँकि यह चीजें पाक हैं।
34 और अगर मख़्सूस करने के गोश्त या रोटी में से कुछ सुबह
तक बचा रह जाए तो उस बचे हुए को आग से जला देना, वह
हरगिज़ न खाया जाए इसलिए कि वह पाक है।
35 "और तू हारून और उसके बेटों के साथ जो कुछ मैंने हुक्म
दिया है वह सब 'अमल में लाना, और सात दिन तक उनको
मख़्सूस करते रहना।
36 और तू हर रोज़ ख़ता की क़ुर्बानी के बछड़े को कफ़्फ़ारे के
लिए ज़बह करना; और तू क़ुर्बानगाह को उसके कफ़्फ़ारा देने के
वक़्त साफ़ करना, और उसे मसह करना ताकि वह पाक हो जाए,
37 तू सात दिन तक क़ुर्बानगाह के लिए कफ़्फ़ारा देना और
उसे पाक करना तो क़ुर्बानगाह निहायत पाक हो जाएगी, और
जो कुछ उससे छू जाएगा वह भी पाक ठहरेगा
38 "और तू हर रोज़ सदा एक — एक बरस के दो — दो बर्रे
क़ुर्बानगाह पर चढ़ाया करना।
39 एक बर्रा सुबह को और दूसरा बर्रा ज़वाल और ग़ुरूब के बीच
चढ़ाना।
40 और एक बर्रे के साथ ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा
देना, जिसमें हीन के चौथे हिस्से की मिक़्दार में कूट कर निकाला
हुआ तेल मिला हुआ हो और हीन के चौथे हिस्से की मिक़्दार में
तपावन के लिए मय भी देना।
41 और तू दूसरे बर्रे को ज़वाल और ग़ुरूब के बीच चढ़ाना
और उसके साथ सुबह की तरह नज़्र की क़ुर्बानी और वैसा ही
तपावन देना, जिससे वह ख़ुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ ख़ुशबू
और आतिशीन क़ुर्बानी ठहरे।
42 ऐसी ही सोख़्तनी क़ुर्बानी तुम्हारी नसल दर नसल ख़ेमा —

ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर ख़ुदावन्द के आगे हमेशा हुआ करे। वहाँ मैं तुम से मिलूँगा और तुझ से बातें करूँगा।
43 और वहीं मैं बनी इस्राईल से मुलाक़ात करूँगा और वह मक़ाम मेरे जलाल से पाक होगा।
44 और मैं ख़ेमा — ए — इजितमा'अ को और क़ुर्बानगाह को पाक करूँगा, और मैं हारून और उसके बेटों को पाक करूँगा ताकि वह मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम दें।
45 और मैं बनी — इस्राईल के बीच सुकूनत करूँगा और उनका ख़ुदा हूँगा।
46 तब वह जान लेंगे कि मैं ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा हूँ जो उनको मुल्क — ए — मिस्र से इसलिए निकाल कर लाया कि मैं उनके बीच सुकूनत करूँ। मैं ही ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा हूँ।

30

[illegible]

1 और तू ख़ुशबू जलाने के लिए कीकर की लकड़ी की एक क़ुर्बानगाह बनाना।
2 उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ हो, वह चौखुन्टी रहे और उसकी ऊँचाई दो हाथ हो और उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएँ।
3 और तू उसकी ऊपर की सतह और चारों पहलूओं को जो उसके चारों ओर हैं, और उसके सींगों को ख़ालिस सोने से मढ़ना और उसके लिए चारों ओर एक ज़रीन ताज बनाना।
4 और तू उस ताज के नीचे उसके दोनों पहलुओं में सोने के दो कड़े उसकी दोनों तरफ़ बनाना। वह उसके उठाने की चोबों के लिए ख़ानों का काम देंगे।
5 और चोबें कीकर की लकड़ी की बना कर उनको सोने से मंढना।

6 और तू उसको उस पर्दे के आगे रखना जो शहादत के सन्दूक
के सामने है; वह सरपोश के सामने रहे जो शहादत के सन्दूक के
ऊपर है, जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा* ।
7 "इसी पर हारून ख़ुशबूदार ख़ुशबू जलाया करे, हर सुबह
चराग़ों को ठीक करते वक़्त ख़ुशबू जलाएँ।
8 और ज़वाल और ग़ुरूब के बीच भी जब हारून चरागों को
रोशन करे तब ख़ुशबू जलाए, यह ख़ुशबू ख़ुदावन्द के सामने
तुम्हारी नसल — दर — नसल हमेशा जलाया जाए।
9 और तुम उस पर और तरह की ख़ुशबू न जलाना, न उस पर
सोख़्तनी क़ुर्बानी और नज़र की क़ुर्बानी चढ़ाना और कोई तपावन
भी उस पर न तपाना।
10 और हारून साल में एक बार उसके सींगों पर कफ़्फ़ारा दे।
तुम्हारी नसल — दर — नसल साल में एक बार इस ख़ता की
क़ुर्बानी के ख़ून से जो कफ़्फ़ारे के लिए हो, उसके लिए कफ़्फ़ारा
दिया जाए। यह ख़ुदावन्द के लिए सबसे ज़्यादा पाक है।"

[illegible]

11 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
12 "जब तू बनी — इस्राईल का शुमार करे तो जितनों का शुमार
हुआ हो वह फ़ी — मर्द शुमार के वक़्त अपनी जान का फ़िदिया
ख़ुदावन्द के लिए दें, ताकि जब तू उनका शुमार कर रहा हो उस
वक़्त कोई वबा उनमें फैलने न पाए।
13 हर एक जो निकल — निकल कर शुमार किए हुओं में मिलता
जाए, वह मक़दिस की मिस्क़ाल के हिसाब से नीम मिस्क़ाल दे।

---

* **30:6** तू इस क़ुर्बान्गाह को लटके हुए परदे के मद्खल पर पाक मक़ाम और पाक तरीन मक़ाम के बीच रखना, और शहादत का संदुक़और कफ्फारे का सर्पोशजो सोने का बना है उन्हें परदे के अंदर रखना, वहां मैंतुम से मिला करूँगा —

मिस्काल बीस †जीरहों की होती है। यह नीम मिस्काल ख़ुदावन्द
के लिए नज़र है।
14 जितने बीस बरस के या इससे ज़्यादा उम्र के निकल निकल
कर शुमार किए हुओं में मिलते जाएँ, उनमें से हर एक ख़ुदावन्द
की नज़्र दे।
15 जब तुम्हारी जानों के कफ़्फ़ारे के लिए ख़ुदावन्द की नज़्र दी
जाए, तो दौलतमन्द नीम मिस्काल से ज़्यादा न दे और न ग़रीब
उससे कम दे।
16 और तू बनी — इस्राईल से कफ़्फ़ारे की नक़्दी लेकर उसे
ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के काम में लगाना। ताकि वह बनी —
इस्राईल की तरफ़ से तुम्हारी जानों के कफ़्फ़ारे के लिए ख़ुदावन्द
के सामने यादगार हो।”

17 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
18 “तू धोने के लिए पीतल का एक हौज़ और पीतल ही की
उसकी कुर्सी बनाना, और उसे ख़ेमा — ए — इजितमा'अ और
क़ुर्बानगाह के बीच में रख कर उसमें पानी भर देना।
19 और हारून और उसके बेटे अपने हाथ पाँव उससे धोया करें।
20 ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में दाख़िल होते वक़्त पानी से धो
लिया करें ताकि हलाक न हों, या जब वह क़ुर्बानगाह के नज़दीक
ख़िदमत के लिए या'नी ख़ुदावन्द के लिए सोख़्तनी क़ुर्बानी पेश
करने को आएँ,
21 तो अपने — अपने हाथ पाँव धो लें ताकि मर न जाएँ। यह
उसके और उसकी औलाद के लिए नसल — दर — नसल हमेशा
की रिवायत हो।”

22 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,

† **30:13** बीस जीरे कातोल सब से कम होता था लगभग 0:6 ग्रामबीस जीरे कातोल सब से कम होता था लगभग 0:6 ग्राम

23 कि तू मक़्दिस की मिस्काल के हिसाब से ख़ास — ख़ास
ख़ुशबूदार मसाल्हे लेना; या'नी अपने आप निकला हुआ मुर्र
‡पाँच सौ मिस्काल, और उसका आधा या'नी ढाई सौ मिस्काल
दारचीनी, और ख़ुशबूदार अगर ढाई सौ मिस्काल,
24 और तज पाँच सौ मिस्काल, और जैतून का तेल एक हीन;
25 और तू उनसे मसह करने का पाक तेल बनाना, या'नी उनकी
गन्धी की हिकमत के मुताबिक़ मिला कर एक ख़ुशबूदार रौग़न
तैयार करना। यही मसह करने का पाक तेल होगा।
26 इसी से तू ख़ेमा — ए — इजितमा'अ को, और शहादत के
सन्दूक को,
27 और मेज़ को उसके बर्तन के साथ, और शमा'दान को उसके
बर्तन के साथ, और ख़ुशबू जलाने की क़ुर्बानगाह को
28 और सोख़्तनी क़ुर्बानी पेश करने के मज़बह को उसके सब
बर्तन के साथ, और हौज़ को और उसकी कुर्सी को मसह करना;
29 और तू उनको पाक करना ताकि वह निहायत पाक हो जाएँ,
जो कुछ उनसे छू जाएगा वह पाक ठहरेगा।
30 "और तू हारून और उसके बेटों को मसह करना और उनको
पाक करना ताकि वह मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम
दें।
31 और तू बनी — इस्राईल से कह देना, 'यह तेल मेरे लिए
तुम्हारी नसल दर नसल मसह करने का पाक तेल होगा।
32 यह किसी आदमी के जिस्म पर न डाला जाए, और न तुम
कोई और रौग़न इसकी तरकीब से बनाना; इस लिए के यह पाक
है और तुम्हारे नज़दीक पाक ठहरे।
33 जो कोई इसकी तरह कुछ बनाए या इसमें, से कुछ किसी
अजनबी पर लगाए वह अपनी कौम में से काट डाला जाए।"

‡ **30:23** 6 किलोग्राम

34 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "तू ख़ुशबूदार मसाल्हे मुर्र और मस्तकी और लौन और ख़ुशबूदार मसाल्हे के साथ ख़ालिस लुबान वज़्न में बराबर — बराबर लेना,

35 और नमक मिलाकर उनसे गन्धी की हिकमत के मुताबिक़ ख़ुशबूदार रोग़न की तरह साफ़ और पाक ख़ुशबू बनाना।

36 और इसमें से कुछ ख़ूब बारीक पीस कर ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में शहादत के सन्दूक़ के सामने जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा रखना। यह तुम्हारे लिए निहायत पाक ठहरे।

37 और जो ख़ुशबू तू बनाए उसकी तरकीब के मुताबिक़ तुम अपने लिए कुछ न बनाना। वह ख़ुशबू तेरे नज़दीक ख़ुदावन्द के लिए पाक हो।

38 जो कोई सूघने के लिए भी उसकी तरह कुछ बनाए वह अपनी क़ौम में से काट डाला जाए।"

31

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,

2 "देख मैंने बज़लीएल — बिन — ऊरी, बिन हूर को यहूदाह के क़बीले में से नाम लेकर बुलाया है।

3 और मैंने उसको हिकमत और समझऔर 'इल्म और हर तरह की कारिगरी में अल्लाह के रूह से मा'मूर किया है।

4 ताकि हुनरमन्दी के कामों को ईजाद करे, और सोने और चाँदी और पीतल की चीज़ें बनाए।

5 और पत्थर को जड़ने के लिए काटे और लकड़ी को तराशे, जिससे सब तरह की कारीगरी का काम हो।

6 और देख, मैंने अहलियाब को जो अख़ीसमक का बेटा और दान के क़बीले में से है उसका साथी मुक़र्रर किया है, और मैंने सब

रौशन ज़मीरो के दिल में ऐसी समझ रख्खी है कि जिन — जिन
चीज़ों का मैंने तुझ को हुक्म दिया है उन सभों को वह बना सकें।
7 या'नी ख़ेमा — ए — इजितमा'अ और शहादत का सन्दूक
और सरपोश जो उसके ऊपर रहेगा, और ख़ेमें का सब सामान,
8 और मेज़ और उसके बर्तन, और ख़ालिस सोने का शमा'दान
और उसके सब बर्तन, और ख़ुशबू जलाने की क़ुर्बानगाह,
9 और सब बर्तन, और हौज़ और उसकी कुर्सी,
10 और बेल — बूटे कढ़े हुए जामे और हारून काहिन के पाक
लिबास और उसके बेटों के लिबास, ताकि काहिन की ख़िदमत को
अन्जाम दें।
11 और मसह करने का तेल, और मक़दिस के लिए ख़ुशबूदार
मसाल्हे का ख़ुशबू; इन सभों को वह जैसा मैंने तुझे हुक्म दिया है
वैसा ही बनाएँ।"

[illegible]

12 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा,
13 कि तू बनी — इस्राईल से यह भी कह देना, 'तुम मेरे
सबतों को ज़रूर मानना, इस लिए कि यह मेरे और तुम्हारे बीच
तुम्हारी नसल दर नसल एक निशान रहेगा, ताकि तुम जानों कि
मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा पाक करने वाला हूँ।
14 "फिर तुम सबत को मानना इस लिए कि वह तुम्हारे लिए
पाक है, जो कोई उसकी बे हुरमती करे वह ज़रूर मार डाला जाए।
जो उसमें कुछ काम करे वह अपनी क़ौम में से काट डाला जाए।
15 छः दिन काम काज किया जाए लेकिन सातवाँ दिन आराम
का सबत है जो ख़ुदावन्द के लिए पाक है, जो कोई सबत के दिन
काम करे वह ज़रूर मार डाला जाए।
16 तब बनी — इस्राईल सबत को मानें और नसल दर नसल
उसे हमेशा का 'अहद' जानकर उसका लिहाज़ रख्खें।

17 मेरे और बनी — इस्राईल के बीच यह हमेशा के लिए एक
निशान रहेगा, इस लिए कि छः दिन में ख़ुदावन्द ने आसमान
और ज़मीन को पैदा किया और सातवें दिन आराम करके ताज़ा
दम हुआ'।"
18 और जब ख़ुदावन्द कोह-ए-सीना पर मूसा से बातें कर चुका
तो उसने उसे शहादत की दो तख़्तियाँ दीं, वह तख़्तियाँ पत्थर की
और ख़ुदा के हाथ की लिखी हुई थीं।

32

[illegible]

1 और जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में देर
लगाई तो वह हारून के पास जमा' होकर उससे कहने लगे, कि
"उठ, हमारे लिए *देवता बना दे जो हमारे आगे — आगे चले;
क्यूँकि हम नहीं जानते कि इस मर्द मूसा को, जो हम को मुल्क —
ए — मिस्र से निकाल कर लाया क्या हो गया?"
2 हारून ने उनसे कहा, "तुम्हारी बीवियों और लड़कों और
लड़कियों के कानों में जो सोने की बालियाँ हैं उनको उतार कर
मेरे पास ले आओ।"
3 चुनाँचे सब लोग उनके कानों से सोने की बालियाँ उतार —
उतार कर उनको हारून के पास ले आए।
4 और उसने उनको उनके हाथों से लेकर एक ढाला हुआ बछड़ा
बनाया, जिसकी सूरत छेनी से ठीक की। तब वह कहने लगे, "ऐ
इस्राईल, यही तेरा वह देवता है जो तुझ को मुल्क — ए — मिस्र
से निकाल कर लाया।"
5 यह देख कर हारून ने उसके आगे एक क़ुर्बानगाह बनाई और
उसने 'ऐलान कर दिया कि "कल ख़ुदावन्द के लिए 'ईद होगी।"

* **32:1** इस जुमले को जमा के सेगे में बदलें

6 और दूसरे दिन सुबह सवेरे उठ कर उन्होंने क़ुर्बानियाँ पेश कीं
और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेशअदा कीं फिर उन लोगों ने बैठ
कर खाया — पिया और उठकर खेल — कूद में लग गए।
7 तब ख़ुदावन्द ने मूसा को कहा, नीचे जा, क्यूँकि तेरे लोग
जिनको तू मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया बिगड़ गए हैं।
8 वह उस राह से जिसका मैंने उनको हुक्म दिया था बहुत जल्द
फिर गए हैं; उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाया और
उसे पूजा और उसके लिए क़ुर्बानी चढ़ाकर यह भी कहा, कि "ऐ
इस्राईल, यह तेरा वह देवता है जो तुझ को मुल्क — ए — मिस्र
से निकाल कर लाया'।"
9 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "मैं इस क़ौम को देखता
हूँ कि †यह बाग़ी क़ौम है।
10 इसलिए तू मुझे अब छोड़ दे कि मेरा ग़ज़ब उन पर भड़के
और मैं उनको भसम कर दूँ, और मैं तुझे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।"
11 तब मूसा ने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के आगे मिन्नत करके कहा,
ऐ ख़ुदावन्द, क्यूँ तेरा ग़ज़ब अपने लोगों पर भड़कता है जिनको
तू क़ुव्वत — ए — 'अज़ीम और ताक़तवर हाथों से मुल्क — ए
— मिस्र से निकाल कर लाया है?
12 मिस्री लोग यह क्यूँ कहने पाएँ, कि 'वह उनको बुराई के लिए
निकाल ले गया, ताकि उनको पहाड़ों में मार डाले और उनको इस
ज़मीन पर से फ़ना कर दे'? इसलिए तू अपने क़हर — ओ —
ग़ज़ब से बाज़ रह और अपने लोगों से इस बुराई करने के ख़याल
को छोड़ दे।
13 तू अपने बन्दों, अब्रहाम और इस्हाक़ और इस्राईल, को याद
कर जिनसे तूने अपनी ही क़सम खा कर यह कहा था, कि मैं
तुम्हारी नसल को आसमान के तारों की तरह बढ़ाऊँगा; और यह
सारा मुल्क जिसका मैंने ज़िक्र किया है तुम्हारी नसल को बख़्शूँगा

† **32:9** सरकश लोग

कि वह सदा उसके मालिक रहें।"

14 तब ख़ुदावन्द ने उस बुराई के ख़याल को छोड़ दिया जो
उसने कहा था कि अपने लोगों से करेगा।

15 और मूसा शहादत की दोनों तख़्तियाँ हाथ में लिए हुए उल्टा
फिरा और पहाड़ से नीचे उतरा; और वह तख़्तियाँ इधर से और
उधर से दोनों तरफ़ से लिखी हुई थीं।

16 और वह तख़्तियाँ ख़ुदा ही की बनाई हुई थीं, और जो लिखा
हुआ था वह भी ख़ुदा ही का लिखा और उन पर खुदा हुआ था।

17 और जब यशू'अ ने लोगों की ललकार की आवाज़ सुनी तो
मूसा से कहा, कि "लश्करगाह में लड़ाई का शोर हो रहा है।"

18 मूसा ने कहा, यह आवाज़ न तो फ़तहमन्दों का नारा है,
न मग़लूबों की फ़रियाद; बल्कि मुझे तो गाने वालों की आवाज़
सुनाई देती है।"

19 और लश्करगाह के नज़दीक आकर उसने वह बछड़ा और
उनका नाचना देखा। तब मूसा का ग़ज़ब भड़का, और उसने उन
तख़्तियाँ को अपने हाथों में से पटक दिया और उनकी पहाड़ के
नीचे तोड़ डाला।

20 और उसने उस बछड़े को जिसे उन्होंने बनाया था लिया,
और उसको आग में जलाया और उसे बारीक पीस कर पानी पर
छिड़का और उसी में से बनी — इस्राईल को पिलवाया।

21 और मूसा ने हारून से कहा, कि "इन लोगों ने तेरे साथ क्या
किया था जो तूने इनको इतने बड़े गुनाह में फँसा दिया?"

22 हारून ने कहा, कि "मेरे मालिक का ग़ज़ब न भड़के; तू इन
लोगों को जानता है कि गुनाह पर तुले रहते हैं,'

23 चुनाँचे इन्हीं ने मुझ से कहा, कि 'हमारे लिए देवता बना
दे जो हमारे आगे — आगे चले, क्यूँकि हम नहीं जानते कि इस
आदमी मूसा को जो हम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर
लाया क्या हो गया?

24 तब मैंने इनसे कहा, कि "जिसके यहाँ सोना हो वह उसे उतार लाए। तब इन्होंने उसे मुझ को दिया और मैंने उसे आग में डाला, तो यह बछड़ा निकल पड़ा।"

25 जब मूसा ने देखा कि लोग बेक़ाबू हो गए, क्यूँकि हारून ने उनको बेलगाम छोड़कर उनको उनके दुश्मनों के बीच ज़लील कर दिया,

26 तो मूसा ने लश्करगाह के दरवाज़े पर खड़े होकर कहा, जो — जो ख़ुदावन्द की तरफ़ है वह मेरे पास आ जाए।" तब सभी बनी लावी उसके पास जमा' हो गए।

27 और उसने उनसे कहा, कि "ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि तुम अपनी — अपनी रान से तलवार लटका कर फाटक — फाटक घूम — घूम कर सारी लश्करगाह में अपने अपने भाइयों और अपने अपने साथियों और अपने अपने पड़ोसियों को क़त्ल करते फिरो।"

28 और बनी लावी ने मूसा के कहने के मुवाफ़िक़ 'अमल किया; चुनाँचे उस दिन लोगों में से क़रीबन तीन हज़ार मर्द मारे गए।

29 और मूसा ने कहा, कि "आज ख़ुदावन्द के लिए अपने आपको मख़्सूस करो; बल्कि हर शख़्स अपने ही बेटे और अपने ही भाई के ख़िलाफ़ हो ताकि वह तुम को आज ही बरकत दे।"

[illegible]

30 और दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, कि "तुम ने बड़ा गुनाह किया; और अब मैं ख़ुदावन्द के पास ऊपर जाता हूँ शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा दे सकूं।"

31 और मूसा ख़ुदावन्द के पास लौट कर गया और कहने लगा, 'हाय, इन लोगों ने बड़ा गुनाह किया कि अपने लिए सोने का देवता बनाया।

32 और अब अगर तू इनका गुनाह मु'आफ़ कर दे तो ख़ैर वरना मेरा नाम उस किताब में से जो तूने लिखी है मिटा दे।"

33 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “जिसने मेरा गुनाह किया
है मैं उसी के नाम को अपनी किताब में से मिटाऊँगा।
34 अब तू रवाना हो और लोगों को उस जगह ले जा जो मैंने
तुझे बताई है। देख, मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे — आगे चलेगा।
लेकिन मैं अपने मुतालबे के दिन उनको उनके गुनाह की सज़ा
दूँगा।”
35 और ख़ुदावन्द ने उन लोगों में वबा भेजी, क्यूँकि जो बछड़ा
हारून ने बनाया वह उन्हीं का बनवाया हुआ था।

33

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “उन लोगों को अपने साथ
लेकर, जिनको तू मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया, यहाँ
से उस मुल्क की तरफ़ रवाना हो जिसके बारे में अब्रहाम और
इस्हाक़ और या'क़ूब से मैंने क़सम खाकर कहा था कि इसे मैं तेरी
नसल को दूँगा।
2 और मैं तेरे आगे — आगे एक फ़रिश्ते को भेजूँगा; और मैं
कना'नियों और अमोरियों और हित्तियों और फ़रिज़्ज़ियों और
हव्वियों और यबूसियों को निकाल दूँगा।
3 उस मुल्क में *दूध और शहद बहता है; और चूँकि तू बाग़ी
क़ौम है इस लिए मैं तेरे बीच में होकर न चलूँगा, कहीं ऐसा न हो
कि मैं तुझ को राह में फ़ना कर डालूँ।”
4 लोग इस दहशतनाक ख़बर को सुन कर ग़मगीन हुए और
किसी ने अपने ज़ेवर न पहने।
5 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मूसा से कह दिया था, कि “बनी —
इस्राईल से कहना, कि 'तुम †बाग़ी लोग हो, अगर मैं एक लम्हा
भी तेरे बीच में होकर चलूँ तो तुझ को फ़ना कर दूँगा। फिर तू अपने

* **33:3** अजहद ज़रखेज़ मुल्क † **33:5** सरकश लोग

ज़ेवर उतार डाल ताकि मुझे मा'लूम हो कि तेरे साथ क्या करना
चाहिए।”
6 चुनाँचे बनी — इस्राईल होरिब पहाड़ से लेकर आगेआगे
अपने ज़ेवरों को उतारे रहे।
7 और मूसा ख़ेमें को लेकर उसे लश्करगाह से बाहर बल्कि
लश्करगाह से दूर लगा लिया करता था, और उसका नाम ख़ेमा
— ए — इजितमा'अ रख्खा। और जो कोई ख़ुदावन्द का तालिब
होता वह लश्करगाह के बाहर उसी ख़ेमे की तरफ़ चला जाता था।
8 और जब मूसा बाहर ख़ेमे की तरफ़ जाता तो सब लोग उठकर
अपने — अपने ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और मूसा के पीछे
देखते रहते थे, जब तक वह ख़ेमे के अन्दर दाख़िल न हो जाता।
9 और जब मूसा ख़ेमे के अन्दर चला जाता तो बादल का सुतून
उतरकर ख़ेमे के दरवाज़े पर ठहरा रहता, और ख़ुदावन्द मूसा से
बातें करने लगता।
10 और सब लोग बादल के सुतून को ख़ेमे के दरवाज़े पर ठहरा
हुआ देखते थे, और सब लोग उठ — उठकर अपने — अपने ख़ेमे
के दरवाज़े पर से उसे सिज्दा करते थे।
11 और जैसे कोई शख़्स अपने दोस्त से बात करता है वैसे ही
ख़ुदावन्द आमने सामने होकर मूसा से बातें करता था। और मूसा
लश्करगाह को लौट आता था, लेकिन उसका ख़ादिम यशू'अ जो
नून का बेटा और जवान आदमी था ख़ेमे से बाहर नहीं निकलता
था।

[illegible]

12 और मूसा ने ख़ुदावन्द से कहा, देख, तू मुझ से कहता है,
कि “इन लोगों को ले चल, 'लेकिन मुझे यह नहीं बताया कि तू
किसको मेरे पास भेजेगा। हालाँकि तूने यह भी कहा है, कि मैं तुझ
को नाम से जानता हूँ और तुझ पर मेरे करम की नज़र है।

13 तब अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो मुझ को अपनी
राह बता, जिससे मैं तुझे पहचान लूँ ताकि मुझ पर तेरे करम की
नज़र रहे; और यह ख़याल रख कि यह क़ौम तेरी ही उम्मत है।"
14 तब उसने कहा, "मैं साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।"
15 मूसा ने कहा, अगर तू साथ न चले तो हम को यहाँ से आगे
न ले जा।
16 क्यूँकि यह क्यूँ कर मा'लूम होगा कि मुझ पर और तेरे लोगों
पर तेरे करम की नज़र है? क्या इसी तरह से नहीं कि तू हमारे
साथ — साथ चले, ताकि मैं और तेरे लोग इस ज़मीन की सब
क़ौमों से निराले ठहरें?
17 ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "मैं यह काम भी जिसका तूने
ज़िक्र किया है, करूँगा क्यूँकि तुझ पर मेरे करम की नज़र है और
मैं तुझ को नाम से पहचानता हूँ।"
18 तब वह बोल उठा, कि "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, मुझे अपना
जलाल दिखा दे।"
19 उसने कहा, "मैं अपनी सारी ‡नेकी तेरे सामने ज़ाहिर करूँगा
और तेरे ही सामने ख़ुदावन्द के नाम का 'ऐलान करूँगा; और मैं
जिस पर मेहरबान होना चाहूँ मेहरबान हूँगा, और जिस पर रहम
करना चाहूँ रहम करूँगा।"
20 और यह भी कहा, "तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्यूँकि
इंसान मुझे देख कर ज़िन्दा नहीं रहेगा।"
21 फिर ख़ुदावन्द ने कहा, "देख, मेरे क़रीब ही एक जगह है,
इसलिए तू उस चट्टान पर खड़ा हो।
22 और जब तक मेरा जलाल गुज़रता रहेगा मैं तुझे उस चट्टान
के शिगाफ़ में रख्खूँगा, और जब तक मैं निकल न जाऊँ तुझे अपने
हाथ से ढाँके रहूँगा।
23 इसके बाद मैं अपना हाथ उठा लूँगा, और तू मेरा पीछा

‡ **33:19** जलाल, भलाई

देखेगा लेकिन मेरा चेहरा दिखाई नहीं देगा।”

34

□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□

1 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा पहली तख़्तियों की तरह दो तख़्तियाँ अपने लिए तराश लेना; और मैं उन तख़्तियों पर वही बातें लिख दूँगा जो पहली तख़्तियों पर, जिनको तूने तोड़ डाला मरक़ूम थीं।

2 और सुबह तक तैयार हो जाना, और सवेरे ही कोह-ए-सीना पर आकर वहाँ पहाड़ की चोटी पर मेरे सामने हाज़िर होना।

3 लेकिन तेरे साथ कोई और आदमी न आए, और न पहाड़ पर कहीं कोई दूसरा शख़्स दिखाई दे। भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल भी पहाड़ के सामने चरने न पाएँ।

4 और मूसा ने पहली तख़्तियों की तरह पत्थर की दो तख़्तियाँ तराशीं, और सुबह सवेरे उठ कर पत्थर की दोनों तख़्तियाँ हाथ में लिए हुए ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ कोह-ए-सीना पर चढ़ गया।

5 तब ख़ुदावन्द बादल में हो कर उतरा और उसके साथ वहाँ खड़े हो कर ख़ुदावन्द के नाम का 'ऐलान किया।

6 और ख़ुदावन्द उसके आगे से यह पुकारता हुआ गुज़रा “ख़ुदावन्द, ख़ुदावन्द ख़ुदा — ए — रहीम और मेहरबान, क़हर करने में धीमा और शफ़क़त और वफ़ा में ग़नी।

7 हज़ारों पर फ़ज़ल करने वाला, गुनाह और तक़सीर और ख़ता का बख़्शने वाला; लेकिन वह मुजरिम को हरगिज़ बरी नहीं करेगा, बल्कि बाप — दादा के गुनाह की सज़ा उनके बेटों और पोतों को तीसरी और चौथी नसल तक देता है।”

8 तब मूसा ने जल्दी से सिर झुका कर सिज्दा किया,

9 और कहा, ऐ ख़ुदावन्द, “अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है, तो ऐ ख़ुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि हमारे बीच में होकर

चल, अगरचे यह *क़ौम बाग़ी है, और तू हमारे गुनाह और ख़ता
को मु'आफ़ कर और हम को अपनी मीरास कर ले।"
10 उसने कहा, देख, मैं 'अहद बाँधता हूँ, कि तेरे सब लोगों के
सामने ऐसी करामात करूँगा जो दुनिया भर में और किसी क़ौम
में कभी की नहीं गई; और वह सब लोग जिनके बीच तू रहता है,
ख़ुदावन्द के काम को देखेंगे क्यूँकि जो मैं तुम लोगों से करने को
हूँ वह हैबतनाक काम होगा।
11 आज के दिन जो हुक्म मैं तुझे देता हूँ, तू उसे याद रखना।
देख, मैं अमोरियों और कना'नियों और हित्तियों और फ़रिज़्ज़ियों
और हव्वियों और यबूसियों को तेरे आगे से निकालता हूँ।
12 इसलिए ख़बरदार रहना कि जिस मुल्क को तू जाता है उसके
बाशिन्दों से कोई 'अहद न बाँधना, ऐसा न हो कि वह तेरे लिए
फन्दा ठहरें।
13 बल्कि तुम उनकी क़ुर्बानगाहों को ढा देना, और उनके सुतूनों
के टुकड़े — टुकड़े कर देना, और उनकी †यसीरतों को काट
डालना।
14 क्यूँकि तुझ को किसी दूसरे मा'बूद की परस्तिश नहीं करनी
होगी, इसलिए कि ख़ुदावन्द जिसका नाम ग़य्यूर है वह ख़ुदा —
ए — ग़य्यूर है भी।
15 कहीं ऐसा न हो कि तू उस मुल्क के बाशिन्दों से कोई 'अहद
बाँध ले और जब वह अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार ठहरें
और अपने मा'बूदों के लिए क़ुर्बानी करें, और कोई तुझ को दा'वत
दे और तू उसकी क़ुर्बानी में से कुछ खा ले;
16 और तू उनकी बेटियाँ अपने बेटों से ब्याहे और उनकी बेटियाँ
अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार ठहरें, और तेरे बेटों को भी
अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार बना दें।
17 "तू अपने लिए ढाले हुए देवता न बना लेना।

---

* **34:9** सरकश लोग † **34:13** भलाई

18 “तू बेख़मीरी रोटी की 'ईद माना करना। मेरे हुक्म के
मुताबिक़ सात दिन तक अबीब के महीने में वक़्त — ए —
मुअय्यना पर बेख़मीरी रोटियाँ खाना; क्यूँकि माह — ए —
अबीब में तू मिस्र से निकला था।
19 सब पहलौठे मेरे हैं: और तेरे चौपायों में जो नर पहलौटे हों,
क्या बछड़े, क्या बर्रे सब मेरे होंगे।
20 लेकिन गधे के पहले बच्चे का फ़िदिया बर्रा देकर होगा,
और अगर तू फ़िदिया देना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ डालना;
लेकिन अपने सब पहलौठे बेटों का फ़िदिया ज़रूर देना। और कोई
मेरे सामने ख़ाली हाथ दिखाई न दे।
21 “छ: दिन काम काज करना लेकिन सातवें दिन आराम
करना, हल जोतने और फ़सल काटने के मौसम में भी आराम
करना।
22 और तू गेहूँ के पहले फल के काटने के वक़्त हफ़्तों की 'ईद,
और साल के आख़िर में फ़सल जमा' करने की 'ईद माना करना।
23 तेरे सब मर्द साल में तीन बार ख़ुदावन्द ख़ुदा के आगे जो
इस्राईल का ख़ुदा है, हाज़िर हों।
24 क्यूँकि मैं क़ौमों को तेरे आगे से निकाल कर तेरी सरहदों
को बढ़ा दूँगा, और जब साल में तीन बार तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
के आगे हाज़िर होगा तो कोई शख़्स तेरी ज़मीन का लालच न
करेगा।
25 “तू मेरी क़ुर्बानी का ख़ून ख़मीरी रोटी के साथ न पेश करना,
और 'ईद — ए — फ़सह की क़ुर्बानी में से कुछ सुबह तक बाक़ी
न रहने देना।
26 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का पहला फल ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के घर में लाना। हलवान को उसकी माँ के दूध में न
पकाना।”
27 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “तू यह बातें लिख; क्यूँकि
इन्हीं बातों के मतलब के मुताबिक़ मैं तुझ से और इस्राईल से

'अहद बाँधता हूँ।"

28 तब वह चालीस दिन और चालीस रात वहीं ख़ुदावन्द के
पास रहा और न रोटी खाई और न पानी पिया, और उसने उन
तख़्तियों पर उस 'अहद की बातों को या'नी दस अहकाम को
लिखा।
29 और जब मूसा शहादत की दोनों तख़्तियाँ अपने हाथ में लिए
हुए कोह-ए-सीना से उतरा आता था, तो पहाड़ से नीचे उतरते
वक़्त उसे ख़बर न थी कि ख़ुदावन्द के साथ बातें करने की वजह
से उसका चेहरा चमक रहा है।
30 और जब हारून और बनी इस्राईल ने मूसा पर नज़र की और
उसके चेहरे को चमकते देखा तो उसके नज़दीक आने से डरे।
31 तब मूसा ने उनको बुलाया; और हारून और जमा'अत के
सब सरदार उसके पास लौट आए और मूसा उन से बातें करने
लगा।
32 और बाद में सब बनी इस्राईल नज़दीक आए और उसने वह
सब अहकाम जो ख़ुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर बातें करते वक़्त
उसे दिए थे उनको बताए।
33 और जब मूसा उनसे बातें कर चुका तो उसने अपने मुँह पर
नक़ाब डाल लिया।
34 और जब मूसा ख़ुदावन्द से बातें करने के लिए उसके सामने
जाता तो बाहर निकलने के वक़्त तक नक़ाब को उतारे रहता था;
और जो हुक्म उसे मिलता था, वह उसे बाहर आकर बनी —
इस्राईल को बता देता था।
35 और बनी — इस्राईल मूसा के चेहरे को देखते थे कि उसके
चेहरे की जिल्द चमक रही है; और जब तक मूसा ख़ुदावन्द से
बातें करने न जाता तब तक अपने मुँह पर नक़ाब डाले रहता।

35

1 और मूसा ने बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत को जमा'
करके कहा, जिन बातों पर 'अमल करने का हुक्म ख़ुदावन्द ने तुम
को दिया है वह यह हैं।
2 छ: दिन काम लिए रोज़ — ए — मुक़द्दस या'नी ख़ुदावन्द
के आराम का सबत हो; जो कोई उसमें कुछ काम करे वह मार
डाला जाए।
3 तुम सबत के दिन अपने घरों में कहीं भी आग न जलाना।"

[illegible]

4 और मूसा ने बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत से कहा,
जिस बात का हुक्म ख़ुदावन्द ने दिया है वह यह है, कि
5 तुम अपने पास से ख़ुदावन्द के लिए हदिया लाया करो। जिस
किसी के दिल की ख़ुशी हो वह ख़ुदावन्द का हदिया लाये सोना
और चाँदी और पीतल,
6 और आसमानी रंग और अर्ग़वानी रंगऔर सुर्ख़ रंग के कपड़े,
और महीन कतान, और बकरियों की पश्म,
7 और *मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें और तुख़्स की खालें और
कीकर की लकड़ी,
8 और जलाने का तेल, और मसह करने के तेल के लिए और
ख़ुशबूदार ख़ुशबू के लिए मसाल्हे,
9 और अफ़ोद और सीनाबन्द के लिए सुलेमानी पत्थर और और
जड़ाऊ पत्थर।
10 "और तुम्हारे बीच जो रौशन ज़मीर हैं, वह आकर वह चीजें
बनाएँ जिनका हुक्म ख़ुदावन्द ने दिया है।
11 या'नी घर और उसका ख़ेमा और ग़िलाफ़ और उसकी
घुन्डियाँ और तख़्तें और बेंडे और उसके सुतून, और ख़ाने,
12 सन्दूक और उसकी चोबें, सरपोश और बीच का पर्दा,
13 मेज़ और उसकी चोबें और उसके सब बर्तन, और नज़्र की
रोटियाँ,

* **35:7** दर्याई घोड़े का चमड़ा

14 और रोशनी के लिए शमा 'दान और उसके बर्तन और चराग़
और जलाने का तेल;
15 और ख़ुशबू जलाने की क़ुर्बान गाह और उसकी चोबें और
मसह करने का तेल, और ख़ुशबूदार ख़ुशबू; और घर के दरवाज़े के
लिए दरवाज़े का पर्दा,
16 और सोख़्तनी क़ुर्बानी का मज़बह, और उसके लिए पीतल
की झंजरी और उसकी चोबें और उसके सब बर्तन, और हौज़ और
उसकी कुर्सी;
17 और सहन के पर्दे सुतूनों के साथ और उनके ख़ाने, और सहन
के दरवाज़े का पर्दा,
18 और घर की मेंख़े, और सहन की मेखें, और उन दोनों की
रस्सियाँ,
19 और मकदिस की खिदमत के लिए बेल बूटे कढ़े हुए लिबास,
और हारून काहिन के लिए पाक लिबास और उसके बेटों के
लिबास, ताकि वह काहिन की ख़िदमत को अन्जाम दें।"
20 तब बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत मूसा के पास से
रुख़्सत हुई।
21 और जिस जिस का जी चाहा और जिस — जिस के दिल
में रग़बत। हुई, वह ख़ेमा-ए-इजितमा'अ के काम और वहाँ की
इबादत और पाक लिबास के लिए ख़ुदावन्द का हदिया लाया।
22 और क्या मर्द, क्या 'औरत, जितनों का दिल चाहा वह सब
जुगनू बालियाँ, अँगूठियाँ और बाजूबन्द, जो सब सोने के ज़ेवर
थे लाने लगे। इस तरीके से लोगों ने ख़ुदावन्द को सोने का हदिया
दिया।
23 और जिस — जिस के पास आसमानी रंग और अर्ग़वानी रंग
और सुर्ख़ रंग के कपड़े, और महीन कतान और बकरियों की पश्म
और मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खाले और तुख़स की खालें थीं, वह
उनको ले आए।
24 जिसने चाँदी या पीतल का हदिया देना चाहा वह वैसा ही

हदिया ख़ुदावन्द के लिए लाया, और जिस किसी के पास कीकर
की लकड़ी थी वह उसी को ले आया।
25 और जितनी 'औरतें होशियार थीं उन्होंने अपने हाथों से
कात — कात कर आसमानी और अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के और
महीन कतान के तार लाकर दिए।
26 और जितनी 'औरतों के दिल हिकमत की तरफ़ मायल थे
उन्होंने बकरियों की पश्म काती।
27 और जो सरदार थे वह अफ़ोद और सीना बन्द के लिए
सुलेमानी पत्थर और जड़ाऊ पत्थर,
28 और रोशनी और मसह करने के तेल, और ख़ुशबूदार ख़ुशबू
के लिए मसाल्हे और तेल लाए।
29 यूँ बनी — इस्राईल अपनी ही ख़ुशी से ख़ुदावन्द के लिए
हदिये लाए, या'नी जिस — जिस मर्द या 'औरत का जी चाहा
कि इन कामों के लिए जिनके बनने का हुक्म ख़ुदावन्द ने मूसा के
ज़रिए' दिया था, कुछ दे वह उन्होंने दिया
30 और मूसा ने बनी — इस्राईल से कहा, देखो, ख़ुदावन्द ने
बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को जो यहूदाह के क़बीले में से है
नाम लेकर बुलाया है।
31 और उसने उसे हिकमत और समझ और अक़्ल और हर तरह
की कारीगरी के लिए रूह उल्लाह से मा'मूर किया है।
32 और कारीगरी में और सोना, चाँदी और पीतल के काम में,
33 और जड़ाऊ पत्थर और लकड़ी के तराशने में गरज़ हर एक
नादिर काम के बनाने में माहिर किया है।
34 और उसने उसे और अख़ीसमक के बेटे अहलियाब को भी
जो दान के क़बीले का है, हुनर सिखाने की क़ाबिलियत बख़्शी है।
35 और उनके दिलों में ऐसी हिकमत भर दी है जिससे वह हर
तरह की कारीगरी में माहिर हों, और कन्दाकार का और माहिर
उस्ताद का और ज़रदोज़ का जो आसमानी, अर्ग़वानी और सुर्ख

रंग के कपड़ों और महीन कतान पर गुलकारी करता है, और
जूलाहे का और हर तरह के दस्तकार का काम कर सके और
'अजीब और नादिर चीजें ईजाद करें।

36

1 फिर बज़लीएल और अहलियाब और सब रोशन ज़मीर
आदमी काम करें, जिनको ख़ुदावन्द ने हिकमत और समझ से
मालामाल किया है ताकि वह मक़दिस की' इबादत के सब काम
को ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ अन्जाम दें।
2 तब मूसा ने बज़लीएल और अहलियाब और सब रोशन
ज़मीर आदमियों को बुलाया, जिनके दिल में ख़ुदावन्द ने हिकमत
भर दी थी, या'नी जिनके दिल में तहरीक हुई कि जाकर काम करें।
3 और जो — जो हदिये बनी — इस्राईल लाए थे कि उनसे
मक़दिस की इबादत की चीज़ें बनाई जाएँ, वह सब उन्होंने मूसा
से ले लिए, और लोग फिर भी अपनी ख़ुशी से हर सुबह उसके
पास हदिये लाते रहे।
4 तब वह सब 'अक़्लमन्द कारीगर जो मक़दिस के सब काम
बना रहे थे, अपने — अपने काम को छोड़कर मूसा के पास आए,
5 और वह मूसा से कहने लगे, "कि लोग इस काम के
सरअन्जाम के लिए, जिसके बनाने का हुक्म ख़ुदावन्द ने दिया
है, ज़रूरत से बहुत ज़्यादा ले आए हैं।"
6 तब मूसा ने जो हुक्म दिया उसका 'ऐलान उन्होंने तमाम
लश्करगाह में करा दिया: "कि कोई मर्द या 'औरत अब से मक़दिस
के लिए हदिया देने की ग़र्ज़ से कुछ और काम न बनाएँ।" यूँ वह
लोग और लाने से रोक दिए गए।
7 क्यूँकि जो सामान उनके पास पहुँच चुका था वह सारे काम
को तैयार करने के लिए न सिर्फ़ काफ़ी बल्कि ज़्यादा था।

8 और काम करनेवालों में जितने रोशन ज़मीर थे, उन्होंने
मक़दिस के लिए बारीक बटे हुए कतान के और आसमानी और
अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़ों के दस पर्दे बनाए, जिन पर
माहिर उस्ताद के हाथ के कढ़े हुए करूबी थे।
9 हर पर्दे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ थी
और वह सब पर्दे एक ही नाप के थे।
10 और उसने पाँच पर्दे एक दूसरे के साथ जोड़ दिए और दूसरे
पाँच पर्दे भी एक दूसरे के साथ जोड़ दिए।
11 और उसने एक बड़े पर्दे के हाशिये में उसके मिलाने के रुख़
पर आसमानी रंग के तुकमे बनाए। ऐसे ही तुकमे उसने दूसरे बड़े
पर्दे की उस तरफ़ के हाशिये में बनाए जिधर मिलाने का रुख़ था।
12 पचास तुकमे उसने एक पर्दे में और पचास ही दूसरे पर्दे के
हाशिये में उसके मिलाने के रुख़ पर बनाए, यह तुकमे आपस में
एक दूसरे के सामने थे।
13 और उसने सोने की पचास घुन्डियाँ बनाई और उन्हीं
घुन्डियों से पर्दों को आपस में ऐसा जोड़ दिया कि घर मिलकर
एक हो गया।
14 और बकरी के बालों से ग्यारह पर्दे घर के ऊपर के ख़ेमे के
लिए बनाए।
15 हर पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ थी, और
वह ग्यारह पर्दे एक ही नाप के थे।
16 और उसने पाँच पर्दे तो एक साथ जोड़े और छ: एक साथ।
17 और पचास तुकमे उन जुड़े हुए पर्दों में से किनारे के पर्दे के
हाशिये में बनाए और पचास ही तुकमे उन दूसरे जुड़े हुए पर्दों में
से किनारे के पर्दे के हाशिये में बनाए।
18 और उसने पीतल की पचास घुन्डियाँ भी बनाई ताकि उनसे
उस ख़ेमे को ऐसा जोड़ दे कि वह एक हो जाए।

19 और ख़ेमे के लिए एक ग़िलाफ़ *मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालों
का और उसके लिए ग़िलाफ़ तुख़स की खालों का बनाया।
20 और उसने घर के लिए कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाए कि
खड़े किए जाएँ।
21 हर तख़्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी।
22 और उसने एक एक तख़्ते के लिए दो — दो जुड़ी हुई चूलें
बनाई, घर के सब तख़्तों की चूलें ऐसी ही बनाई।
23 और घर के लिए जो तख़्ते बने थे उनमें से बीस तख़्ते
दाख्खिनी रुख़ में लगाए।
24 और उसने उन बीसों तख़्तों के नीचे चाँदी के चालीस ख़ाने
बनाए, या'नी हर तख़्ते की दोनों चूलों के लिए दो — दो ख़ाने।
25 और घर की दूसरी तरफ़ या'नी उत्तरी रुख़ के लिए बीस तख़्ते
बनाए।
26 और उनके लिए भी चाँदी के चालीस ही ख़ाने बनाए, या'नी
एक — एक तख़्ते के नीचे दो — दो ख़ाने।
27 और घर के पिछले हिस्से या'नी पश्चिमी रुख़ के लिए छ:
तख़्ते बनाए।
28 और दो तख़्ते घर के दोनों कोनों के लिए पिछले हिस्से में
बनाए।
29 यह नीचे से दोहरे थे और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर
एक ही हल्के में मिला दिए गए थे, उसने दोनों कोनों के दोनों तख़्ते
इसी ढब के बनाए।
30 वह, आठ तख़्ते थे और उनके लिए चाँदी के सोलह ख़ाने,
या'नी एक — एक तख़्ते के लिए दो — दो ख़ाने।
31 और उसने कीकर की लकड़ी के बेन्डे बनाये पाँच बेन्डे घर
के एक तरफ़ के तख़्तों के लिए,
32 और पाँच बेन्डे घर के दूसरी तरफ़ के तख़्तों के लिए, और
पाँच बेन्डे घर के पिछले हिस्से में पश्चिम की तरफ़ के तख़्तों के

* **36:19** दर्याई घोड़े का चमड़ा

लिए बनाए।
33 और उसने वस्ती बेन्डे को ऐसा बनाया कि तख़्तों के बीच में
से होकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचे।
34 और तख़्तों को सोने से मंढ़ा और सोने के कड़े बनाए, ताकि
बेन्डों के लिए ख़ानों का काम दें और बेन्डों को सोने से मंढ़ा।
35 और उसने बीच का पर्दा आसमानी, अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग
के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाया जिस पर माहिर
उस्ताद के हाथ के करूबी कढ़े हुए थे।
36 और उसके लिए कीकर के चार सुतून बनाए और उनको सोने
से मंढ़ा, उनके कुन्डे सोने के थे और उसने उनके लिए चाँदी के चार
ख़ाने ढाल कर बनाए।
37 और उसने ख़ेमे के दरवाज़े के लिए एक पर्दा आसमानी,
अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का
बनाया, वह बेल — बूटेदार था।
38 और उसके लिए पाँच सुतून कुन्डों समेत बनाए और उनके
सिरों और पट्टियों को सोने से मंढ़ा, उनके लिए जो पाँच ख़ाने थे
वह पीतल के बने हुए थे।

37

??? ?? ?????? ?? ?????

1 और बज़लीएल ने वह सन्दूक कीकर की लकड़ी का बनाया,
उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़
हाथ थी।
2 और उसने उसके अन्दर और बाहर ख़ालिस सोना मंढा और
उसके लिए चारों तरफ़ एक सोने का ताज बनाया।
3 और उसने उसके चारों पायों पर लगाने को सोने के चार कड़े
ढाले, दो कड़े तो उसकी एक तरफ़ और दो दूसरी तरफ़ थे।
4 और उसने कीकर की लकड़ी की चोबें बनाकर उनको सोने से
मंढ़ा।

5 और उन चोबों को सन्दूक के दोनों तरफ़ के कड़ों में डाला ताकि सन्दूक उठाया जाए।
6 और उसने *सरपोश ख़ालिस सोने का बनाया, उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी।
7 और उसने सरपोश के दोनों सिरों पर सोने के दो करूबी गढ़ कर बनाए।
8 एक करूबी को उसने एक सिरे पर रख्खा और दूसरे को दूसरे सिरे पर, दोनों सिरों के करूबी और सरपोश एक ही टुकड़े से बने थे।
9 और करूबियों के बाज़ू ऊपर से फैले हुए थे और उनके बाज़ूओं से सरपोश ढका हुआ था, और उन करूबियों के चेहरे सरपोश की तरफ़ और एक दूसरे के सामने थे।

[illegible]

10 और उसने वह मेज़ कीकर की लकड़ी की बनाई, उसकी लम्बाई दो हाथ और चौड़ाई एक हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी।
11 और उसने उसको ख़ालिस सोने से मंढ़ा और उसके लिए चारों तरफ़ सोने का एक ताज बनाया।
12 और उसने एक कंगनी चार उंगल चौड़ी उसके चारों तरफ़ रख्खी और उस कंगनी पर चारों तरफ़ सोने का एक ताज बनाया।
13 और उसने उसके लिए सोने के चार कड़े ढाल कर उनको उसके चारों पायों के चारों कोनों में लगाया।
14 यह कड़े कंगनी के पास थे, ताकि मेज़ उठाने की चोबों के ख़ानों का काम दें।
15 और उसने मेज़ उठाने की वह चोबें कीकर की लकड़ी की बनाई और उनको सोने से मंढ़ा।
16 और उसने मेज़ पर के सब बर्तन, या'नी उसके तबाक़ और चमचे और बड़े — बड़े प्याले और उंडेलने के लोटे ख़ालिस सोने के बनाए।

* **37:6** कफ्फारे का सर्पोश, ढक्कन

[illegible]

17 और उसने शमा'दान ख़ालिस सोने का बनाया। वह
शमा'दान और उसका पायाऔर उसकी डन्डी गढ़े हुए थे। यह सब
और उसकी प्यालियाँ और लट्टू और फूल एक ही टुकड़े के बने हुए
थे।
18 और छः शाखें उसकी दोनों तरफ़ से निकली हुई थीं।
शमा'दान की तीन शाख़ें तो उसकी एक तरफ़ से और तीन शाख़
उसकी दूसरी तरफ़ से।
19 और एक शाख़ में बादाम के फूल की शक्ल की तीन प्यालियाँ
और एक लट्टू और एक फूल था, और दूसरी शाख़ में भी बादाम
के फूल की शक्ल की तीन प्यालियाँ और एक लट्टू और एक फूल
था। ग़र्ज़ उस शमा'दान की छहों शाखों में सब कुछ ऐसा ही था।
20 और ख़ुद शमा'दान में बादाम के फूल की शक्ल की चार
प्यालियाँ अपने — अपने लट्टू और फूल समेत बनी थीं।
21 और शमा'दान की छहों निकली हुई शाख़ों में से हर दो —
दो शाखें और एक — एक लट्टू एक ही टुकड़े के थे।
22 उनके लट्टू और उनकी शाख़ें सब एक ही टुकड़े के थे। सारा
शमा'दान ख़ालिस सोने का और एक ही टुकड़े का गढ़ा हुआ था।
23 और उसने उसके लिए सात चराग़ बनाए और उसके गुलगीर
और गुलदान ख़ालिस सोने के थे।
24 और उसने उसको और उसके सब बर्तन को †एक किन्तार
ख़ालिस सोने से बनाया

[illegible]

25 और उसने ख़ुशबू जलाने की क़ुर्बानगाह कीकर की लकड़ी
की बनाई, उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ थी।

† **37:24** 35 किलोग्राम

वह चौकोर थी और उसकी ऊँचाई दो हाथ थी और वह और उसके
सींग एक ही टुकड़े के थे।
26 और उसने उसके ऊपर की सतह और चारों तरफ़ की अतराफ़
और सींगों को ख़ालिस सोने से मढ़ा और उसके लिए सोने का एक
ताज चारों तरफ़ बनाया।
27 और उसने उसकी दोनों तरफ़ के दोनों पहलुओं में ताज के
नीचे सोने के दो कड़े बनाए जो उसके उठाने की चोबों के लिए
ख़ानों का काम दें।
28 और चोबें कीकर की लकड़ी की बनाई और उनको सोने से
मढ़ा।
29 और उसने मसह करने का पाक तेल और ख़ुशबूदार मसाल्हे
का ख़ालिस ख़ुशबू गन्धी की हिकमत के मुताबिक़ तैयार किया।

38

[illegible]

1 और उसने सोख़्तनी क़ुर्बानी का मज़बह कीकर की लकड़ी का
बनाया; उसकी लम्बाई पाँच हाथ और चौड़ाई पाँच हाथ थी, वह
चौकोर था और उसकी ऊँचाई तीन हाथ थी।
2 और उसने उसके चारों कोनों पर सींग बनाए सींग और वह
मज़बह दोनों एक ही टुकड़े के थे, और उसने उसको पीतल से मंढ़ा।
3 और उसने मज़बह के सब बर्तन, या'नी देगें और बेलचे और
कटोरे और सीहें और अंगूठियाँ बनायीं उसके सब बर्तन पीतल के
थे।
4 और उसने मज़बह के लिए उसकी चारों तरफ़ किनारे के नीचे
पीतल की जाली की झंजरी इस तरह लगाई कि वह उसकी आधी
दूर तक पहुँचती थी।
5 और उसने पीतल की झंजरी के चारों कोनों में लगाने के लिए
चार कड़े ढाले ताकि चोबों के लिए ख़ानों का काम दें।
6 और चोबें कीकर की लकड़ी की बनाकर उनको पीतल से मंढ़ा।

7 और उसने वह चोबें मज़बह की दोनों तरफ़ के कड़ों में उसके
उठाने के लिए डाल दीं। वह खोखला तख़्तों का बना हुआ था।

[illegible]

8 और जो ख़िदमत गुज़ार 'औरतें ख़ेमा — ए — इजितमा'अ
के दरवाज़े पर ख़िदमत करती थीं, उनके आईनों के पीतल से उसने
पीतल का हौज़ और पीतल ही की उसकी कुर्सी बनाई।

[illegible]

9 फिर उसने सहन बनाया, और दख्खिनी रुख़ के लिए उस सहन
के पर्दे बारीक बटे हुए कतान के थे और सब मिला कर सौ हाथ
लम्बे थे।
10 उनके लिए बीस सुतून और उनके लिए पीतल के बीस ख़ाने
थे, और सुतून के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।
11 और उत्तरी रुख़ में भी वह सौ हाथ लम्बे और उनके लिए बीस
सुतून और उनके लिए बीस ही पीतल के ख़ाने थे, और सुतूनों के
कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।
12 और पश्चिमी रुख़ के लिए सब पर्दे मिला कर पचास हाथ के
थे, उनके लिए दस सुतून और दस ही उनके ख़ाने थे और सुतूनों
के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।
13 और पूर्वी रुख़ में भी वह पचास ही हाथ के थे।
14 उसके दरवाज़े की एक तरफ़ पन्द्रह हाथ के पर्दे और उनके
लिए तीन सुतून और तीन ख़ाने थे।
15 और दुसरी तरफ़ भी वैसा ही था तब सहन के दरवाज़े के इधर
और उधर पंद्रह — पन्द्रह हाथ के पर्दे थे। उनके लिए तीन — तीन
सुतून और तीन ही तीन ख़ाने थे।
16 सहन के चारों तरफ़ के सब पर्दे बारीक बटे हुए कतान के बुने
हुए थे।

17 और सुतूनों के ख़ाने पीतल के और उनके कुंडे और पट्टियाँ
चाँदी की थी। उनके सिरे चाँदी से मंढ़े हुए और सहन के कुल सुतून
चाँदी की पट्टियों से जड़े हुए थे।
18 और सहन के दरवाज़े के पर्दे पर बेल बूटे का काम था, और
वह आसमानी और अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़े और बारीक
बटे हुए कतान का बुना हुआ था; उसकी लम्बाई बीस हाथ और
ऊँचाई सहन के पर्दे की चौड़ाई के मुताबिक़ पाँच हाथ थी।
19 उनके लिए चार सुतून और चार ही उनके लिए पीतल के
ख़ाने थे, उनके कुन्दे चाँदी के थे और उनके सिरों पर चाँदी मंढी
हुई थी और उनकी पट्टियाँ भी चाँदी की थीं।
20 और घर के और सहन के चारो तरफ़ की सब मेख़ें पीतल की
थीं

[illegible]

21 और घर या'नी मस्कन — ए — शहादत के जो सामान
लावियों की ख़िदमत के लिए बने और जिनको मूसा के हुक्म के
मुताबिक़ हारून काहिन के बेटे ऐतामर ने गिना, उनका हिसाब
यह है।
22 बज़लीएल बिन — ऊरी बिन — हूर ने जो यहूदाह के क़बीले
का था, सब कुछ जो ख़ुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया था बनाया।
23 और उसके साथ दान के क़बीले का अहलियाब बिन
अख़ीसमक था जो खोदने में माहिर कारीगर था और आसमानी
और अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़ो और बारीक कतान पर बेल
— बूटे काढ़ता था
24 सब सोना जो मक़दिस की चीज़ों के काम में लगा, या'नी
हदिये का सोना *उन्तीस क़िन्तार और मक़दिस की मिस्क़ाल के
हिसाब से एक हज़ार सात सौ पिछत्तर मिस्क़ाल था।

---

* **38:24** 191 किलोग्राम

25 और जमा'त में से गिने हुए लोगों के हदिये की चाँदी एक
†सौ क़िन्तार और मक़दिस की मिस्क़ाल के हिसाब से ‡एक हज़ार
सात सौ पिछ्त्तर मिस्क़ाल थी।
26 मक़दिस की मिस्क़ाल के हिसाब से हर आदमी जो निकल कर
शुमार किए हुओ में मिल गया एक बिका, या'नी नीम मिस्क़ाल
बीस बरस और उससे ज़्यादा उम्र लोगों से लिया गया था यह छ:
लाख तीन हज़ार साढ़े पाँच सौ मर्द थे।
27 इस सौ क़िन्तार चाँदी से मक़दिस के और बीच के पर्दे के
ख़ाने ढाले गए, सौ क़िन्तार से सौ ही ख़ाने बने या'नी एक — एक
क़िन्तार। एक — एक ख़ाने में लगा
28 और एक हज़ार सात सौ पिछ्त्तर मिस्क़ाल चाँदी से सुतूनों
के कुन्डे बने और उनके सिरे मंढे गए और उनके लिए पट्टियाँ तैयार
हुई।
29 और हदिये का पीतल §सत्तर क़िन्तार और *दो हज़ार चार
सौ मिस्क़ाल था।
30 इससे उसने ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े के ख़ाने
और पीतल का मज़बह और उसके लिए पीतल की झंजरी और
मज़बह के सब बर्तन,
31 और सहन के चारों तरफ़ के ख़ाने और सहन के दरवाज़े के
ख़ाने और घर की मेख़ें और सहन के चारों तरफ़ की मेख़ें बनाई।

39

[illegible]

1 और उन्होंने मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए आसमानी और
अर्ग़वानी और सुर्ख़ बेल बूटे कढ़े हुए लिबास और हारून के लिए
पाक लिबास, जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था बनाए।

[illegible]

† 38:25 3400 किलोग्राम के लगभग ‡ 38:25 30 किलोग्राम § 38:29
2425 किलोग्राम * 38:29 25 किलोग्राम

2 और उसने सोने, और आसमानी और अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग
के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का अफ़ोद बनाया।
3 और उन्होंने सोना पीट पीट कर पतले — पतले पत्तर और
पतरों को काट — काट कर तार बनाए, ताकि आसमानी और
अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान पर
माहिर उस्ताद की तरह उनसे ज़रदोज़ी करें।
4 और अफ़ोद को जोड़ने के लिए उन्होंने दो मोंढे बनाए और
उनके दोनों सिरों को मिलाकर बाँध दिया।
5 और उसके कसने के लिए कारीगरी से बुना हुआ कमरबन्द
जो उसके ऊपर था, वह भी उसी टुकड़े और बनावट का था, या'नी
सोने और आसमानी और अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़ों और
बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ था; जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा
को हुक्म किया था।
6 और उन्होंने सुलेमानी पत्थर काट कर साफ़ किए जो सोने
के ख़ानों में जड़े गए, और उन पर अँगूठी के नक़्श की तरह बनी
इस्राईल के नाम खुदे थे।
7 और उसने उनको अफ़ोद के मोंढों पर लगाया ताकि वह बनी
— इस्राईल की यादगारी के पत्थर हों, जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा
को हुक्म किया था।

[illegible]

8 और उसने अफ़ोद की बनावट का सीनाबन्द तैयार किया
जो माहिर उस्ताद के हाथ का काम था, या'नी वह सोने और
आसमानी और अर्ग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़ों और बारीक बटे
हुए कतान का बना हुआ था।
9 वह चौकोर था; उन्होंने उस सीनाबन्द को दोहरा बनाया और
दोहरा होने पर उसकी लम्बाई एक बालिश्त और चौड़ाई एक
बालिश्त थी।

10 इस पर चार कतारों में उन्होंने जवाहर जड़े। याक़ूत — ए
— सुर्ख़, और पुखराज, और ज़मुर्रुद की कतार तो पहली कतार
थी।
11 और दूसरी क़तार में गौहर — ए — शब चराग़, और नीलम,
और हीरा:
12 तीसरी कतार में लश्म, और यश्म, और याक़ूत:
13 चौथी क़तार में फ़ीरोज़ा, और संग — ए — सुलेमानी, और
ज़बरजद; यह सब अलग — अलग सोने के ख़ानों में जड़े हुए थे।
14 और यह पत्थर इस्राईल के बेटों के नामों के शुमार के
मुताबिक़ बारह थे और अँगूठी के नक़्श की तरह बारह क़बीलों
में से एक — एक का नाम अलग — अलग एक एक पत्थर पर
ख़ुदा था।
15 और उन्होंने सीना बन्द पर डोरी की तरह गुन्धी हुई ख़ालिस
सोने की ज़न्जीरें बनाई।
16 और उन्होंने सोने के दो ख़ाने और सोने के दो कड़े बनाए और
दोनों कड़ों को सीनाबन्द के दोनों सिरों पर लगाया।
17 और सोने की दोनों गुन्धी हुई ज़न्जीरें उन कड़ों में पहनाई
जो सीनाबन्द के सिरों पर थे
18 और दोनों गुन्धी हुई ज़न्जीरों के बाक़ी दोनों सिरों को दोनों
ख़ानो में जड़कर उनको अफ़ोद के दोनों मोंढों पर सामने के रुख़
लगाया।
19 और उन्होंने सोने के दो कड़े और बना कर उनको सीना बन्द
के दोनो सिरों के उस हाशिये में लगाया जिस का रुख़ अन्दर
अफ़ोद की तरफ़ था।
20 और उन्होंने सोने के दो कड़े और बना कर उनको अफ़ोद
के दोनों मेढ़ों के सामने के हिस्से में अन्दर के रुख़ जहाँ अफ़ोद
जुड़ा था लगाया ताकि वह अफ़ोद के कारीगरी से बुने हुए पटके
के ऊपर रहे।
21 और उन्होंने सीना बन्द को लेकर उसके कड़े को अफ़ोद के
कड़ों के साथ एक नीले फ़ीते से इस तरह बाँधा कि वह अफ़ोद

के कारीगरी से बने हुए पटके के ऊपर रहे और सीना बन्द ढीला
होकर अफ़ोद से अलग न होने पाए जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को
हुक्म दिया था।

[illegible]

22 और उसने अफ़ोद का जुब्बा बुन कर बिल्कुल आसमानी रंग
का बनाया।
23 और उसका गिरेबान ज़िरह के गिरेबान की तरह बीच में था
और उसके चारों तरफ़ गोट लगी हुई थी ताकि वह फट न जाए।
24 और उन्होंने उसके दामन के घेरे में आसमानी और अर्ग़वानी
और सुर्ख़ रंग के बटे हुए तार से अनार बनाये।
25 और ख़ालिस सोने की घंटियाँ बना कर उनको जुब्बे के दामन
के घेरे में चारों तरफ़ अनारों के बीच लगाया।
26 तब जुब्बे के दामन के सारे घेरे में ख़िदमत करने के लिए एक
— एक घन्टी थी और फिर एक — एक अनार जैसा ख़ुदावन्द ने
मूसा को हुक्म दिया था।
27 और उन्होंने बारीक कतान के बुने हुए कुरते हारून और
उसके बेटों के लिए बनाये।
28 और बारीक कतान का 'अमामा, और बारीक कतान की
ख़ूबसूरत पगड़ियाँ, और बारीक बटे हुए कतान के पजामे,
29 और बारीक बटे हुए कतान, और आसमानी अर्ग़वानी और
सुर्ख़ रंग के कपड़ों का बेल बूटेदार कमरबन्द भी बनाया; जैसा
ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।
30 और उन्होंने पाक ताज का पत्तर ख़ालिस सोने का बनाकर
उस पर अँगूठी के नक़्श की तरह यह खुदवाया: ख़ुदावन्द के लिए
पाक।
31 और उसे 'अमामे के साथ ऊपर बाँधने के लिए उसमे एक
नीला फ़ीता लगाया, जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

[illegible]

32 इस तरह ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के घर का सब काम
ख़त्म हुआ और बनी इस्राईल ने सब कुछ जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा
को हुक्म दिया था वैसा ही किया।
33 और वह घर को मूसा के पास लाए, या'नी ख़ेमा, और उसका
सारा सामान, उसकी घुन्डियाँ, और तख़्ते, बेन्डे और सुतून और
ख़ाने;
34 और घटा टोप, मेंढों की *सुर्ख़ रंगी हुई खालों का ग़िलाफ़
और तुख़स की खालों का ग़िलाफ़ और बीच का पर्दा;
35 शहादत का सन्दूक़ और उसकी चोबें और सरपोश,
36 और मेज़ और उसके सब बर्तन और नज़्र की रोटी;
37 और पाक शमा'दान और उसकी सजावट के चराग़ और
उसके सब बर्तनऔर जलाने का तेल;
38 और ज़र्रीन क़ुर्बानगाह, और मसह करने का तेल और
ख़ुशबूदार ख़ुशबू और ख़ेमे के दरवाज़े का पर्दा;
39 और पीतल मढ़ा हुआ मज़बह, और पीतल की झंजरी, और
उसकी चोबें और उसके सब बर्तन और हौज़ और उसकी कुर्सी;
40 सहन के पर्दे और उनके सुतून और ख़ाने और सहन के
दरवाज़े का पर्दा और उसकी रस्सियाँ और मेख़े और ख़ेमा — ए
— इजितमा'अ के काम के लिए घर की इबादत के सब सामान;
41 और पाक मुक़ाम कि ख़िदमत के लिए कढ़े हुए लिबास और
हारून काहिन के पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास जिनको
पहन कर उनको काहिन की ख़िदमत को अन्जाम देना था।
42 जो कुछ ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था उसी के
मुताबिक़ बनी इस्राईल ने सब काम बनाया।
43 और मूसा ने सब काम का मुलाहज़ा किया और देखा कि
उन्होंने उसे कर लिया है जैसा ख़ुदावन्द ने हुक्म दिया था उन्होंने
सब कुछ वैसा ही किया, और मूसा ने उनको बरकत दी।

* **39:34** दर्याई घोड़े का चमड़ा

40

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा;
2 “पहले महीने की पहली *तारीख़ को तू ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ के घर को खड़ा कर देना।
3 और उस में शहादत का संदूक रख कर संदूक पर बीच का पर्दा
खींच देना।
4 और मेज़ को अन्दर ले जाकर उस पर की सब चीज़ें तरतीब
से सजा देना और शमा'दान को अन्दर करके उसके चराग़ रोशन
कर देना।
5 और ख़ुशबू जलाने की ज़र्रीन क़ुर्बानगाह को शहादत के संदूक़
के सामने रखना और घर के दरवाज़े का पर्दा लगा देना।
6 और सोख़्तनी क़ुर्बानी का मज़बह ख़ेमा — ए — इजितमा'अ
के घर के दरवाज़े के सामने रखना।
7 और हौज़ को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ और मज़बह के बीच
में रख कर उसमे पानी भर देना
8 और सहन के चारो तरफ़ से घेर कर सहन के दरवाज़े में पर्दा
लटका देना।
9 और मसह करने का तेल लेकर घर को और उसके अन्दर के
सब चीजों को मसह करना; और यूँ उसे और उसके सब बर्तन को
पाक करना तब वह पाक ठहरेगा।
10 और तू सोख़्तनी क़ुर्बानी के मज़बह और उसके सब बर्तन
को मसह करके मज़बह को पाक करना, और मज़बह निहायत ही
पाक ठहरेगा
11 और तू हौज़ और उसकी कुर्सी को भी मसह करके पाक
करना।
12 और हारून और उसके बेटे को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ
के दरवाज़े पर लाकर उसको पानी से ग़ुस्ल दिलाना

* 40:2 इस में नया साल का” जोड़ना है

13 और हारून को पाक लिबास पहनाना और उसे मसह और
पाक करना, ताकि वह मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम
दे
14 और उनके बेटों को लाकर उनको कुरते पहनाना,
15 और जैसा उनके बाप को मसह करे वैसा ही उनको भी मसह
करना, ताकि वह मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम दे;
और उनका मसह होना उनके लिए नसल — दर — नसल हमेशा
की कहानत का निशान होगा।"
16 और मूसा ने सब कुछ जैसा ख़ुदावन्द ने उसको हुक्म किया
था उसके मुताबिक़ किया।
17 और दूसरे साल के पहले महीने की पहली तारीख़ को घर
खड़ा किया गया।
18 और मूसा ने घर को खड़ा किया और ख़ानों को रख कर
उनमे तख़्ते लगा उनके बेन्डे खींच दिए और उसके सुतूनों खड़ा
कर दिया।
19 और घर के ऊपर ख़ेमे को तान दिया और ख़ेमा पर उसका
ग़िलाफ़ चढ़ा दिया, जैसे ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।
20 और शहादतनामे को लेकर सन्दूक़ में रख्खा, और चोबों को
सन्दूक़ में लगा सरपोश को सन्दूक़ के ऊपर रख्खा;
21 फिर उस सन्दूक़ को घर के अन्दर लाया, और बीच का
पर्दा लगा कर शहादत के सन्दूक़ को पर्दे के अन्दर किया, जैसा
ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।
22 और मेज़ को उस पर्दे के बाहर घर को उत्तरी रुख़ में ख़ेमा —
ए — इजितमा'अ के अन्दर रख्खा,
23 और उस पर ख़ुदावन्द के आमने सामने रोटी सजाकर रख्खी,
जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।
24 और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर ही मेज़ के सामने
घर की दाख्खिनी रुख़ में शमा'दान को रख्खा,
25 और चराग़ ख़ुदावन्द के सामने रोशन कर दिए, जैसा

ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।
26 और ज़रीन क़ुर्बानगाह को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के
अन्दर पर्दे के सामने रख्खा,
27 और उस पर ख़ुशबूदार मसाल्हे का ख़ुशबू जलाया, जैसा
ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था
28 और उसने घर के दरवाज़े में पर्दा लगाया था।
29 और ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के घर के दरवाज़े पर
सोख़्तनी क़ुर्बानी का मज़बह रखकर उस पर सोख़्तनी क़ुर्बानी और
नज़्र की क़ुर्बानी पेश कीं, जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया,
30 और उसने हौज़ को ख़ेमा — ए — इजितमा'अ और मज़बह
के बीच में रखकर उसमें धोने के लिए पानी भर दिया।
31 और मूसा और हारून और उसके बेटों ने अपने — अपने
हाँथ — पाँव उसमे धोए।
32 जब — जब वह ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर
दाख़िल होते, और जब — जब वह मज़बह के नज़दीक जाते तो
अपने आपको धोकर जाते थे, जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म
किया था।
33 और उसने घर और मज़बह के चारों तरफ़ सहन को घेर कर
सहन के दरवाज़े का पर्दा डाल दिया यूँ मूसा ने उस काम को ख़त्म
किया।

[illegible]

34 तब ख़ेमा — ए — इजितमा'अ पर बादल छा गया, और घर
ख़ुदावन्द के जलाल से भरा हो गया।
35 और मूसा ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में दाख़िल न हो सका
क्यूँकि वह बादल उस पर ठहरा हुआ था, और घर ख़ुदावन्द के
जलाल से भरा था।
36 और बनी — इस्राईल के सारे सफ़र में यह होता रहा कि जब
वह बादल घर के ऊपर से उठ जाता तो वह आगे बढ़ाते,

37 लेकिन अगर वह बादल न उठता तो उस दिन तक सफ़र
नहीं करते थे जब तक वह उठ न जाता।
38 क्यूँकि ख़ुदावन्द का बादल इस्राईल के सारे घराने के समाने
और उनके सारे सफ़र में दिन के वक़्त तो घर के ऊपर ठहरा रहता
और रात को उसमें आग रहती थी।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.
You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.
Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023
4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc